बुलबुल की किताब

उपेन्द्रकिशोर रायचौधुरी




बुलबुल की किताब

बुलबुल की किताब

मूल लेखक

उपेन्द्रकिशोर रायचौधुरी

हिन्दी अनुवादिका

स्वप्ना दत्त

चित्रांकन

सुबीर रॉय

साहित्य अकादेमी

Bulbul Ki Kitab : Hindi translation by Swapna Dutta of Upendrakishore Roychoudhury's Children classic *Tuntunir Boi* in Bengali. Sahitya Akademi, New Delhi (2008), Rs.35

प्रथम संस्करण: 1993

पुर्नमुद्रण: 1996, 2008

साहित्य अकादेमी

मुख्य कार्यालय : रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली–110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली–110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई–400 014

सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बंगलौर–560 001

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर मार्ग, कोलकाता–700 053

चेन्नई कार्यालय

मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई–600 018

मूल्य: पैंतीस रुपये

ISBN: 81-7201-481-3

Website: http://www.sahitya-akademi.gov.in
E-mail: sahityaakademisales@vsnl.net

मुद्रक : सीता कम्पोज़र्स प्रा. लि., नारायणा, नई दिल्ली–110028



बुलबुल और बिल्ली

एक आदमी था। उसके घर के पीछे बैंगन का एक पौधा था। उसी पौधे के पत्तों को अपने होंठों से सी-सीक़र नन्हीं बुलबुल ने अपना घोंसला बना लिया।

घोंसले के अन्दर तीन बच्चे भी थे। ये छोटे-छोटे, नन्हें-नन्हें बच्चे, न तो देख सकते थे और न उड़ सकते थे। वे सारे-सारे दिन सिर्फ़ चोंच खोलकर चूँ-चूँ किया करते थे।

उस मकान में एक बिल्ली भी थी। बहुत शरारती और नटखट। उसके मन में बस एक ही चिन्ता थी—कैसे बुलबुल के बच्चों को खा लिया जाय!

एक दिन वह बैंगन के पेड़ के नीचे आ पहुँची और बोली—"क्यों री बुलबुली, क्या कर रही है?" बुलबुल ने अपना सिर झुकाकर जवाब दिया—"जय हो महारानी जी।"

बिल्ली ख़ुश होकर चली गयी।

बिल्ली इसी तरह रोज़ आती रही। बुलबुल भी हर रोज़ उसे महारानी कहकर प्रणाम कर लेती। बिल्ली ख़ुश होकर लौट जाया करती।

कुछ ही दिनों में बुलबुल के नन्हें-नन्हें बच्चे बड़े हो गये। अब उनके सुन्दर कोमल-से पर भी आ चुके थे। वे अब अच्छी तरह देख भी सकते थे। यह देखकर बुलबुल ने बच्चों से पूछा—"बच्चो, अब तो तुम सब उड़ पाओगे न?"

बच्चों ने जवाब दिया—"हाँ माँ, ज़रूर।"

बुलबुल बोली—"तो फिर देखूँ, उस ताड़ के पेड़ तक उड़कर जा सकते हो या नहीं?"

यह सुनते ही बच्चे उड़कर ताड़ के पत्तों पर पहुँच गये। बुलबुल खुशी से हँस पड़ी और बोली—"अब उस शैतान बिल्ली को आने तो दो।"

इसके कुछ ही देर बाद बिल्ली आ पहुँची और बोली—"क्यों री बुलबुली, क्या कर रही है?"

सुनते ही बुलबुल ने अपना पैर उठाया! बिल्ली को लात दिखाते हुए जवाब दिया, "दफ़ा हो जा, शैतान बिल्ली!" और यह कहकर वहाँ से उड़ गयी।

शैतान बिल्ली गुस्से से दाँत फाड़े बुलबुल को पकड़ने के लिए बैंगन के पेड़ पर झपटी। लेकिन न तो वह बुलबुल को पकड़ पायी और न ही बच्चों को खा सकी, बल्कि बैंगन के काँटों की चुभन से परेशान हो, दुम दबाकर घर लौटी।

बुलबुल और नाई

बुलबुल बैंगन के पत्तों के ऊपर नाच रही थी। नाचते-नाचते उसे एक काँटा चुभ गया। और बस, उसी चुभन से उसे एक बड़ा-सा फोड़ा हो गया।

हाय रे! अब क्या करूँ ? इतने बड़े फोड़े से कैसे आराम मिले ?

बुलबुल इससे, उससे, सबसे यही पूछती रही। सभी ने जवाब दिया—नाई से कहो कि फोड़े को चीर दे।

बुलबुल नाई के पास गयी और बोली, "नाई भैया, नाई भैया, मेरा फोड़ा चीर दो न !"

बुलबुल की बात सुनकर नाई ने अपनी गर्दन हिलायी, फिर नाक सिकोड़कर कहा, "ओह हो ! मैं ठहरा राजा की दाढ़ी बनानेवाला ! मैं भला क्यों तेरा फोड़ा चीरूँ ? चल हट।"



"ठीक है, मैं भी देख लूँगी तू कैसे नहीं चीरता," बुलबुल ने जवाब दिया। इसके बाद बुलबुल राजा के पास पहुँची और नाई की शिकायत लगा दी—"राजा जी, आपका नाई मेरा फोड़ा क्यों नहीं चीरता ? आपको उसे सज़ा देनी चाहिए।"

बुलबुल की शिकायत सुनकर राजा खिलखिलाकर हँस पड़े। फिर अपने बिस्तर पर जाकर लेट गये; लेकिन उन्होंने नाई को कुछ भी नहीं कहा।

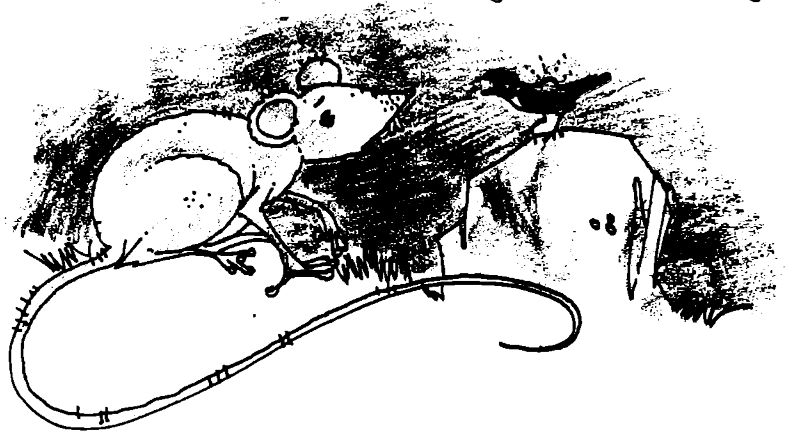
इससे बुलबुल बहुत नाराज़ हो गयी। और पहुँची चूहे के पास। उसका दरवाज़ा खट-खटाकर बोली—"चूहे भाई, चूहे भाई, घर पर हो न !"

चूहे ने पूछा—"तुम कौन, भाई ? आओ ! बैठो। पलंग बिछा दूँ, खाना परोस दूँ। खाओगी ?"

बुलबुल बोली—"पहले मेरा एक काम कर दो, फिर मैं खाना खाऊँगी।"

"कैसा काम ?" चूहे ने पूछा।

"राजा जब नींद में खर्राटे भरें तब जाकर उनकी तोंद कुतरकर छेद कर देना।" बुलबुल बोली।



यह सुनते ही चूहे की घिग्घी बँध गयी। उसने अपना कान पकड़ते हुए कहा—"बाप रे बाप ! ऐसा काम मुझसे क़तई नहीं होगा।"

बुलबुल नाराज़ होकर बिल्ली के पास आयी और बोली—"बिल्ली बहन, बिल्ली बहन, घर में हो न !"

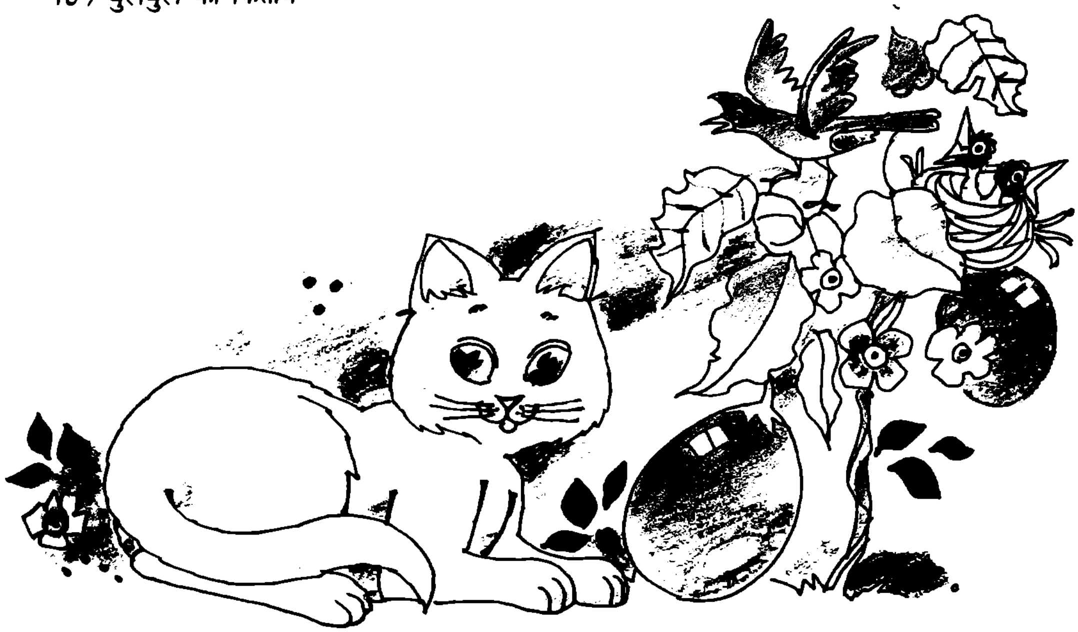
बिल्ली ने कहा—"कौन हो भाई ? अच्छा बुलबुली बहना ? आओ ! बैठो ! पलंग बिछा दूँ, खाना परोस दूँ। खाओगी ?"

बुलबुल ने जवाब दिया—"पहले तुम चूहे को मारो, फिर मैं खाना खाऊँगी।"

बिल्ली ने कहा—"मुझे बहुत ज़ोर से नींद आ रही है, इस घड़ी मैं चूहा तो क्या, कुछ भी नहीं मार पाऊँगी।"

यह सुनकर बुलबुल नाराज़ हो गयी। वह आयी लाठी के पास और बोली, "लाठी यार, लाठी यार, घर पर ही हो न !"

लाठी ने कहा—"कौन, बुलबुल बहना ! आओ बैठो। पलंग बिछा दूँ, खाना परोस दूँ। खाओगी न !"



बुलबुल बोली—"तुम जाकर बिल्ली को पीटो, फिर मैं खाना खाऊँगी।"

लाठी ने जवाब दिया—"बिल्ली ने मेरा क्या बिगाड़ा है भला कि मैं यूँ ही उसे पीटने जाऊँ ? यह मुझसे न होगा।"

यह सुनकर बुलबुल चली आयी आग के पास और बोली—"आग बहना, आग बहना ! तुम घर पर ही हो न !"

आग ने जवाब दिया—"कौन बुलबुल बहना ! आओ बैठो। पलंग बिछा दूँ। खाना परोस दूँ। तुम खाओगी ना !"

बुलबुल बोली—"पहले तुम उस लाठी को जला दो, फिर मैं खाना खाऊँगी।"

आग ने कहा—"मैं आज ढेर सारी चीजें जला-जलाकर थक गयी हूँ। अब मैं और कुछ नहीं जला सकती।"

आग से नाराज़ होकर बुलबुल चली आयी सागर के पास और बोली—"सागर भाई, सागर भाई, घर पर ही हो न !"

सागर ने पूछा—"कौन, भई ? अच्छा बुलबुल बहना ? आओ बैठो ! पलंग बिछा दूँ, खाना परोस दूँ, खाओगी न !"

बुलबुल ने कहा—"पहले तुम आग बुझा दो फिर मैं खाना खाऊँगी।"

सागर ने जवाब दिया—"यह तो मुझसे नहीं होगा।"

बुलबुल तब चली हाथी के पास और बोली—"हाथी भाई, हाथी भाई, घर पर हो ?

हाथी ने कहा—"कौन ? अच्छा बुलबुल बहना ! आओ बैठो ! पलंग बिछा दूँ, खाना परोस दूँ—! खाओगी न !"

बुलबुल बोली, "पहले तुम सागर का सारा पानी पी जाओ, फिर मैं खाना खाऊँगी।"

हाथी ने जवाब दिया—"इत्ता सारा पानी मैं कैसे पीऊँगा भला ? मेरा तो पेट ही फट जायेगा।"

बुलबुल की बात जब किसी ने भी नहीं सुनी तो अन्त में गयी मच्छर के पास। मच्छर ने तो उसे दूर से ही देख लिया था और कहा—"कौन ? बुलबुल बहना ? आओ बैठो। पलंग बिछा दूँ, खाना परोस दूँ। खाओगी न !"

बुलबुल बोली—"पहले तुम जाकर हाथी को काटो फिर मैं खाना खाऊँगी।"

मच्छर ने कहा—"यह भी कोई बात हुई ? अभी चलता हूँ। देख लूँगा बच्चू का चमड़ा कितना मोटा है।"

यह कहकर मच्छर ने देश के सारे मच्छरों को संदेशा भेजा—"चलो भाइयो, हाथी को काटने चलें। मच्छरों से आसमान भर गया, सूरज ढक गया। उनके पैरों की हवा से आँधी बहने लगी। भन भन की गूँजभरी आवाज़ से सभी डर के मारे थर-थर काँपने लगे। तब—

हाथी बोला—मैं चला सागर को पीने
सागर बोला—मैं चला आग बुझाने
आग बोली—मैं चली लाठी जलाने
लाठी बोली—मैं चली बिल्ली को पीटने
बिल्ली बोली—मैं चली चूहा मारने
चूहा बोला—मैं चला राजा की तोंद कुतरने
राजा बोला—मैं चला शैतान नाई का सर काटने

नाई डर से काँपता-काँपता हाथ जोड़े बुलबुल के पास पहुँचा और बोला—"मुझे बचा लो, बुलबुल बहन। चलो अभी तुम्हारा फोड़ा चीर देता हूँ।"

फोड़ा चीर देने पर बुलबुल बिलकुल ठीक हो गयी और फिर से जाकर बैंगन के पौधे पर नाचने-फुदकने लगी—टुन .... टुन .... टुनाटुन ... ! ता धिन ... धिन धिन।

बुलबुल और राजा

राजा के बग़ीचे के एक कोने में बुलबुल ने अपना नया घोंसला बना रखा था। एक दिन राजा के आदमियों ने उनके सन्दूक़ से रुपये निकालकर धूप में सुखाने के लिए रखे। शाम को जब वे [illegible] आये, तब एक रुपया उठाना भूल गये।



चमकते हुए रुपये को देखकर बुलबुल उसे अपने घोंसले में उठा लायी और सोचने लगी—अरे। मैं कितनी अमीर बन गयी हूँ। राजा के घर में जो धन है, मेरे घर में भी वही धन है। तभी से वह यही बात बार-बार सोचने लगी और सबको सुनाकर कहती रही—

जैसी दौलत राजा के घर।
वैसी दौलत बुलबुल के घर।

अपनी राजसभा में बैठे राजा को भी बुलबुल की ये बातें सुनायी पड़ीं। उन्होंने पूछा—"यह चिड़िया क्या बोल रही है ?"

सभा के लोगों ने हाथ जोड़कर जवाब दिया—"महाराज, चिड़िया बोल रही है कि आपके घर में जो धन है, उसके घर में भी वही धन है।"

यह सुनकर राजा खिलखिलाकर हँस पड़े और बोले—"जाकर देखो तो सही उसके घोंसले में क्या है ?"

सभी लोग लौटकर बोले—"महाराज, उसके घोंसले में एक रुपया पड़ा है।"

राजा ने कहा—"अरे, वह तो मेरा ही रुपया है। जाकर उसे वापस ले आओ।"

राजा के लोग तुरन्त वापस लौटे और बुलबुल के घोंसले से रुपया उठा लाये। बेचारी करे भी क्या ? उदास होकर बोलने लगी—

राजा को धन की बड़ी लगन।
ले भागा बुलबुल का धन ।

बुलबुल की बात सुनकर राजा फिर से हँस पड़े और बोले—
"यह चिड़िया तो बड़ी चालाक है। जाओ, उसका धन उसे वापस दे दो।"
रुपया मिलने पर बुलबुल बहुत ही ख़ुश हुई और बोली—

डर गये अपने राजा जी।
बुलबुल की दौलत वापस की।

राजा ने पूछा—"वह चिड़िया अब क्या बोल रही है?"

सभा के लोग बोले—"महाराज, वह बोल रही है कि आप उससे डर गये हैं, इसीलिए उसका रुपया वापस कर दिया।"

यह सुनकर राजा की आँखें लाल-पीली हो गयीं और वह बोले—"छोटा मुँह बड़ी बात! जाकर पकड़ लाओ उस चिड़िया को। आज उसे मैं तलकर खाऊँगा।"

राजा का आदेश मिलते ही लोग जाकर बेचारी बुलबुल को पकड़कर राजा के पास ले आये। राजा ने उसको अपनी मुट्ठी में बन्द कर लिया और अन्दर अपनी रानियों के पास आकर बोले—"इस चिड़िया को तल दो। मैं अभी इसे खाऊँगा।"



राजा के लौट जाने के बाद सातों रानियाँ एक-एक कर बुलबुल को देखने लगीं।

उनमें से एक रानी बोली—"कितनी सुन्दर है यह चिड़िया ! लाओ, इसे मुझे दे दो, मैं ज़रा ठीक से देखूँ।" रानी ने बुलबुल को पकड़ लिया। उसके हाथ से, एक दूसरी रानी ने बुलबुल को अपने हाथ में ले लिया। जब तीसरी रानी ने उसे लेने को हाथ बढ़ाया तो वह उसके हाथ से फिसलकर निकल भागी और पलक झपकते फुर्र हो गयी।

हाय, अब तो सत्यनाश हो गया ! रानियाँ डर से काँपने लगीं। वे अब करें भी क्या ? राजा को यह बात मालूम हो गयी तो उससे बुरा कोई न होगा।

रानियाँ आपस में सलाह करने लगीं। ठीक उसी समय वहाँ से एक मेंढक जा रहा था, फुदकता हुआ। सातों रानियों ने मिलकर उसे तुरन्त दबोच लिया। वे आपस में बोल उठीं—"चुप चुप। किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। चलो, इसी मेंढक को तलकर राजा को खिला देते हैं। आख़िर उनको कैसे पता चलेगा ! वह यही सोचेंगे कि बुलबुल को ही खा रहे हैं !"

रानियों ने मेंढक की खाल उतारकर उसको अच्छी तरह से तल दिया। राजा भी उसे खाकर बहुत खुश हुए।

भोजन के बाद राजा सभा में लौट गये और सोचने लगे—अच्छा सबक़ सिखाया मैंने, बुलबुल की बच्ची को।

इतने में बुलबुल वहाँ आ गयी और बोली—

मज़े की बात सुनो मेरे भाया।
राजा जी ने मेंढक खाया।

राजा यह सुनते ही उछल पड़े और चल पड़े थूकने और मुँह धोने। फिर नाराज़ होकर बोले—"जाओ, सातों रानियों की नाक काट डालो।"

बस, उसी घड़ी जल्लाद हाज़िर हो गया। उसने सातों रानियों की नाक काट डाली। यह देखकर बुलबुल बोल उठी—

बुलबुल की ज़रा देखो धाक।
सात रानियों की कटवायी नाक।

राजा ने कहा—"पकड़ ला बुलबुल की बच्ची को। इस बार मैं उसे कच्चे ही खा जाऊँगा। देखूँ इस बार वह कैसे भागती है !"

लोग बुलबुल को पकड़ लाये। राजा ने सेवक से कहा—"जा, पानी ले आ।"

पानी लाया गया। राजा ने मुँह में पानी लिया, आँखें बन्द की और बुलबुल को निगल गया।

सभा के सभी लोग बोल उठे—"क्या सबक़ सिखाया चिड़िया को।" ठीक उसी समय राजा

ने एक बड़ी-सी डकार ली। सभी लोग चौंक पड़े। राजा के मुँह खोलते ही बुलबुल झट-से बाहर निकली और उड़ चली फुर्र ...

"गयी, गयी ... पकड़ो ..." राजा चिल्ला उठे। इसके साथ ही दो सौ आदमी पीछे-पीछे दौड़े और एक बार फिर बुलबुल को क़ैद कर लिया गया।

राजा ने फिर से पानी मँगवाया। एक सिपाही नंगी तलवार लिये राजा के पास खड़ा हो गया। कि अगर बुलबुल कहीं भागे तो उसे काट डाले।

राजा बुलबुल को दुबारा निगल गया। उसने दोनों हाथों से अपना मुँह पकड़ लिया, ताकि किसी भी हालत में बुलबुल निकल न पाये। बेचारी बुलबुल ! वह राजा के पेट के अन्दर बुरी तरह छटपटाने लगी। राजा की बेचैनी बढ़ने लगी। उनसे रहा न गया और उन्होंने मुँह खोलकर दुबारा डकार ली। और बुलबुल फिर-से फुर्र ... ।

"सिपाही, सिपाही। मारो, मारो। यह तो फिर से भाग गयी।" सारे दरबारी चिल्ला उठे।

अचानक इतने सारे लोगों की चीख-पुकार सुनते ही सिपाही ने चौंककर तलवार चलायी लेकिन तलवार बुलबुल को न लगकर राजा की नाक पर लगी। उनकी नुकीली नाक ही कट गयी। राजा बहुत ज़ोर-ज़ोर से चीख़ने और चिल्लाने लगे। उनके साथ-साथ राजसभा के सभी लोग भी



चीखने-चिल्लाने लगे।

फिर तो वैद्य जी आये और मरहम-पट्टी की। इस तरह बड़ी मुश्किल से राजा को बचाया गया।

राजा को देखकर बुलबुल चिढ़ाने लगी—

अरे नकटे राजा, अच्छे राजा।
कहो तुम्हें कैसी मिली सज़ा ?

यह गीत गाती हुई बुलबुल उड़कर उस देश को छोड़कर बहुत दूर चली गयी। राजा के लोग उसके पीछे दौड़ते हुए आये। पर बुलबुल का घोंसला तब तक ख़ाली हो चुका था।

नरहरि दास

मैदान के किनारे पर घना जंगल है। उसी जंगल के किनारे, जहाँ एक बहुत बड़ा-सा पर्वत भी है, वहाँ एक गड्ढे के अन्दर, बकरी का बच्चा रहता था, वह बिल्कुल नन्हा था, इसलिए कहीं बाहर नहीं निकल पाता था। बाहर आने का नाम लेते ही उसकी माँ कहा करती थी—"नहीं, नहीं तू बाहर मत जाना। बाहर जाते ही तुझे भालू पकड़ लेगा। वह तुझे उठा ले जायेगा या तो फिर शेर ही खा जायेगा।" यह सुनते ही बेचारा डर जाता था और चुपचाप गड्ढे के अन्दर बैठ जाता था।

कुछ दिनों में वह कुछ और बड़ा हो गया। अब वह इतना डरता भी नहीं था। अपनी माँ के बाहर जाते ही वह बाहर झाँककर देखा करता था। फिर एक दिन वह गड्ढे से बाहर निकल गया।

उस गड्ढे के बाहर एक बड़ा ही तगड़ा बैल घास खा रहा था। बकरी के बच्चे ने इससे पहले कभी इतना बड़ा जानवर नहीं देखा था। बैल के सींग देखकर उसने सोच लिया कि वह भी एक बकरा ही है। अच्छा चारा और खुराक खाने की वजह से यह इतना बड़ा हो गया है। बकरी के बच्चे ने बैल से जाकर पूछा—"भैया, आप खाते क्या हैं ?"

"मैं घास खाता हूँ," बैल ने जवाब दिया।

"घास तो मेरी माँ भी खाती है, पर वह तो आप-जैसी बड़ी नहीं है।"

बैल ने कहा—"मैं तेरी माँ से कहीं ज्यादा चारा खाता हूँ। तेरी माँ जो घास खाती है, उससे वह कहीं अच्छा है।"

"वैसी घास कहाँ मिलती है ?" बच्चे ने पूछा, "उस जंगल के अन्दर ?"

बैल चुप रहा।

"आप मुझे वहाँ ले चलेंगे ?" बच्चे ने फिर कहा।

"ठीक है, ले चलता हूँ," यह कहकर बैल उसे जंगल के अन्दर ले चला।



उस जंगल के अन्दर वाक़ई बहुत प्यारी-प्यारी घास थी। बकरी के बच्चे ने भरपेट घास खा ली। खा-खाकर उसका पेट इतना भारी हो गया कि उससे चलना ही मुश्किल हो गया।

शाम ढलने पर बैल ने आकर उससे कहा, "अब चलो, घर चलते हैं।"

पर बकरी के बच्चे से तो चला ही नहीं जा रहा था। वह घर जाये भी तो कैसे? वह बोला—"आप जाइए, मैं कल चला जाऊँगा।"

बैल चला गया। बकरे को पास ही एक गड्ढा दिखायी दिया। वह उसी गड्ढे के अन्दर घुस गया।

वह गड्ढा था एक सियार का। सियार उस समय अपने शेर मामा के घर दावत पर गया था। वह बहुत रात को घर लौटा और उसने देखा कि उसके गड्ढे के अन्दर कोई जानवर बैठा हुआ है। बकरे का रंग काला था, इसलिए सियार अँधेरे में उसे अच्छी तरह देख नहीं पाया। उसने सोचा कोई राक्षस या ऐसा ही कुछ होगा। इसलिए उसने डरते हुए पूछा—"मेरे घर के अन्दर कौन है रे?"

बकरा बहुत ही चालाक था। उसने झट-से जवाब दिया—"मैं हूँ नरहरि दास।"

यह सुनते ही सियार के मुँह से निकला—"बाप रे," वह वहाँ से दुम दबाकर भागा। दौड़ते-दौड़ते आ पहुँचा शेर के पास।

उसे देखकर शेर ने आश्चर्य से पूछा—"बात क्या है, भांजे? तुम तो यहाँ से अभी-अभी गये थे। फिर इतनी जल्दी वापस क्यों आ गये?"

सियार ने हाँफते हुए जवाब दिया—"सत्यनाश हो गया मामा! मेरे घर में कोई नरहरि दास आ टपका है। कहता है कि वह पचास शेर एक ही बार में निगल सकता है।"

यह सुनकर शेर ने बहुत नाराज़ होकर कहा—"बहुत बदतमीज जानवर मालूम पड़ता है। चलो भांजे, चलकर देखते हैं कि वह कैसे पचास शेर निगल लेता है।"

सियार ने कहा—"नहीं मामा, मैं तो दुबारा वहाँ पर नहीं जाता। मेरे जाने पर अगर वह मुझे खाने को आ जाये, तो आप तो कूदकर वहाँ से भाग निकलेंगे पर मैं आपकी तरह थोड़े ही दौड़ सकता हूँ। वह मुझे ही पकड़कर खा लेगा।"

"कैसी बातें कर रहे हो भांजे।" शेर ने कहा, "मैं भला तुम्हें अकेला छोड़कर कहीं जा सकता हूँ?"

सियार ने जवाब दिया—"ठीक है तो फिर मुझे अपनी पूँछ के साथ बाँध लीजिए।"

शेर ने सियार को अपनी पूँछ के साथ खूब अच्छी तरह से बाँध लिया। सियार सोचने लगा—'अब तो शेर मामा मुझे छोड़कर भाग नहीं पायेंगे।'

इसी हालत में दोनों सियार के गड्ढे के पास आ गये। बकरे ने उन दोनों को दूर से ही देख लिया था। पास आते वह बोल उठा :

अरे लोमड़ी, तुझे दिया था दस शेरों का पैसा।
बस इक शेर पकड़ लायी तू वह भी दुबला ऐसा।

बकरे की बात सुनकर शेर बहुत ही डर गया। उसने सोचा कि दुष्ट सियार उसे धोखा देकर इस जानवर के पास ले आया है, उसे खिलाने के लिए। यह सोचकर शेर वहाँ से भाग चला। तेज़ी से उछलते-कूदते वह सियार को अपने साथ घसीटते हुए ले भागा। बेचारे सियार को बहुत ही चोट लगी। बुरी तरह से ठोकर लगी, काँटों से सारा बदन छिल गया। ऊँची-नीची ज़मीन से धक्का भी लगा। वह बार-बार चिल्लाता रहा—"मामा जी बस कीजिए, बस कीजिए।" पर उसकी सुने कौन। शेर ने सोचा, शायद नरहरि दास ही उसका पीछा कर रहा है। वह और तेज़ी से भागने लगा। इसी तरह सारी रात वह भागता रहा।

सुबह होने पर बकरी का बच्चा इतमीनान से अपने घर लौटा।

सियार को उस रात अपने किये की खूब अच्छी सज़ा मिली। वह शेर से बहुत ही नाराज़ हुआ।

मामा शेर और भांजा सियार

सियार उसी दिन से सोचने लगा कि शेर मामा को खूब अच्छी तरह सबक़ सिखाना चाहिए। नरहरि दास के डर से वह अपने पुराने गड्ढे में वापस नहीं गया। उसने एक नया गड्ढा ढूँढ़ निकाला। उस गड्ढे के पास एक कुआँ भी था।

नदी के किनारे पड़ी हुई एक चटाई देखकर सियार उसे घसीटता हुआ अपने घर ले आया। और उस चटाई को कुएँ के ऊपर बिछा दिया। फिर वह चला शेर मामा के घर। वहाँ जाकर उसने कहा—"क्यों मामा जी, आप मेरा नया घर देखने नहीं चलेंगे?"

यह सुनते ही शेर उसके नये घर पर आ गया। सियार उसे कुँए के पास ले गया और चटाई की तरफ़ दिखाते हुए बोला—"थोड़ी देर बैठिए मामा जी, मैं आपके लिए नाश्ता-पानी का प्रबंध करता हूँ।"

नाश्ते की बात सुनते ही शेर ख़ुश हो गया। वह चटाई के ऊपर बैठने को कूदा, लेकिन बैठने की बजाए वह कुएँ के अन्दर जा गिरा। सियार ने ऊपर से कहा—"मामा जी, अब आप जम के पानी पीजिए। ज़रा-सा भी मत छोड़िये!"

लेकिन उस कुँए में पानी ख़ास गहरा नहीं था, इसलिए शेर डूबा नहीं। पहले तो वह बहुत ही डर गया था। फिर किसी तरह ऊपर आया और दहाड़ने लगा—"कहाँ गया सियार का बच्चा! तुझे अब देख लूँगा।" लेकिन सियार तो पहले ही भाग गया था। कोई भी उसे ढूँढ़ न सका।

इधर सियार की हालत बुरी हो गयी। शेर के डर से न तो वह घर आ पाता और न ही खाना ढूँढने बाहर निकल पाता। बेचारा भूखा रह-रह कर अधमरा हो गया। फिर वह सोचने लगा—"इस तरह से तो मैं भूखा ही मर जाऊँगा। क्यों न फिर शेर मामा के पास ही चलूँ? शायद उसे किसी तरह से खुश कर सकूँ?"

यही सोचते हुए वह शेर के पास चला। उसके घर से पास जाकर सियार दूर से ही 'मामा जी,' 'मामा जी' कहकर पुकारने लगा और उसे प्रणाम करते हुए बोला—"मामा जी आप मुझे ढूँढ़-ढूँढ़कर बहुत परेशान हो रहे थे न! आपकी यह परेशानी मुझसे देखी नहीं गयी। दुःख से मेरी आँखों में आँसू आ गये। मामा जी, मैं आपको बहुत चाहता हूँ, इसलिए खुद ही आपके पास चला आया। आपको मेरी वजह से अब कभी तकलीफ़ नहीं उठानी पड़ेगी। ऐसा हो तो आप घर पर बैठे-बैठे ही मुझे मार डालियेगा।"

सियार की बातें सुनकर शेर एकदम हैरान हो गया। इसलिए उसे मार भी न पाया। सिर्फ़ डाँटकर कहा—"पाजी, शैतान कहीं के। तुमने मुझे कुँए में क्यों गिरा दिया था।"

सियार ने अपने कानों पर हाथ रखते हुए कहा—"हाय राम ! मैं कभी ऐसा कर सकता हूँ भला ? उस जगह की मिट्टी बेहद नर्म होगी, इसलिए आपके उस जगह पर बैठते ही एक गड्ढा-सा बन गया होगा और आपने उस गड्ढे को कुआँ समझ लिया। यह आपकी ताक़त का ही कमाल है।"

यह सुनकर बेवकूफ़ शेर हँसकर बोला, "हाँ, हाँ, भांजे ! तुम ठीक कहते हो। ऐसा ही हुआ होगा। मुझसे ही समझने में ग़लती हुई।"

इस तरह से दोनों में फिर से दोस्ती हो गयी।

सियार ने एक दिन नदी के किनारे जाकर देखा कि बीस हाथ लम्बा एक मगरमच्छ रेत के ऊपर लेटा पड़ा है। यह देखते ही वह दौड़ता हुआ शेर के पास गया और बोला—"मामा जी, मैंने अब एक नाव ख़रीद ली है। चलकर देख लीजिए।"

बेवकूफ शेर मगरमच्छ को देखकर सचमुच उसे नाव समझ उस पर जा बैठा। बैठते ही मगरमच्छ ने शेर को अपने दाँतों से कस कर पकड़ लिया और उसे मुँह में लेकर पानी में उतर गया। यह देखकर सियार मारे ख़ुशी के नाचता घर लौट गया।

बुढ़िया और बगुला

एक थी जूँ वाली बुढ़िया। उसके बालों में ढेर सारी जूँएँ थीं। जब वह अपने बुड्ढे को खाना परोसती थी, तब वे ही जूँएँ टपक-टपक कर बुड्ढे की थाली में गिरती थी। इसी बात पर नाराज़ होकर बुड्ढे ने एक दिन डण्डे से बुढ़िया को पीटा। बुढ़िया ने नाराज़ होकर चावल की पतीली तोड़ दी और नदी के किनारे चली गयी। लोगों ने उसे बहुत बुलाया मगर कोई उसे वापस न लौटा पाया।

उसी नदी के किनारे एक बगुला बैठा था। बुढ़िया को देखकर उसने पूछा—

"ओ जूँ वाली बुढ़िया, तू कहाँ जा रही है ?"

बुढ़िया ने जवाब दिया—

"घरवाले ने मुझे मारा। इसलिए मैंने घर छोड़ा।"

"पर तेरे घरवाले ने तुझे क्यों मारा ?" बगुले ने पूछा।

"उसकी थाली में मेरे सिर से कुछ जूँएँ गिर गयी थीं इसलिए" बुढ़िया ने जवाब दिया।

हैरान होकर बगुले ने पूछा—"पर जूँएँ तो बड़ी ज़ायक़ेदार होती हैं। इसके लिए भी कोई किसी को मारता है, भला ? कोई बात नहीं, तू मेरे घर चल। मैंने सुना है कि तू खाना अच्छा बना लेती है।"

बुढ़िया बगुले के घर रसोइया बन कर रहने लगी। उसकी रसोई बगुले को बहुत भाती थी। थाली में जूँ गिरने से तो वह और भी ख़ुश हो जाता था।

एक दिन बगुले ने एक बड़ी-सी मछली लाकर बुढ़िया को पकाने को दी। उसके बाद वह नदी के किनारे चला गया। बुढ़िया मछली पकाने लगी। पकाते-पकाते उसके चक्कर-सा आ गया और वह चूल्हे अन्दर गिर पड़ी। किसी को कुछ पता भी न चला।

बगुले ने घर लौटकर देखा कि जूँवाली बुढ़िया जलकर राख हो गयी है। यह देखकर बेचारा बगुला बहुत ही दुःखी हुआ। वह सात दिन तक चुपचाप नदी के किनारे बैठा रहा। उसने न कुछ खाया और न ही कुछ पिया।

नदी हैरान होकर सोचने लगी कि ये बगुला सात दिन से बिना कुछ खाये-पिये इस तरह बैठा क्यों है ? इसे क्या हुआ है ? उसने पूछा—"क्यों भाई बगुला, तुझे हो क्या गया है ?"

बगुले ने जवाब दिया—"जो होना था, सो तो हो गया है। अब तुम्हें बताने से क्या फ़ायदा ?"

नदी बोली—"नहीं भई, मुझे तो बताना ही पड़ेगा।"

बगुले ने कहा—"पर मेरे बताने से तेरा सारा पानी झाग में बदल जायेगा।"

नदी बोली—"कोई बात नहीं। तू बता तो सही।"

बगुले ने कहा—

"जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।"

बगुले के ऐसा कहते ही नदी का सारा पानी झाग बन गया।

उस नदी में एक हाथी हर रोज़ पानी पिया करता था। जब उसने देखा कि सारा पानी झाग बन गया है तब उसने हैरानी से पूछा—"नदी, तुझे क्या हो गया है ? तेरा सारा पानी झाग कैसे बना ?"

नदी बोली—"अगर मैं यह बता दूँ तो तेरी पूँछ गिर जायेगी।"

हाथी ने कहा—"गिरने दे, लेकिन तू बता तो सही।"

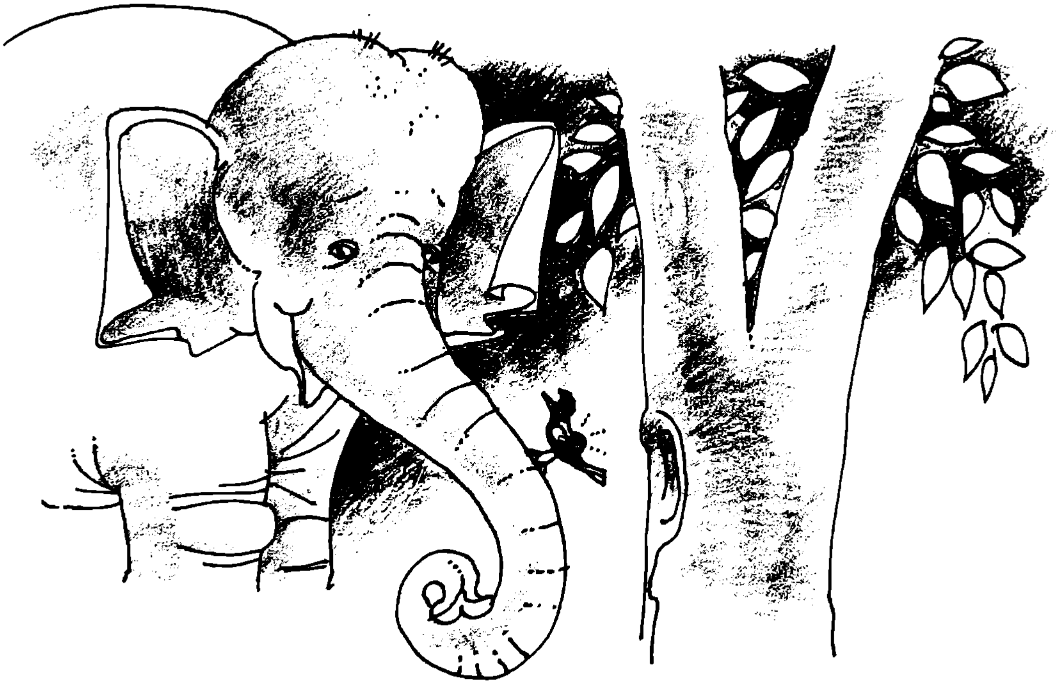
नदी बोली—

"जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।
नदी का पानी बन गया झाग।"

यह कहते ही हाथी की पूँछ ठप्प-से ज़मीन पर गिर पड़ी।

हाथी एक पेड़ के नीचे से वापस जा रहा था इतने में पेड़ ने उसे बुलाकर पूछा—"अरे हाथी, तुझे क्या हो गया है ? तेरी पूँछ कहाँ गयी ?"

हाथी ने जवाब दिया—"अगर मैं बता दूँ तो तेरी सारी पत्तियाँ झड़ जायेंगी।"



पेड़ ने कहा—"झड़ने दे, पर तू बता तो सही।"

हाथी ने कहा—

"जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।
नदी का पानी बन गया झाग।
हाथी की गिर गयी पूँछ।"

यह कहते ही खड़खड़ आवाज़ करती हुई पेड़ की सारी पत्तियाँ झड़कर गिर गयीं। उसी पेड़ पर एक कबूतर भी रहता था! उस समय वह खाने की तलाश में दूर गया हुआ था। घर लौटने पर हैरान होकर पेड़ से पूछा—"अरे पेड़, तुझे क्या हो गया है? तेरी सारी पत्तियाँ कहाँ ग़ायब हो गयीं।"

पेड़ ने कहा—"यह बताने पर तू अंधा हो जायेगा।"

कबूतर ने जवाब दिया—"कोई बात नहीं। तू बता तो सही!"

फिर पेड़ ने कहा—

"जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।
नदी का पानी बन गया झाग।

उसमें गिर गई हाथी की पूँछ।
झड़ गये पेड़ के पत्ते सारे।''

यह कहते ही कबूतर के एक आँख की रोशनी चली गयी। बेचारा एक आँख से देखते हुए राजमहल के बग़ीचे में घूम रहा था इतने में राजा के चरवाहे ने उसे देख लिया और हैरान होकर पूछा ''तू एक आँख से अंधा कैसे हो गया ?''

कबूतर ने कहा—''अगर मैं यह बता दूँ तो तेरी लाठी तेरे हाथ से चिपक जायेगी।''

चरवाहे ने कहा—''ठीक है, चिपकने दे। पर तू बता तो सही।''

कबूतर बोला—

''जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।
नदी का पानी बन गया झाग।
उसमें गिर गई हाथी की पूँछ।
झड़ गये पेड़ के सारे पत्ते।
देख, कबूतर हो गया अंधा।''

इतना सुनते ही चरवाहे की लाठी झट उसके हाथ से चिपक गयी। वह अपना हाथ झटकता रह गया, लेकिन लाठी किसी भी हालत में हिल न पायी। जब वह गाय लेकर राजमहल वापस लौटा तब भी वह हाथ झाड़ ही रहा था।

राजमहल की दासी उस समय सूप में राख लिये जा रही थी। चरवाहे को देखकर उसने कहा, ''इस तरह से हाथ क्यों झाड़ रहा है ? तेरे हाथ को क्या हो गया है ?''

चरवाहे ने जवाब दिया—''यह बात अगर मैं बता दूँ तो तेरा सूप तेरे हाथ से चिपक जायेगा, उसे तू उतार नहीं पायेगी।''

दासी बोली—''ज्यादा बक बक मत कर, तू बता तो सही।''

फिर चरवाहे ने कहा—

''जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।
नदी का पानी बन गया झाग।
उसमें गिर गई हाथी की पूँछ।
झड़ गये पेड़ के सारे पत्ते।
देख, कबूतर हो गया अंधा।
चरवाहे से चिपका डण्डा।''

यह कहते ही दासी के हाथ से सूप चिपक गया। ''हाय, हाय ! यह क्या हुआ ? अब मैं

क्या करूँ ?'' कहकर दासी रोने लगी। फिर चरवाहे को गाली देते हुए घर लौटी।

राजमहल के अन्दर भी दासी हाथ से सूप उतार नहीं पायी। रानी उस समय अपने हाथ पर थाली रखे राजा के लिये खाना परोस रही थी। दासी को सूप लेकर घूमती हुई देखकर वह हँस पड़ी और बोली—''दासी, तुझे क्या हो गया है ? यह सूप अपने हाथ से क्यों नहीं उतारती ?''

दासी ने जवाब दिया ''रानी जी, यह बात बताने पर वह थाली आपके हाथ से चिपक जायेगी, उसे आप उतार नहीं पायेंगी।''

रानी ने कहा—''अच्छा ? ठीक है, तू बता तो सही। देखती हूँ क्या होता है।''

दासी बोली—

''जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।
नदी का पानी बन गया झाग।
उसमें गिर गई हाथी की पूँछ।
झड़ गये पेड़ के सारे पत्ते।
देख, कबूतर हो गया अंधा।
चरवाहे से चिपका डण्डा।
दासी के हाथ में चिपका सूप।''

बस, यह सुनते ही रानी के हाथ से थाली चिपक गयी। बहुत कोशिश करने पर भी वह हाथ से थाली उतार नहीं पायी ! फिर वह दूसरी थाली में राजा के लिए खाना परोसकर उसे भी उठा ले चली।

राजा ने रानी के दोनों हाथों में दो थालियाँ देखकर हैरान होकर पूछा—''क्या बात है, रानी ? उस दूसरी थाली को तुम हाथ से क्यों नहीं उतार रही हो ?'' रानी ने जवाब दिया—''मेरे यह बताने से आप यहाँ से उठ नहीं पायेंगे। आप जिस आसन पर बैठे हैं, उसी से चिपक जायेंगे।''

यह बात सुनकर राजा ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे और बोले—''ठीक है, ऐसा ही सही। पर तुम बता दो बात क्या है ?''

रानी ने बताया—

''जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।
नदी का पानी, बन गया झाग।
उसमें गिर गई हाथी की पूँछ।
झड़ गये पेड़ के सारे पत्ते।
देख, कबूतर हो गया अंधा।
चरवाहे से चिपका डण्डा।
दासी के हाथ से चिपका सूप।
रानी के हाथ से चिपकी थाली।''

रानी की बातें ख़त्म होते-न-होते राजाजी अपने आसन से चिपक गये। बहुत कोशिश करने पर भी आसन से उठ न सके। उन्होंने अपने नौकरों को भी बुलवाया, पर वे भी कुछ नहीं कर सके। फिर वे आसन को चारों तरफ़ से पकड़कर उसी हालत में राजा को राजसभा में ले गये।

सभा के लोग राजाजी को अपने आसन पर चिपके हुए देखकर हैरान हो गये। उन्हें हँसी भी आ रही थी। ऐसा दृश्य देखने के बाद हँसी रोकना उनके लिए बहुत मुश्किल था। पर वे राजा के डर से हँस नहीं पा रहे थे। क्या पता, हँसने पर राजा बुरा मान जायें। वे तो डर से यह भी पूछ नहीं रहे थे कि उनको हुआ क्या है।

राजाजी ने फिर खुद ही कहा—"शायद तुम लोग यह जानना चाहते हो कि मैं इस तरह से आसन से कैसे चिपक गया ?"

सभी बोल उठे—"जी हाँ, महाराज !"

राजा ने कहा—"पर यह बताने से तुम लोग भी अपने-अपने आसन से चिपक जाओगे।"

वे बोले, "ठीक है, ऐसा ही हो। अगर आप इस अवस्था को झेल सकते हैं तो हम भी सह लेंगे।"

तब राजा जी ने कहा—

"जूँ वाली बुढ़िया जल मरी आग।
बगुला सात दिन भूखा रहा।
नदी का पानी, बन गया झाग।
उसमें गिर गई हाथी की पूँछ।
पेड़ के झड़ गए सारे पत्ते।
देख, कबूतर हो गया अंधा।
चरवाहे से चिपका डण्डा।
दासी के हाथ से चिपका सूप।
रानी के हाथ में चिपकी थाली।
राजा चिपक गये आसन से।"

ये सारी बातें सुनते ही जो होना था वही हुआ। सभी लोग चारपाइयों पर बैठे हुए थे। वे सब-के-सब चारपाई से ऐसे चिपक गये कि हिलना भी मुश्किल हो गया।

भाग्य की बात थी, उसी देश में एक बहुत चतुर नाई भी रहता था। उसके न होने पर सबकी बुरी हालत हो जाती थी। नाई वहाँ पहुँच गया और थोड़ी ही देर में वह जल्दी से बढ़ई को बुला लाया।

बढ़ई ने आसन काट कर राजा को छुड़ाया। फिर चारपाइयाँ काट-काट कर सभी लोगों को छुड़ाया। थोड़ी-बहुत लकड़ी सभी से चिपकी हुई थी, उसे भी काटकर निकाल दिया।

उसने रानी के हाथ से थाली, दासी के हाथ से सूप और चरवाहे के हाथ से डण्डा काट कर निकाल दिया।

बुढ़िया और चावल-चोर

बंगाल में गाँव के लोग रात को बचे हुए चावल में पानी डालकर दूसरे दिन खाते हैं। इसी चावल को कहते हैं 'पान्ता-भात।'

एक थी बुढ़िया जिसे पान्ता-भात बहुत ही भाता था।

अब हुआ यह कि एक चोर हर रात आकर बुढ़िया का पान्ता भात खाने लगा। बुढ़िया नाराज़ हो गयी। वह अपनी लाठी ठकठकाती राजा से शिकायत करने चली।

बुढ़िया तालाब के किनारे से गुज़र रही थी। एक मछली की नज़र उस पर पड़ी। वह बोली, "बुढ़िया, तू किधर चली ?"

बुढ़िया बोली, "देख न एक चोर रोज़ मेरा भात खा लेता है। राजा से उसकी शिकायत करने चली।"

मछली बोली, "लौटते समय मुझे भी साथ ले चलना—तुम्हारे काम आऊँगी।"

बुढ़िया बोली, "ठीक है।"

चलते-चलते बुढ़िया बेल के पेड़ के नीचे से गुजरी। नीचे एक बेल का फल गिरा था। वह बोला, "बुढ़िया तुम किधर चली ?"

बुढ़िया बोली, "देख न एक चोर रोज़ मेरा भात खा लेता है। राजा से उस की शिकायत करने चली।"

बेल बोला, "लौटते समय मुझे भी साथ ले चलना—तुम्हारे काम आऊँगा।"

बुढ़िया बोली, "ठीक है।"

उसके बाद बुढ़िया को रास्ते के किनारे गोबर पड़ा मिला। गोबर बोला, "बुढ़िया तुम किधर चली ?"

बुढ़िया बोली, "देख न एक चोर रोज़ मेरा भात खा लेता है। राजा से उसी की शिकायत करने चली।"

गोबर बोला, "लौटते समय मुझे भी साथ ले चलना—तुम्हारे काम आऊँगा।"

बुढ़िया बोली, "ठीक है।"

थोड़ी देर चलने के बाद बुढ़िया ने देखा कि रास्ते में किनारे नाई का एक उस्तरा पड़ा हुआ था।

उस्तरा बोला, "बुढ़िया, तुम किधर चली ?"

बुढ़िया बोली, "देख न, चोर रोज़ मेरा भात खा लेता है। उसी की शिकायत राजा से करने चली।"

उस्तरा बोला, "लौटते समय मुझे भी साथ ले चलना—तुम्हारे काम आऊँगा।"

बुढ़िया बोली, "ठीक है।"

राजा के महल पहुँचकर बुढ़िया को पता चला कि राजा वहाँ नहीं थे, इसलिए वह शिकायत भी न कर सकी।

घर लौटते समय उसे उस्तरा, गोबर, बेल-फल और मछली की बात याद आयी। उसने उन सबको अपने थैले में डाला और घर ले आयी।



बुढ़िया जब अपने घर के आँगन में पहुँची तो उस्तरा बोला, "मुझे घास पर रख दो।" बुढ़िया ने उस्तरे को उठाकर घास पर रख दिया।

बुढ़िया कमरे में जाने ही लगी थी कि गोबर बोला, "मुझे सीढ़ी पर रख दो।"

बुढ़िया ने गोबर सीढ़ी पर रख दिया।

बुढ़िया के कमरे में घुसने पर बेल फल बोला, "मुझे चूल्हे के अंदर रख दो।"

सुनकर बुढ़िया ने वैसा ही किया।

आख़िर में मछली बोली, "मुझे गीले भात के अन्दर रखो।" बुढ़िया ने वैसा ही किया।

रात होने पर बुढ़िया ने खाना पकाया, खाया और सो गयी।

जब काफ़ी रात बीत गयी तो चोर आया, उसे क्या पता, बुढ़िया ने क्या तरकीब कर रखी है। आते ही उसने गीले भात के बर्तन में हाथ डाला। लेकिन वहाँ थी मछली। उसने उस चोर को ऐसा काँटा चुभाया कि उसकी आँखों में पानी आ गया। मछली की चुभन के कारण रोते-रोते चूल्हे के पास गया। वहाँ था बेल-फल। अपना हाथ सेंकने के लिए चोर ने जैसे ही चूल्हे में हाथ डाला, बेल-फल ज़ोर से फट पड़ा और चोर के मुँह पर बहुत चोट लगी। डर और दर्द के मारे पागल होकर चोर जैसे ही कमरे से बाहर जाने लगा, उसका पैर गोबर पर पड़ा। इससे उसका पैर फिसला और वह गोबर पर गिर पड़ा।

गोबर ने लथपथ भूत बना चोर घास पर पाँव पोंछने गया। वहाँ पड़ा था उस्तरा, जिससे उसका पाँव कट गया।

फिर तो चोर, "अरे मर गया"... कहकर चिल्लाने लगा।

यह सुनकर मोहल्ले के लोग दौड़कर आये और कहने लगे, "यही है वह शैतान चोर। पकड़ो इसे। मारो इसे। इसकी नाक कान काट लो।"

उसके बाद चोर को जो सज़ा मिली, पूछो मत।

चिड़ी और कौआ

चिड़ी और कौए में बहुत दोस्ती थी।

एक घर के आँगन में चटाई पर धान और मिर्च सुखाने को रखे थे। यह देखकर चिड़ी कौए से बोली, "मित्र, देखूँ तुम पहले मिर्च खाकर खत्म कर सकते हो या मैं पहले धान ख़त्म कर सकती हूँ।"

कौआ बोला, "मैं ही पहले मिर्च खा लूँगा।"

चिड़ी बोली, "नहीं, मैं तुमसे पहले धान खा लूँगी।"

कौआ बोला, "अगर न खा सकी तो ?"

चिड़ी बोली, ''अगर मैं न खा सकी तो तुम मेरा कलेजा खा लेना। और अगर तुम न खा सके तो ?''

कौआ बोला, ''तब तुम मेरा कलेजा खा लेना।''

ऐसा कहकर दोनों जल्दी-जल्दी धान और मिर्च खाने लगे। चिड़ी कुट-कुट करके एक-एक धान खाने लगी और कौआ एक-एक मिर्च निगलने लगा। देखते-ही देखते कौए ने सारी मिर्च खा ली। चिड़ी तब तक धान का एक-चौथाई भी न खा पायी थी।

तब कौआ बोला, ''क्यों मित्र, अब क्या होगा ?''

चिड़ी बोली, ''होगा क्या, अगर मित्र होकर भी तुम मेरा कलेजा खाना चाहते हो तो खा लो। लेकिन अपनी चोंच को ठीक से धो लेना। तुम तो गंदी चीज़ें भी खा लेते हो।''

कौआ बोला, ''मैं अभी आया अपनी चोंच धोकर।''

ऐसा कहकर कौआ गंगा-जल से अपनी चोंच धोने चला गया। गंगा जी बोली, ''अपनी गंदी चोंच से मुझे मत छूना। लोटे में पानी लेकर उससे धो।''

सुनकर कौआ बोला, ''ठहरो, मैं लोटा लेकर आया।''

ऐसा कहकर कौआ गया कुम्हार के पास और बोला—

''कुम्हार, कुम्हार लोटा दे।
पानी भरके धोऊँगा चोंच।
फिर खाऊँ चिड़ी का कलेजा।''

कुम्हार बोला, ''लोटा तो नहीं है। मिट्टी ला, मैं बना देता हूँ।''

सुनकर कौआ गया भैंस के पास उसकी सींग माँगने ताकि उससे मिट्टी खोद सके।

कौआ बोला—

''भैंस, भैंस, सींग तो दे
खोदूँगा माटी, बनेगा लोटा
पानी भरके धोऊँगा चोंच
फिर खाऊँ चिड़ी का कलेजा।''

यह सुनकर भैंस को बड़ा गुस्सा आया। वह उसे सींग मारने दौड़ी। कौआ भाग खड़ा हुआ। फिर वह कुत्ते के पास जाकर बोला—

''कुत्ते भाई, भैंस को मार
सींग मिले तो खोदूँगा माटी, बनेगा लोटा
पानी भरके धोऊँगा चोंच
फिर खाऊँ चिड़ी का कलेजा।''

कुत्ता बोला, ''पहले दूध ला। शरीर में ताक़त आ जाये तो फिर मारूँगा भैंस को।''
यह सुनकर कौआ गाय के पास गया और बोला—

''गाय, गाय, दूध तो दे
पियेगा कुत्ता, मिलेगी ताक़त
मारेगा भैंस, लूँगा सींग
खोदूँगा माटी, बनेगा लोटा
पानी भरके, धोऊँगा चोंच
फिर खाऊँ चिड़ी का कलेजा खाऊँ।''

गाय बोली, ''पहले मेरे लिए घास ला। तभी दूध दूँगी।''
यह सुनकर कौआ गया मैदान के पास और बोला—

''मैदान, मैदान, घास तो दे
खायेगी गाय, देगी दूध
पियेगा कुत्ता, मिलेगी ताक़त
मारेगा भैंस, लूँगा सींग
खोदूँगा माटी, बनेगा लोटा
पानी भरके, धोऊँगा चोंच
फिर खाऊँ चिड़ी का कलेजा।''

मैदान बोला, ''घास तो है ले जा।''
यह सुनकर कौआ लोहार के घर जाकर बोला—

''लोहार, लोहार, हँसिया तो दे
काटूँगा घास, खायेगी गाय, देगी दूध,
पियेगा कुत्ता, मिलेगी ताक़त,
मारेगा भैंस, लूँगा सींग
खोदूँगा माटी, बनेगा लोटा
पानी भरके, धोऊँगा चोंच
फिर खाऊँ चिड़ी का कलेजा।''

लोहार बोला, ''आग नहीं है। वह ले आ तो हँसिया बना दूँगा।''
यह सुनकर कौआ पहुँचा एक गृहस्थ के घर और बोला—

''गृहस्थ भाई, आग तो दो
बनेगा हँसिया, काटूँगा घास
खायेगी गाय, देगी दूध

पियेगा कुत्ता, मिलेगी ताक़त
मारेगा भैंस, लूँगा सींग
खोदूँगा माटी, बनेगा लोटा
पानी भरके धोऊँगा चोंच
फिर खाऊँ चिड़ी का कलेजा।''

गृहस्थ पतीले में आग भर लाया और बोला, ''किसमें लेगा आग ?''

बुद्धू कौआ अपने पंख फैलाकर बोला, ''लाओ, मेरे पंख पर डाल दो।''

गृहस्थ ने सारी आग कौए के पंख पर रख दी और बेचारा कौआ जलकर राख हो गया। वह चिड़ी का कलेजा न खा सका।

चिड़िया और बाघ

एक गृहस्थ के घर के कोने से लटकी थी एक हाँड़ी। उसमें रहते थे चिड़ा-चिड़ी। एक दिन चिड़े ने चिड़ी से कहा, ''मुझे पीठा खाना है।''

चिड़ी बोली, ''पीठा बनाने का सामान तो ला दे। मैं बना दूँगी पीठा।''

चिड़े ने पूछा—''क्या-क्या सामान चाहिए ?''

चिड़ी बोली, ''मैदा चाहिए, गुड़ चाहिए, केला चाहिए, दूध चाहिए और लकड़ी चाहिए।''

चिड़ा बोला, ''ठीक है। मैं अभी सारा सामान लाया।''

कहकर वह जंगल में जाकर पेड़ की पतली-पतली सूखी लकड़ीवाली डालियाँ तोड़ने लगा। उस जंगल में रहता था एक बहुत बड़ा बाघ।

वह चिड़े को दोस्त कहकर बुलाता था।

डालियों के टूटने की आवाज़ सुनकर वह बोला, ''कौन है जो डालियाँ तोड़ रहा है—मेरा दोस्त ?''

चिड़ा बोला, ''हाँ दोस्त।''

बाघ बोला, ''डालियों से क्या होगा ?''

चिड़ा बोला, ''लकड़ी चाहिए, चिड़ी पीठा बनाएगी।''

सुनकर बाघ बोला, ''दोस्त, मैंने कभी पीठा नहीं खाया। मुझे भी खिलाना होगा।''

चिड़ा बोला, ''फिर सारा सामान लाना होगा।''

बाघ ने पूछा, ''क्या सामान चाहिए ?''

चिड़ा बोला, ''मैदा चाहिए, गुड़ चाहिए, दूध चाहिए, घी चाहिए, हाँड़ी चाहिए और लकड़ी

चाहिए।''

बाघ बोला, ''ठीक है। तुम घर चलो। मैं अभी सामान लेकर आया।''

चिड़ा लौट आया घर और बाघ टहलता हुआ पहुँचा बाज़ार। वहाँ पहुँचकर बाघ सिर्फ़ एक बार गुर्राया। सुनते ही सारे दुकानदार ''बाप रे! बाघ आया है—भागो भागो।'' कहकर दुकान छोड़कर भाग निकले। बाघ ने बाज़ार से मैदा, गुड़, केला, दूध, घी, हाँडी और लकड़ी ढूँढ़ निकाली और चिड़े के घर दे आया।

फिर चिड़ी ने बहुत स्वादिष्ट पीठा बनाया और दोनों ने भरपेट खाया। उसके बाद, बाघ के लिए थोड़ा-सा पीठा पत्ते में डालकर उसे ज़मीन पर रख दिया और दोनों चुपचाप हाँड़ी में बैठ गये।

बाघ आया, और पीठा देखकर उस पर झपट पड़ा। उसने एक पीठा मुँह में डाला और बोला, ''वाह। कितना मज़ेदार है!''

इसके बाद दूसरा खाकर बोला, ''नहीं, यह उतना अच्छा नहीं, सिर्फ़ मैदा है इसमें।''

फिर एक और खाकर बोला, ''छी.... छी..... इसमें तो सिर्फ़ भूसी और राख है। दोस्त चिड़ा, यह तुमने क्या खिलाया ?''

एक और पीठा खाकर बोला, ''इसमें कैसी बदबू है। गोबर डाला है क्या ? यह चिड़ा तो बहुत दुष्ट निकला।''

तभी चिड़ा हाँड़ी के अन्दर से बोला, ''चिड़ी, मुझे छींक आ रही है।''

सुनकर चिड़ी परेशान होकर बोली, ''चुप रहो। अभी मत छींकना। वरना बड़ी मुसीबत होगी।''

चिड़ा किसी तरह चुप हो गया। लेकिन थोड़ी देर बाद उसे फिर छींक आने लगी। चिड़ी ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, बहुत कोशिश की, मगर वह उसे रोक न सकी।

बाघ ने एक गंदा पीठा खाया और बोला, ''थू-थू! इसमें सिर्फ़ गोबर भरा है, और कुछ नहीं। अगर चिड़ा हाथ आया तो उसे कच्चा चबा जाऊँगा।''

एक और पीठा खाकर जब बाघ थू थू करने लगा तभी ''ऑक छीं'' कहकर चिड़ा ज़ोर से छींका। इस आवाज को सुनकर बाघ चौंक उठा और रस्सी टूट गयी तथा चिड़ा चिड़ी के साथ हाँड़ी बाघ के ऊपर गिर पड़ी।

बाघ को यह पता न चला कि बिजली कौंधी या आसमान गिरा। वह बहुत डर गया। वह दुम दबाकर भागा और अपने घर पहुँचकर ही उसने साँस ली।

दुष्ट बाघ

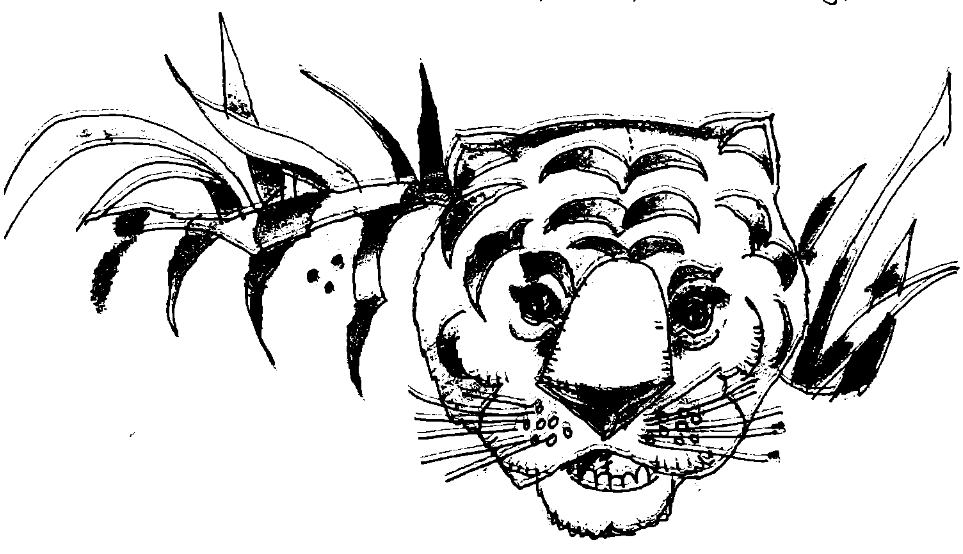
राजमहल के मुख्य द्वार के पास एक बहुत बड़ा बाघ लोहे के पिंजरे में बन्द था। राजमहल के सामने से जो भी गुज़रता, बाघ हाथ जोड़कर उनसे कहता, "एक बार पिंजरे का दरवाज़ा खोल देना भाई।" सुनकर लोग कहते, "क्यों नहीं ... ताकि तुम हमारी गर्दन तोड़ दो।"

इसी बीच राजमहल में ज़ोर-शोर से दावत हुई। बड़े-बड़े पंडित बहुत बड़ी तादाद में भोज खाने आये। उनमें से एक पंडित देखने में बहुत सीधा था। बाघ उस पंडित को बार-बार प्रणाम करने लगा। यह देखकर पंडित ने सोचा यह बेचारा बाघ बहुत भला मालूम होता है।

"तुम क्या चाहते हो भाई ?"

बाघ हाथ जोड़कर बोला, "जी, एक बार इस पिंजरे का दरवाज़ा खोल दीजिए, मैं आपके पाँव पड़ता हूँ।" पंडित जी सचमुच बहुत भले थे। उन्होंने यह सुनकर जल्दी-से पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया।

तब बाघ हँसते-हँसते पिंजरे से निकलकर बोला, "पंडित, सबसे पहले मैं तुझे खाऊँगा।"



कोई दूसरा होता तो शायद भाग खड़ा होता। लेकिन पंडित जी भागना नहीं जानते थे। वे बड़े परेशान होकर बोले, "ऐसा तो पहले सुना नहीं ! मैंने तुम पर उपकार किया और तुम मुझे खाने की बात कर रहे हो। ऐसा भी कोई करता है भला ?"

बाघ बोला, "क्यों नहीं पंडित जी। सभी करते हैं।"

पंडित जी बोले, "बिल्कुल नहीं। चलो तीन गवाहों से पूछते हैं। उनका क्या कहना है।"

बाघ बोला, "ठीक है चलिए। अगर तीनों गवाह आपकी बात मान लेते हैं तो मैं आपको छोड़ दूँगा, लेकिन अगर वे मेरी बात को ठीक समझते हैं तो मैं आपको खा लूँगा।"

दोनों गवाह ढूँढ़ने पहुँचे एक मैदान में। दो खेतों के बीच थोड़ी ऊँची मिट्टी खड़ी कर किसानों ने एक पगडंडी-सी बना दी थी, जिसे मेड़ कहते हैं। पंडित जी ने उस मेड़ की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "यही है मेरा पहला गवाह।"

बाघ बोला, "ठीक है। पूछिए तो उससे। क्या कहता है ?"

पंडित जी ने मेड़ से पूछा, "मेड़ भाई यह बताओ कि अगर मैं किसी का भला करूँ तो क्या बदले में वह मेरा बुरा करेगा ?"

मेड़ बोला, "बिलकुल करेगा। अब मुझे ही देख लीजिए मैं किसानों के खेत के बीच में रहता हूँ। इससे उनका कितना फ़ायदा है। एक किसान की ज़मीन दूसरा नहीं ले सकता। एक किसान के खेत का पानी दूसरे खेत में नहीं जा सकता। मैं उनका इतना उपकार करता हूँ फिर भी वे हल से मुझे काटकर अपने खेत बढ़ा लेते हैं।"

बाघ बोला, "सुना पंडित जी ! जो भला करे उसका बुरा करते हैं या नहीं।"

पंडित जी बोले, "ठहरो, मेरे दो गवाह और हैं।"

बाघ बोला, "ठीक है चलिए। उनसे भी पूछ लेते हैं।"

मैदान के बीच में एक बरगद का पेड़ था। पंडित जी उसे दिखाकर बोले, "यह मेरा दूसरा गवाह है।"

बाघ बोला, "इससे पूछिये, यह क्या कहता है ?"

पंडित जी बोले, "भई बरगद के पेड़, तुम्हारी तो काफ़ी उम्र हो चली। बहुत कुछ देखा-सुना होगा तुमने। यह तो बताओ कि उपकार करनेवाले का कोई बुरा भी करता है क्या ?"

बरगद का पेड़ बोला, "सबसे पहले लोग यही तो करते हैं। सभी लोग मेरी छाँह में आराम करते हैं। फिर मेरी छाल कुरेद-कुरेद कर गोंद निकाल लेते हैं। इस गोंद को रखने के लिए भी मेरी ही पत्तियाँ तोड़ते हैं। फिर मेरी डाली काटकर ले जाते हैं।"

बाघ बोला, "क्यों पंडित जी, कुछ सुना आपने ?"

पंडित जी तो मुसीबत में पड़ गये। कुछ सोच न पाये कि कहें क्या ? तभी वहाँ से सियार गुज़र रहा था। पंडित जी सियार की ओर इशारा करते हुए बोले, "यह रहा मेरा तीसरा गवाह। देखें क्या कहता है ?"

फिर उन्होंने सियार को बुलाकर उससे पूछा, "सियार पंडित, ज़रा ठहरो। तुम मेरे गवाह हो।"

सियार रुका, लेकिन पास नहीं आया। वह दूर से ही बोला, "मैं आपका गवाह कैसे हो सकता हूँ ?"

पंडित जी बोले, "अच्छा, बताओ तो भला करनेवाले का कभी कोई बुरा करता है ?"

सियार बोला, "किसने किसका भला किया और किसने किसका बुरा किया—मैं यह सुनकर ही फ़ैसला कर सकता हूँ।"

पंडित जी बोले, "बाघ पिंजरे में था और मैं ब्राह्मण वहाँ से गुज़र रहा था।" इतना सुनते ही सियार बोला, "यह तो बड़ी कठिन समस्या है। वह पिंजरा और वह रास्ता जहाँ से आप गुज़र रहे थे, उसे देखे बिना मैं कुछ नहीं कह सकता।" इसलिए तीनों फिर उस पिंजरे के पास गये।

काफ़ी देर तक उस पिंजरे के चारों ओर घूमकर सियार बोला, "अब पिंजरा और रास्ता तो देख लिया। बात क्या हुई थी, यह बताइये ?"

पंडित जी बोले, "बाघ पिंजरे में था और मैं ग़रीब ब्राह्मण, रास्ते से गुज़र रहा था।"

सियार बोल पड़ा, "ठहरिए ! इतनी जल्दी न करें। पहले सारी बात अच्छी तरह समझने दीजिए। क्या कहा, बाघ ब्राह्मण था और रास्ता पिंजरे के अन्दर से गुज़र रहा था।"

सियार बोला, "ठहरो-ठहरो सोचने दो। ब्राह्मण पिंजरे में था और बाघ रास्ते से गुज़र रहा था।"

बाघ बोला, "अरे बुद्धू, ऐसा नहीं था। मैं पिंजरे में था और ब्राह्मण रास्ते से गुज़र रहा था।"

सियार बोला, "यह तो अच्छी मुसीबत है। मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। क्या कहा तुमने बाघ ब्राह्मण के अन्दर था और पिंजरा रास्ते से गुज़र रहा था।"

बाघ बोला, "ऐसा मूरख तो मैंने कहीं नहीं देखा। अरे बाघ था पिंजरे में और ब्राह्मण रास्ते से गुज़र रहा था।"

तब सियार सिर खुजलाते हुए बोला, "नहीं, इतनी मुश्किल बात मैं नहीं समझ सकता।"

बाघ को आ गया गुस्सा। उसने सियार को डाँटकर कहा, "यह बात मुझे समझानी होगी। देख, मैं इस पिंजरे के अन्दर था।"

"देखो ऐसे," और यह कहते हुए बाघ पिंजरे के अन्दर घुस गया। तुरंत सियार ने पिंजरे का दरवाज़ा बन्द किया और बाहर से कुण्डी लगा दी। फिर सियार ने पंडित जी से कहा, "पंडित जी, अब मुझे सारी बात समझ में आयी। आप अगर मेरी गवाही सुनना चाहते हैं तो वह यह है कि दुष्ट लोगों का कभी भला नहीं करना चाहिए। इसलिए बाघ मामा की बात ही सही है। अब आप जल्दी करें—दावत अभी भी ख़त्म नहीं हुई।" यह कहकर सियार चला जंगल की ओर और पंडित जी गये दावत खाने।

दूल्हा बाघ

एक था ग़रीब ब्राह्मण। उसके घर में थी उसकी घरवाली और एक छोटी-सी बेटी। लेकिन उनके यहाँ खाने के लिए कुछ न था। ब्राह्मण मुश्किल से भीख माँगकर जो भी कुछ लाता—एक बार में ही सब कुछ खत्म हो जाता। भीख भी हर दिन नहीं मिल पाती थी।

एक दिन उनकी छोटी-सी लड़की पड़ोस में खेलने गयी। उसने देखा उनके घर में खीर बनी थी। बच्चे खीर खा रहे थे। यह देखकर उसकी भी खीर खाने की इच्छा हुई। घर लौटकर वह अपनी माँ से बोली, "माँ, मुझे भी खीर बना दो। मैं भी खीर खाऊँगी।"

यह सुनकर उसकी माँ लगी रोने। जहाँ भरपेट चावल खाने को नहीं मिलता, वहाँ खीर कैसे बनती ? तभी ब्राह्मण भिक्षा लेकर लौटा और ब्राह्मणी को रोते देखकर पूछने लगा, "रो क्यों रही हो ब्राह्मणी ! क्या हुआ ?"

ब्राह्मणी बोली, "बेटी खीर खाना चाहती है। मैं कहाँ से लाऊँ खीर। इसीलिए रो रही हूँ।"

यह सुनकर ब्राह्मण बोला, "ठहरो, मैं कुछ करता हूँ। लेकिन तुम रोओ मत।" यह कहकर ब्राह्मण फिर घर से निकल पड़ा।

उसी गाँव के जमींदार बहुत भले थे। उन्हें जैसे ही पता चला कि ब्राह्मण की बेटी खीर खाना चाहती है, उन्होंने तुरंत ब्राह्मण को बढ़िया चावल, दो सेर दूध, चीनी और इलायची वगैरह जुटा दिये।

ब्राह्मण ने ख़ुश होकर ज़मींदार को आशीर्वाद दिया और दौड़ा-दौड़ा घर लौट आया। फिर ब्राह्मणी से बोला, "ये लो, मैं खीर बनाने का सामान ले आया हूँ।" ब्राह्मणी खाना बनाने में बहुत कुशल थी। इतना अच्छा खाना बनाती थी कि जैसा पहले किसी ने न खाया हो। जब वह खीर बनाने लगी तो उसकी ख़ुशबू से आस-पड़ोस के सभी लोग पागल-से हो गये। एक कौआ उस सुगंध को पाकर बोला, "अरे ! इतनी अच्छी चीज़ तो खाकर देखनी ही पड़ेगी।" वह ब्राह्मण के घर की छत पर आकर बैठ गया। वह बहुत देर तक छत पर गुमसुम बैठा रहा। फिर रसोई से आती आवाज़ सुनते हुए बोला, "मालूम होता है, खाना बन गया।" थोड़ी देर बाद जब फिर आवाज़ आयी तो कौआ बोला, "लगता है, अब खाना परोसा जा रहा है।"

थोड़ी देर बाद फिर कुछ आवाज़ सुनकर कौआ बोला, "लगता है, अब सभी खाना खा रहे हैं।"

सचमुच ब्राह्मण और उसकी बेटी भोजन करने बैठे थे। खीर इतनी अच्छी बनी थी कि दोनों ने मिलकर लगभग सारी ही खा ली। ब्राह्मणी के लिए थोड़ी-सी ही बची। ब्राह्मणी के खाना खा लेने के बाद हाँड़ी में थोड़ी-सी भी खीर नहीं बची।

इतनी देर के बाद भी जब कौए को कुछ खाने को न मिला तो उसे बहुत गुस्सा आया। उसने मन-ही-मन कहा, "मुझे ऐसा धोखा दिया। इसका बदला लेना होगा।"

ब्रह्मण के घर के पास एक घना जंगल था। उसमें एक तगड़ा बाघ रहता था। शरारती कौए ने बाघ से कहा, "बाघ महाशय, हमारे ब्राह्मण की एक सुन्दर बेटी है। आप तो इतने अच्छे पात्र हैं। आपसे उनकी बेटी की शादी हो जाये तो बहुत अच्छा हो।"

बाघ बोला, "शादी का प्रस्ताव कौन रखेगा ? मैं पहुँचा तो मारे डर के सभी भाग जायेंगे।"

कौआ बोला, "आप निश्चिंत रहिए। मैं सब इन्तज़ाम कर देता हूँ। पहले आप ब्राहमण को कुछ भोजन भेज दें।"

बाघ बोला, "ठीक है। मैं गाँव जाकर, एक कुत्ते को मार डालूँगा और उसे ब्राह्मण के घर छोड़ आऊँगा।"

कौआ सुनकर बोला, "नहीं नहीं। वे भला कुत्ता खायेंगे ! आपके घर नींबू का जो पेड़ है उसके नींबू भिजवा दीजिए। मैं ही लेकर जाऊँगा।"

ऐसा कहकर वह कुछ नींबू लेकर ब्राह्मण को दे आया और लौटकर बोला, "बाघ महाशय ! वे नींबू ख़ाकर बहुत ख़ुश हुए। आप इसी तरह से कुछ दिनों तक नींबू भेजते रहिए, वे अपनी बेटी की शादी आपसे कर देंगे।"

सुनकर बाघ मारे ख़ुशी के उछलने-कूदने और नाचने लगा।

इसी तरह रोज़ कौआ नींबू ले जाता और लौटकर बाघ से कहता कि ब्राह्मण अपनी बेटी की शादी उसी से करेंगे।

असल में वह झूठ बोल रहा था। लेकिन बाघ को लगा कि ब्राहमण ने सचमुच शादी की बात कही होगी। एक दिन बाघ बोला, "नींबू तो ख़त्म हो गये, लेकिन मेरी शादी नहीं हुई।"

कौआ बोला, "ज़रूर होगी। आप जब चाहेंगे तभी होगी।" बाघ बोला, "उनसे जाकर कहो कि अगर कल रात को शादी न हुई तो मैं उन सबको चबाकर खा जाऊँगा।"

कौए को तो यही चाहिए था। वह तुरन्त ब्राह्मण के घर जाकर बोला, "सुनते हैं—कल रात को बाघ तुम्हारी बेटी से शादी करने आयेगा। अगर शादी नहीं हुई तो वह तुम सबको चबाकर खा जायेगा।"

यह सुनकर ब्राह्मण और ब्राह्मणी छाती पीटकर रोने लगे। रोने की आवाज़ सुनकर गाँव के लोग दौड़ आये और उनसे रोने का कारण पूछा। ब्राह्मण रो-रोकर बोला, "कल बाघ आयेगा हमारी बेटी से शादी करने। उससे शादी न की तो वह सबको चबाकर खा जायेगा।"

यह सुनकर गाँव के लोग बोले, "ऐसी बात है ! देखते हैं, वह कैसे शादी करता है ? और न करने पर कैसे चबाकर खाता है ? आप डरिये मत, हम सब सँभाल लेंगे।"

गाँववालों ने बाघ को संदेशा भिजवा दिया, "बाघ महाशय ! आपसे अच्छा दूल्हा कौन होगा ? आप पोशाक में सजधज कर आइये। सभा के मण्डप में बैठिये, गाना-बजाना सुनिये, दावत खाइये और फिर अच्छी तरह से शादी करके लौट जाइये।"

उसके बाद उन्होंने मिलकर ब्राह्मण के आँगन में तीन सौ चूल्हे बनाये और उस पर तीन सौ तेल की हाँड़ियाँ चढ़ा दीं। कुएँ के ऊपर शानदार बिस्तर तैयार किया। फिर सब ढाक-ढोल बजाकर खूब शोर मचाने लगे। शोर सुनकर बाघ ने सोचा यह मेरी शादी का धूम-धड़ाका होगा। उसने जल्दी-जल्दी शादी का जोड़ा पहना, पगड़ी पहनी और नाचता-कूदता ब्राह्मण के घर पहुँच गया।

तभी लोगों ने कहा, "दूल्हा आया है! बाजा बजाओ।" और बाघ को कुएँ के ऊपर बना बिस्तर दिखा दिया। बाघ महाशय उछलकर उस पर बैठे और बैठते ही वे धड़ाम से कुँए में जा गिरे। गाँव के लोगों ने पलक झपकते उन तीन सौ हाँड़ियों का गर्म तेल और तीन सौ चूल्हों की आग कुएँ में डाल दी। देखते ही देखते मूर्ख बाघ जलकर मर गया। ब्राह्मण के सिर से मुसीबत टली। कौआ यह तमाशा देखने के लिए घर की छत पर बैठा था। गाँव के बच्चों ने ईटें मारकर कौए का सिर फोड़ दिया।

बाघ के ऊपर 'वाघ'

एक था जुलाहा। उसका एक बेटा था। बड़ा ही लाड़ला और ज़िद्दी। वह जो भी माँगता उसे लेकर ही रहता।

एक दिन एक रईस का बेटा, घोड़े पर सवार होकर उस जुलाहे के घर के सामने से जा रहा था। यह देखकर जुलाहे के बेटे ने जुलाहे से कहा, "पिता जी, मेरे पास घोड़ा क्यों नहीं है? मुझे भी घोड़ा ला दीजिए।"

पिता ने कहा, "घोड़ा खरीदने के लिए ढेर-सा पैसा चाहिए।"

बेटा बोला, "नहीं। मुझे घोड़ा लाकर देना ही होगा।"

ऐसा कहकर पहले उछल-कूदकर रोने लगा। इसके बाद उसने अपने पिता का हुक्का तोड़ दिया। इस पर भी जब घोड़ा नहीं मिला तो उसने खाना-पीना छोड़ दिया।

जुलाहा बहुत परेशान हुआ। बेटे को खान-पीन छोड़े देख उसने सोचा, अब तो घोड़ा ख़रीदना ही पड़ेगा। देखता हूँ, मेरे पास कुछ पैसे हैं भी या नहीं।

बहुत ढूँढ़कर उसने कुछ रुपये निकाले। फिर उनको एक कपड़े में बाँधकर वह घोड़ा ख़रीदने बाज़ार की ओर चल पड़ा।

बाज़ार में जुलाहे ने घोड़ेवाले से पूछा, "भई, तुम्हारा घोड़ा कितने का है?"

घोड़ेवाला बोला, "पचास रुपये का।"

जुलाहा कपड़े में केवल पाँच रुपये बाँधकर ही लाया था। पचास रुपये वह लाता भी कहाँ

से ? इसलिए वह घोड़ा न ख़रीद सका और दुखी होकर घर लौट चला।

तभी दो आदमी वहाँ खड़े लड़ते दिखायी दिये। उनमें से एक बोला, ''तुम्हें बड़ी मुश्किल होगी।''

यह सुनकर दूसरा बोला, ''होगा तुम्हारा सिर और घोड़े का अण्डा।''

घोड़े का अण्डा तो होता नहीं इसलिए इसका मतलब हुआ कि कुछ नहीं होगा। बुद्धू जुलाहा यह बात जानता न था। घोड़े के अण्डे की बात सुनकर वह बोला, ''भई, मुझे यह तो बताना कि घोड़े का अण्डा कहाँ मिलता है ?''

एक दुष्ट आदमी पास ही में खड़ा था। उसने जुलाहे से कहा, ''मेरे साथ आओ। मेर घर में घोड़े का अण्डा है।''

उस दुष्ट के घर में एक खरबूजा पड़ा था। वह जुलाहे को घर ले गया और खरबूजा थमाते हुए बोला, ''यह रहा घोड़े का अण्डा। देखो, यह तो फूटने को भी है। अभी इसमें से बच्चे निकलेंगे। देखना कहीं भाग न जायें।''

जुलाहा बेहद ख़ुश हुआ। उसने पूछा, ''इसकी क़ीमत कितनी है ?''

दुष्ट बोला, ''पाँच रुपये।''

जुलाहे ने तुरंत पाँच रुपये दिए और उस खरबूजे को लेकर घर को चला।

खरबूजा फट गया था। उसके अंदर लाल लाल रंग दिखायी पड़ रहा था। जुलाहे ने सोचा, 'अगर घोड़े के बच्चे निकलकर भागना चाहेंगे तो उन्हें तभी पकड़ लूँगा। फिर उसके गले में चादर बाँधकर उन्हें घर ले जाऊँगा। अगर वह उछलने लगे तो भी उन्हें छोड़ूँगा नहीं।

ऐसी ही बातें सोचता हुआ जुलाहा एक नदी के किनारे पहुँचा। तभी उसे ज़ोरों की प्यास लगी। जुलाहा खरबूजे को ज़मीन पर रखकर पानी पीने गया। उसने यह देखा भी नहीं कि एक सियार वहाँ आ टपका था। उसके पानी पीते-पीते सियार ने भी लगभग सारा खरबूजा खा लिया। तभी जुलाहे की नज़र उस पर पड़ी और वह उसके पीछे चिल्लाता हुआ भागा, ''हाय, सर्वनाश हो गया ! मेरे घोड़े के बच्चे भाग गये।''

जुलाहा भला सियार को कहाँ पकड़ सकता था ? सियार उसे मैदानों और जंगलों के अन्दर से न जाने कहाँ-कहाँ ले गया। जुलाहा इतना थक गया था कि वह चल भी नहीं पा रहा था। घर लौटते समय उसे पता चला कि वह तो रास्ता ही भूल गया है। रात हो गयी थी, इसलिए घर लौटने का कोई चारा न था। जुलाहा रास्ता ढूँढ़ता हुआ एक बुढ़िया के घर पहुँचा और उससे सोने की थोड़ी-सी जगह माँगी। बुढ़िया के घर में सिर्फ़ दो ही कमरे थे। एक कमरे में बुढ़िया अपनी पोती के साथ रहती थी, दूसरे कमरे में उनका सामान था। उसी कमरे में उसने जुलाहे को जगह दे दी।

एक बाघ रोज़ रात को बुढ़िया के घर के पीछे आकर बैठा करता था। बुढ़िया को यह मालूम था। इसलिए वह कभी भी रात को कमरे से बाहर नहीं निकलती थी और न अपनी पोती को निकलने

देती थी। उसकी पोती ने जुलाहे से घोड़े के अण्डे की अधूरी कहानी सुन रखी थी। पूरी कहानी सुनने के लिए उसने फिर से जुलाहे के पास जाना चाहा। तब बुढ़िया उससे बोली, "नहीं, । वहाँ मत जाना। बाघ-वाघ दबोच लेगा तुझे।"

'बाघ-वाघ' लोग तो ऐसे ही कहते रहते हैं। 'वाघ' जैसी कोई चीज़ नहीं होती। लेकिन बाघ को यह बात कहाँ मालूम ! उसने कमरे के पीछे से बुढ़िया की बात सुनी और गहरी सोच में पड़ गया। उसने सोचा, 'वाघ' उससे भी ख़तरनाक कोई राक्षस या जानवर या भूत-प्रेत होगा। उसे डर लगने लगा। वह सोचने लगा, अगर वाघ आ गया तो मैं भागूँगा कहाँ ?"

तभी जुलाहा यह देखने के लिए बाहर निकला कि सुबह हुई कि नहीं। बाहर निकलकर उसने बाघ को देखा और सोचा, यही मेरे घोड़े का बच्चा होगा। उसने दौड़कर बाघ के मुँह पर कपड़ा लपेटा और उसकी पीठ पर बैठ गया। बाघ बुरी तरह चौंक गया। उसने सोचा, "ज़रूर मुझे वाघ ने पकड़ा होगा। हाय ! सर्वनाश हो गया।"

यही सोचकर बाघ जान बचाकर भागने लगा। लेकिन उसकी आँखों पर पट्टी बँधी थी इसलिए वह ठीक से भाग न सका।

जुलाहा उसकी पीठ पर सवार था और सोच रहा था कि यह तो घोड़े का बच्चा है। उसने सोचा कि सवेरा होते ही उसे घर का रास्ता मालूम हो जायेगा। फिर वह घोड़े के बच्चे को लेकर घर लौट जायेगा। रोशनी होने पर जुलाहे ने पाया कि वह जिस पर सवार था, वह घोड़े का बच्चा नहीं; बल्कि एक बाघ था। अब वह करता भी क्या ? उसने सोचा, "अब मैं नहीं बचूँगा।"

इधर बाघ दौड़ते-भागते कह रहा था—"हे वाघ भाई, मेरी पीठ से तो उतरो। मैं तुम्हारी पूजा करूँगा।" जुलाहे को पता नहीं चला कि बाघ उसी को 'वाघ' कहकर बुला रहा था। जुलाहा तो यही सोच रहा था कि वह कैसे भागे ?

कुछ समय बाद वह बाघ एक बरगद के पेड़ के नीचे से सरपट भागा जा रहा था। उस पेड़ की डालियाँ बहुत नीची थीं, जिन्हें छूना बहुत आसान था। जुलाहे ने एक डाली पकड़ी और झट से पेड़ पर चढ़ गया।

जुलाहा बोला, "बाल-बाल बच गया।"

बाघ भी बोला, "बाल-बाल बच गया।"

लेकिन केवल पेड़ पर चढ़ने से क्या होता ? उससे उतरना भी तो था। वह शैतान बाघ वहाँ से भागने की बजाय पेड़ के नीचे बैठकर हाँफने लगा और दूसरे बाघों को बुलाने लगा। उसकी आवाज़ सुनकर चार-पाँच बाघ वहाँ आ गये और बोले, "तुम्हें क्या हुआ है ? तुम्हारी आँखों पर कपड़ा किसने बाँधा ?"

बाघ हाँफते हुए बोला, "अरे भाई यही समझ लो कि आज तो जान ही चली जाती। मुझे वाघ ने पकड़ लिया था। उससे बड़ी विनती की कि तेरी पूजा करूँगा—ऐसा कहने के बाद उसने

छोड़ा। उसी शैतान ने मेरी आँख पर पट्टी बाँधी है, अगर उसकी पूजा नहीं की तो वह फिर आकर मुझे पकड़ लेगा।''

यह सुनकर सारे बाघों ने मिलकर उस पेड़ के नीचे 'वाघ' की पूजा शुरू की। बड़े-बड़े जंगली-भैंसे और हिरन बड़ी तादाद में वहाँ आने लगे। जुलाहे ने पहले कभी इतने सारे बाघ नहीं देखे थे। वह तो पेड़ पर बैठकर काँप रहा था।

जुलाहे के काँपने से पेड़ की पत्तियाँ हिलने लगीं। बाघों ने हैरान होकर पेड़ को देखा, लेकिन पत्तों की आड़ में होने के कारण वे जुलाहे को पहचान नहीं पाये।

एक ने कहा, ''भाई पेड़ पर वो क्या है ?''

दूसरा बोला, ''देखो, उसकी कितनी लम्बी पूँछ है !''

पूँछ नहीं, जुलाहे की चादर लटक रही थी। पत्तों के चलते उसे ठीक से न देखकर वे उसी को पूँछ समझ बैठे। उसी पूँछ को देखकर एक बूढ़ा बाघ बोला, ''यह कोई ख़तरनाक जानवर होगा। शायद वाघ ही होगा।''

यह सुनकर सभी बाघ मिलकर गरज उठे, ''भागो ! भागो'' और वहाँ से भाग खड़े हुए। तब जुलाहा भी पेड़ से उतरकर घर चला गया।

जुलाहे को देखकर उसका बेटा बोला, ''पिताजी, मेरा घोड़ा कहाँ है ?''

जुलाहे ने उसके गाल पर ज़ोर-से एक थप्पड़ मारा और कहा, ''यह ले अपना घोड़ा।''

जुलाहे के बेटे ने फिर कभी घोड़े की बात नहीं की।

बाघ चढ़ा पालकी

बाघ ठहरा मामा और सियार ठहरा भांजा, इसलिए उन दोनों में बड़ी दोस्ती थी। सियार ने एक दिन बाघ को दावत पर बुलाया, लेकिन उसके लिए कुछ पकाया नहीं। बाघ जब दावत पर आया तो वह उससे बोला, ''मामा, पहले आप बैठिए। मैंने और भी दो-चार लोगों को दावत पर बुलाया है, उन्हें बुलाकर लाता हूँ।''

ऐसा कहकर सियार चला गया और रात होने तक घर नहीं लौटा। सारी रात इन्तज़ार के बाद बाघ सुबह सियार को गालियाँ देता हुआ चला गया।

इसके बाद बाघ ने एक दिन सियार को दावत पर बुलाया। सियार जब आया तो उसे बड़ी-बड़ी और मोटी-मोटी हड्डियाँ खाने को दीं। हड्डियाँ लोहे की तरह कड़क थीं। बेचारे सियार के चार दाँत टूट गये फिर भी वह उन हड्डियों को काट न सका। बाघ को तो वैसी ही हड्डियाँ पसंद थीं। उसने ख़ुशी-ख़ुशी से सारी हड्डियाँ खा लीं और बोला, ''क्यों भांजे, तुमने भरपेट खाया या नहीं ?''

सियार हँसते-हँसते बोला, "हाँ, मामा। मेरे घर में आपने जिस तरह भरपेट खाया था न, उतना ही मैंने भी भरपेट खाया है।" लेकिन मन-ही-मन उसे बहुत गुस्सा आ रहा था। उसने तय किया कि बाघ मामा से बदला लेकर ही अपने गाँव लौटूँगा, वर्ना नहीं।

ऐसा सोचते हुए सियार वह गाँव छोड़कर दूसरी जगह चला गया। उस नये इलाके में गन्ने के ढेर सारे खेत थे। सियार उसी खेत में रहता था और खूब गन्ने खाता। जो नहीं खा पाता, उसे उखाड़कर रख देता था।

किसान हैरान थे। वे सोचते, हमारे गन्ने कौन दुष्ट सियार इस तरह उखाड़ फेंकता है ? उन्होंने खेतों के पास एक फन्दा तैयार किया।

यह फन्दा लकड़ी से एक छोटे-से घर की तरह बनाया जाता है। इसके अन्दर किसी जानवर के घुसते ही उसका दरवाज़ा अपने आप बन्द हो जाता है और इस तरह वह जानवर फन्दे में फँस जाता है।

जब किसान फन्दा तैयार कर रहे थे, तब सियार हँसते हुए सोचने लगा, "यह घर मेरे लिए बन रहा है या मामा के लिए ? इतने सुन्दर घर में मामा को ही रहना चाहिए।"

उसके अगले दिन ही वह बाघ से जाकर बोला, "मामा, एक बड़ी दावत का न्यौता मिला है। राजा के बेटे की शादी है—वहाँ मैं गाना गाऊँगा और आप बाजा बजायेंगे। खाने-पीने की तो बात ही मत पूछिए। उन्होंने पालकी भी भेजी है। चलेंगे न मामा जी !"

बाघ बोला, "जाऊँगा क्यों नहीं ? ऐसी दावत कभी छोड़ सकता हूँ भला ! और फिर उन्होंने पालकी भी तो भेजी है।"

सियार बोला, "यह कोई ऐसी-वैसी पालकी नहीं ! ऐसी पालकी में आप कभी नहीं बैठे होंगे मामा। ऐसी बातें करते हुए दोनों उस गन्ने के खेत के पास पहुँचे, जहाँ वह फन्दा डाला गया था। फन्दा देखकर बाघ बोला, "केवल पालकी भेजी है। पालकी उठानेवाले नहीं भेजे।"

सियार बोला, "पालकी में आपके सवार हो जाने के बाद पालकी उठानेवाले भी आ जायेंगे।"

बाघ बोला, "पालकी में तो डण्डे ही नहीं लगे हैं। इसे उठायेंगे कैसे ?"

सियार बोला, "डण्डे तो वे साथ ही ले आयेंगे।" यह सुनकर बाघ ने जैसे ही फन्दे के अन्दर पाँव रखा, उसका दरवाज़ा अपने आप बन्द हो गया। तब सियार बोला, "आपने तो दरवाज़ा ही बन्द कर दिया। अब मैं अन्दर कैसे घुसूँगा ?"

बाघ बोला, "तुम्हें अन्दर आने की ज़रूरत नहीं। मैं अकेले ही दावत उड़ाने जाता हूँ।"

सियार बोला, "ठीक है मामा। भरपेट दावत उड़ाना। भूखे पेट न रह जाना।"

ऐसा कहकर सियार हँसता हुआ अपने गाँव चला गया। थोड़ी देर बाद किसानों ने आकर देखा कि फन्दे में बाघ महाशय फँसे हैं। उन्होंने सबको बुलाकर कहा, "आओ, लाठी लाओ, भाला लाओ, जो भी हथियार मिले, लाओ। फन्दे में बाघ पड़ा है। जो भी जहाँ है, आ जाये।"

सभी दौड़े आये और उन्होंने जी भरकर बाघ की पिटाई की।

बुद्धू का बाप

एक बूढ़ा किसान था, जिसे सभी बुद्धू का बाप कहकर बुलाते थे। बुद्धू के बाप के खेत में धान पक चुका था। झुण्ड-के-झुण्ड पक्षी आकर उसका धान खा लेते। बुद्धू का बाप दो लकड़ियाँ बजा-बजाकर उन पंछियों को उड़ाने लगा, लेकिन लकड़ी की आवाज़ सुनकर भी वे भागे नहीं। तब उसने कहा, ''अगर शैतान एक बार हाथ लग जायें तो इड़ी-मीड़ी-कीड़ी के बंधन दिखा दूँगा।''

असल में 'इड़ी-मीड़ी-कीड़ी' के बंधन का कोई मतलब नहीं होता। लेकिन बुद्धू के बाप को दूसरी कोई तेज़ गाली याद न आयी, इसलिए उसने ऐसा कहा। रोज़-रोज़ पंछी आते और उन्हें भगा नहीं पा सकने पर बुद्धू का बाप बोलता, ''मैं इन्हें इड़ी-मीड़ी-कीड़ी के बंधन दिखा दूँगा।''

एक दिन की बात है। एक बहुत बड़ा बाघ रात को बुद्धू के बाप के खेत में आकर सोया हुआ था। सोते-सोते कब सुबह हो गयी, यह बाघ को पता भी न चला। उस दिन भी बुद्धू का बाप डण्डे हिलाकर पक्षियों को कहने लगा, ''अगर हाथ आ जायें तो इड़ी-मीड़ी-कीड़ी के बंधन दिखा दूँगा।''

'इड़ी-मीड़ी-कीड़ी' वाली बात सुनकर बाघ गहरी सोच में पड़ गया। उसने सोचा, ''यह तो कोई नयी चीज़ मालूम होती है। ऐसे बंधन के बारे में तो कभी नहीं सुना।'' वह इसके बारे में जितना सोचता उतना ही उसे लगता कि इसे तो देखना ही पड़ेगा। इसलिए वह धीरे-धीरे धान के खेत से निकलकर बुद्धू के बाप के पास जाकर बोला, ''भाई, एक बात पूछनी थी।''

बाघ को देखकर बुद्धू का बाप इतनी बुरी तरह डर गया कि पूछो मत। लेकिन वह बहुत चतुर आदमी था। वह तुरन्त सँभल गया और बाघ को मालूम भी न पड़ा। बुद्धू के बाप ने बाघ से पूछा, ''क्या बात है भाई ?''

बाघ बोला, ''वो तुम इड़ी-मीड़ी-कीड़ी के बंधन के बारे में क्या कुछ कह रहे थे। वो मुझे एक बार दिखाना होगा।''

बुद्धू का बाप बोला, ''इसे इतनी आसानी से नहीं देख सकते। इसके लिए बहुत-सा सामान चाहिए।''

बाघ बोला, ''मैं सभी सामान ला देता हूँ, लेकिन मुझे वह दिखाना ही होगा।''

बुद्धू का बाप बोला, ''ठीक है। तुम पहले सारा सामान लाओ। मैं फिर दिखा दूँगा।''

बाघ बोला, ''क्या सामान चाहिए ?''

बुद्धू का बाप बोला, ''एक बहुत बड़ा और मज़बूत थैला चाहिए, एक बहुत मोटी और लम्बी रस्सी चाहिए और एक बड़ा मुगदर चाहिए।''

बाघ बोला, ''बस इतना ही सामान चाहिए। इसमें भला क्या देर लगेगी ?''

वह हाट का दिन था। बाघ जाकर हाटवाली सड़क के पीछे छिप गया। थोड़ी देर बाद उस सड़क से तीन मुरमुरा बेचनेवाले निकले। मुरमुरा बेचनेवालों के थैले बहुत बड़े और बहुत मज़बूत भी होते हैं।

बाघ झाड़ियों के पीछे बैठा था और मुरमुरा बेचनेवाले एक-एक करके उसके सामने आ गये। तभी बाघ गुर्राता हुआ रास्ते के बीचों-बीच आकर खड़ा हो गया। मुरमुरेवाले सब कुछ छोड़-छाड़कर भाग खड़े हुए।

तब बाघ ने मुरमुरा समेत वे थैलियाँ बुद्धू के बाप को लाकर दी। उसके बाद वह पहुँचा रस्सी लाने।

रस्सी के लिए ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। मैदान में कई गायें खूँटे से बँधी थीं। बाघ के वहाँ जाते ही वे रस्सी तुड़ाकर भागीं। बाघ ने वे रस्सियाँ लाकर बुद्धू के बाप को दे दीं। उसके बाद वह मुगदर लाने चला।

एक अखाड़े में पहलवान कसरत कर रहे थे। इतने में बाघ वहाँ जा धमका। बाघ को देखकर ''बाप रे, बचाओ,'' कहकर वे भागे। तब बाघ ने एक बड़े मुगदर को मुँह से उठाया और लाकर बुद्धू के बाप के सामने पटककर कहा, ''तुम्हारा कहा सारा सामान ले आया हूँ। अब वो चीज़ दिखाओ।''

बुद्धू का बाप बोला, ''ठीक है। तुम एक बार थैले में तो घुस जाओ।'' यह सुनकर बाघ महाशय तुरत उस थैले में जा घुसे। बुद्धू के बाप ने भी तुरन्त ख़ूब अच्छी तरह थैले का मुँह बंद कर दिया और रस्सी से कसकर बाँध दिया। हिलने-डुलने के लिए रत्ती भर भी जगह न छोड़ी।

फिर दोनों हाथों से मुगदर उठाकर उसने ज़ोर से थैले पर दे मारा। बाघ ने आश्चर्य से कहा, ''यह क्या कर रहे हो भाई ?''

बुद्धू का बाप बोला, ''क्यों तुम्हें 'इड़ी-मीड़ी-कीड़ी' का बंधन दिखा रहा हूँ। क्या तुम्हें डर लग रहा है ?''

हाँ, कहता तो बहुत शर्म की बात होती इसलिए बाघ बोला, ''नहीं, नहीं।''

तब बुद्धू के बाप ने ज़ोर से थैले पर मुगदर बरसाना शुरू किया। चिल्लाने से बेइज़्ज़ती होती— इसलिए मार खाकर भी बाघ बहुत देर तक चुप रहा। लेकिन कब तक चुप रहता ? दस-बारह मुगदर खाने के बाद ही वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। थोड़ी देर बाद वह चिल्ला न पाने के वजह से सिसकने लगा। बुद्धू के बाप ने फिर भी नहीं छोड़ा और पीटता चला गया। आख़िर में बाघ की कोई आवाज़ न सुनकर उसने समझ लिया, वह मर गया। तब थैला खोलकर वह बाघ को खेतों के किनारे छोड़ आया और अपने घर आकर बैठ गया।

लेकिन बाघ मरा न था। चार-पाँच घण्टे तक अधमरा पड़े रहने के बाद वह उठकर बैठ गया। उसका अंग-अंग दर्द कर रहा था और उसे तेज़ बुखार भी था। लेकिन गुस्से के मारे उसका ध्यान इन बातों पर न गया। वह अपने दाँत पीसकर बोला, ''शैतान, बुद्धू का बाप ! दुष्ट, पाज़ी, शैतान ! तुझे अभी मज़ा चखाता हूँ।''

यह सुनकर डर के मारे बुद्धू के बाप के रोंगटे खड़े हो गये। उसने तुरंत अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लिया, चिटकनी लगायी और अन्दर बैठा रहा। वह तीन दिन तक कमरे से निकला ही नहीं। बाघ उन तीन दिनों तक बुद्धू के बाप के घर के चारों ओर घूमता रहा और उसे गालियाँ देता रहा। उसके बाद वह दरवाज़े पर आकर एक भोले-भाले आदमी की आवाज़ में बोला, ''भाई, मुझे ज़रा आग तो देना। तम्बाकू खाना है।''

बुद्धू के बाप ने देखा कि आदमी-जैसी बातें करने पर भी आवाज़ तो बाघ-जैसी ही थी। उसने सोचा कि आग देने से पहले ठीक से देख लेना चाहिए।'' यह सोचकर उसने जैसे ही दरवाज़े की झिरी से झाँककर देखा तो उसे बाघ दिखाई दिया। इसके बाद भला वह दरवाज़ा खोलता ? उसने काँपती हुई आवाज़ में कहा, ''भाई, बहुत बीमार हूँ। दरवाज़ा नहीं खोल सकता। तुम दरवाज़े के नीचे से अपनी लाठी दे दो, मैं उसमें आग बाँध देता हूँ।''

बाघ को लाठी कहाँ से मिलती भला ! उसने अपनी पूँछ दरवाज़े के नीचे से अन्दर कर दी। बुद्धू के बाप ने हँसिये से बाघ की पूँछ काट दी।

बाघ बड़े ज़ोर से चिल्लाया। उसने बुद्धू के बाप की छत के बराबर ऊँची-ऊँची छलाँग लगायी। उसके बाद थोड़ी-बहुत जो पूँछ बची थी, उसे दबाकर चीखता-चिल्लाता भाग खड़ा हुआ।

लेकिन बुद्धू के बाप का डर नहीं गया। उसे लगा कि अब सारे बाघ मिलकर उसे मारने आयेंगे। सचमुच, उसने अगले दिन देखा कि बीस-पच्चीस बाघ उसके घर की तरफ़ आ रहे हैं। तब वह और क्या करता ? घर के पीछे एक बहुत ऊँचा इमली का पेड़ था, जिसके ऊपर चढ़कर वह बैठ गया। वहाँ बँधा था एक मटका। बुद्धू का बाप उसके पीछे छिपकर देखने लगा कि ये सब बाघ क्या करते हैं ?

बाघों ने आते ही मटके के पीछे छिपे बुद्धू के बाप को देख लिया। वे उसे गाली देने लगे, चिढ़ाने लगे और तरह-तरह से डराने-धमकाने लगे। बुद्धू का बाप चुपचाप मटका पकड़े बैठा रहा, कुछ नहीं बोला।

इसके बाद बाघों ने मिलकर बुद्धू के बाप को पकड़ने की एक तरकीब सोची। उनमें जो सबसे होशियार था,' वह बोला, ''हममें से जो सबसे बड़ा है, वह ज़मीन पर सीधा होकर बैठे। उससे जो छोटा है, वह उसके कंधे पर चढ़ जाये। इस तरह एक के ऊपर एक चढ़कर हम उस शैतान को पकड़कर खा लेंगे।''

इन बाघों में सबसे बड़ा था, वही पूँछकटा बाघ। उसकी पूँछ का घाव भरा नहीं था इसलिए

वह बैठ नहीं पा रहा था, क्योंकि बैठने पर उसे बहुत दर्द होता था। लेकिन उसके बैठे बिना काम नहीं बनता। जैसे भी हो, बैठना ही था। बाघ को एक गड्ढा दिखाई दिया उसमें अपनी कटी पूँछ डालकर बड़ी मुश्किल से वह बैठ गया। दूसरे बाघ भी एक-एक कर उसकी पीठ पर चढ़ने लगे।

इस तरह एक-दूसरे की पीठ पर चढ़ते-चढ़ते देखते-ही-देखते वे ऊँचाई में बुद्धू के बाप के बराबर आ पहुँचे। बस थोड़ा और ऊँचा होते ही वे उसे पकड़ लेते।

बुद्धू का बाप सोचने लगा, "जो होगा, देखा जायेगा। आखिरी दाँव मार कर देखूँ। ऐसा सोचकर वह मिट्टी के मटके को हाथ में लेकर बैठा—उसे सबसे ऊपरवाले बाघ के सिर पर फोड़ने के लिए।

तभी एक बहुत मज़ेदार बात हुई। जिस गड्ढे में उस पूँछकटे बाघ ने अपनी पूँछ घुसेड़ी थी उसमें एक केकड़ा रहता था। कटी पूँछ की गंध पाकर केकड़ा धीरे-धीरे आया और उसने अपने दोनों हाथों से ज़ोर की चिकोटी काटी। चिकोटी से तिलमिलाकर बाघ बोला, "ओ...ओ... हाँ... हालूम ! अरे ! ऊपर भी बुद्धू का बाप, नीचे भी बुद्धू का बाप !" और वह उठ खड़ा हुआ। उसकी पीठ पर चढ़े सारे बाघ धड़ाम से ज़मीन पर आ गिरे। तभी बुद्धू के बाप ने उस पूँछकटे बाघ की पीठ पर मटकी फेंककर कहा, "पकड़ो ! पकड़ो ! उस पूँछकटे शैतान को पकड़ो।"

इसके बाद बाघों का वह झुण्ड भला वहाँ ठहरता ? सारे बाघ दुम-दबाकर भाग निकले। उसके बाद वे कभी बुद्धू के बाप के घर के पास भी नहीं फटके।

बुद्धू बाघ

एक राजमहल के पास ही एक सियार रहता था। राजा की बकरियों के कमरे के पीछे उसका गड्ढा था।

राजा की बकरियाँ बहुत मोटी-तगड़ी थीं।

उनको देखते ही सियार के मुँह में पानी आ जाता, लेकिन राजा के चरवाहों के डर से वह उनके पास नहीं आ पाता था।

तब सियार ने गड्ढे की मिट्टी को खोदना शुरू किया। फिर अन्दर-ही-अन्दर बकरियों की बाड़ तक आ गया लेकिन फिर भी वह बकरियों को नहीं खा सका।

चरवाहे तब भी वहीं बैठे थे। सियार को देखते ही उन्होंने उसे पकड़ लिया, फिर उसे खूँटी से बाँधकर वे चले गये। जाते वक़्त वे कह गये, "कल पहले सबको इसका तमाशा दिखायेंगे, फिर मारेंगे। आज तो रात हो गयी है।"

चरवाहे जा चुके थे। सियार सिर झुकाये बैठा था। तभी वहाँ से बाघ निकला। सियार को वहाँ देखकर बाघ को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, "क्यों भांजे, यहाँ क्या कर रहे हो ?"

सियार बोला, "शादी कर रहा हूँ।"

बाघ बोला, "फिर दुल्हन कहाँ है ? सब लोग कहाँ है ?"

सियार बोला, "दुल्हन तो राजा की बेटी है। सभी उसे लिवाने गये हैं।"

बाघ ने पूछा, "लेकिन तुम बँधे हुए क्यों हो ?"

सियार बोला, "मैंने शादी करने से इंकार कर दिया था न. इसलिए मुझे बाँधकर रखा है ताकि मैं भाग न जाऊँ।"

बाघ बोला, "क्या तुम सचमुच शादी नहीं करना चाहते ?"

सियार बोला, "सच मामा। मुझे अभी शादी करने की ज़रा भी चाह नहीं।"

यह सुनकर बाघ झटपट बोल उठा, "फिर तुम अपनी जगह मुझे बाँधकर क्यों नहीं चले जाते ?"

सियार बोला, "हाँ, अभी लो। तुम मेरी रस्सी खोल दो। फिर मैं तुम्हें अपनी जगह बाँध देता हूँ।"

बाघ की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। उसने तुरंत सियार की रस्सी खोल दी। सियार ने भी देर नहीं की और उसे अच्छी तरह खूँटी से बाँधकर बोला, "एक बात है मामा ! आपके साले आकर आपके साथ कुछ हँसी-मज़ाक़ करेंगे। उनसे आप नाराज़ मत हो जाना।"

बाघ बोला, "अरे नहीं ! मैं भला क्यों गुस्सा होने लगा। मैं क्या इतना बेवकूफ़ हूँ।"

उसकी बात सुनकर सियार हँसता हुआ चला गया। इधर बाघ सोचने लगा कि लोग दुल्हन को लेकर कब आयेंगे ? अगली सुबह वही चरवाहे वहाँ आये। बाघ ने उन्हें देखकर सोचा, "ये ही मेरे साले होंगे। अब ये मेरे साथ हँसी-मज़ाक़ करेंगे। फिर मुझे हँसना भी पड़ेगा।"

चरवाहे तो सियार की पिटाई करने आये थे। उन्होंने देखा कि वहाँ बाघ बैठा था। वहाँ भगदड़ मच गयी। कोई भागना चाहता तो बाघ उसे रोककर कहता, "देखते नहीं, मैं तो बँधा हुआ हूँ। फिर डर कैसा ? लाठी, कुल्हाड़ी, बल्लम, भाला ले आओ।"

तभी किसी ने एक बड़ी-सी ईंट बाघ को दे मारी। बाघ हँसता रहा—ही-ही-ही। दूसरे ने उसे बाँस से पीटा। बाघ हँसता ही रहा, "ही ही... ही ही।" तीसरे ने उसे भाले से कोंचा। बाघ बोला, "ऊँ हूँ हूँ, हो हो हो... मैं समझ गया, तुम सब मेरे साले हो।"

फिर उन्होंने भाले से मारा। बाघ गुस्से में आकर बोला, "धत् स्साले ... ऐसी बेकार की शादी मैं नहीं करूँगा।" और ऐसा कहकर वह रस्सी तोड़कर जंगल में चला गया।

जंगल में एक जगह लकड़हारे आरे से लकड़ी चीरा करते थे। एक बड़े-से कुन्दे को आधा चीर उसमें कीलें ठोककर लकड़हारे चले गये थे। तभी बाघ ने जंगल के अन्दर आकर देखा कि सियार उस आधी चिरी हुई लकड़ी पर बैठकर आराम कर रहा है। सियार उसे देखकर बोला, "क्यों मामा, शादी कैसी रही ?"

बाघ बोला, "अरे भांजे, वे लोग बहुत ज्यादा मज़ाक़ कर रहे थे। इसलिए मैं बिना शादी किये लौट आया।"

सियार बोला, "यह तुमने ठीक ही किया। चलो अब दोनों मिलकर बातें करते हैं।"

सुनकर बाघ उछलकर कुन्दे पर चढ़ गया और वहाँ जा बैठा जहाँ से लकड़ी चीरी हुई थी। उसकी पूँछ उस लकड़ी के बीच से लटकी थी।

सियार ने सोचा कि अगर अब कुन्दे के बीच की कील निकाल दी जाए तो बड़ा मज़ा आयेगा। बाघ को तरह-तरह की बातों में उलझाकर वह धीरे-धीरे उस कील को निकालने लगा। खींचते-खींचते ऐसा हुआ कि थोड़ा-सा खींचने पर ही वह कील निकल गयी और बाघ की पूँछ लकड़ी के बीच दब गयी और सियार 'हाय मामा, मर गया।' चीख़ता-चिल्लाता कील समेत ज़मीन पर गिरकर लोटने लगा।

बाघ का जो हाल हुआ, उसका क्या कहना ? लकड़ी में पूँछ के दबते ही वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया और उछल पड़ा। ऐसा करते ही उसकी पूँछ दो हिस्सों में कट गयी। तब बाघ भी सियार के साथ ज़मीन पर लोटने लगा।

बाघ बोला, "भांजा मैं मरा ! मेरी पूँछ कट गयी है।"

सियार बोला, "मामा, मैं तो मर ही गया। मेरी तो कमर ही टूट गयी।"

इस तरह लोटते-पोटते दोनों एक सूरन के खेत में जाकर लेटे रहे। बाघ तो हिल भी नहीं सकता था। लेकिन शैतान सियार को तो कुछ भी नहीं हुआ था। वह तो शुरू से ही बाघ को बेवकूफ़ बना रहा था।

उस सूरन के खेत में कई मेंढक थे। सियार ने लेटे-लेटे ही भरपेट मेंढक खाये। बाघ तो दर्द से छटपटा रहा था। उसे तो मेंढक दीखे ही नहीं। तो वह भला खाता क्या ? लेकिन उसको इतनी भूख लगी थी कि अगर कुछ न खाता तो मर ही जाता। उसने सियार से पूछा, "भांजे, तुमने कुछ खाया ?"

सियार बोला, "खाता क्या ? बस ये सूरन ही खाये हैं। इन्हें खाकर मेरा पेट बहुत फूल गया है।"

बाघ बेचारा क्या करता ? वह भी सूरन चबाकर खाने लगा। फिर उसका गला भी फूल गया, मुँह भी फूल गया। वह तो मरने-मरने को हो गया।

सियार ने पूछा, "क्यों मामा, कुछ खाया ?"

बाघ बोला, "भांजे खाया तो है लेकिन गला बहुत सूख रहा है। तुम्हारा तो पेट सूजा हुआ है, मेरा गला क्यों सूज गया ?"

सियार बोला, "मैं ठहरा सियार और तुम ठहरे बाघ, इसीलिए।"

कटी पूँछ के दर्द और गले की सूजन के कारण बाघ सोलह दिनों तक उठ न सका। इन सोलह दिनों में कुछ न खाने से वह अधमरा हो चुका था। तभी उसने देखा कि सियार उठकर अपनी देह झाड़कर मस्ती से चला जा रहा है। वह हैरान होकर बोला, "क्यों भांजे, तुम ठीक कैसे हुए ?"

सियार बोला, ''मामा, एक बहुत अच्छी दवा मिली है। मैंने अपने हाथ-पैर चबा-चबाकर खाये और तुरंत ठीक हो गया। फिर देखते-ही-देखते मेरे नये हाथ-पैर निकल आये।

बाघ बोला, ''अच्छा, तुमने मुझे ये बात क्यों नहीं बताई ?''

सियार बोला, ''तुम अपने हाथ-पैर चबाकर खा नहीं पाते मामा, इसीलिए नहीं बताया।''

यह सुनकर बाघ गुस्से से दहाड़ा, ''अगर तुम सियार होकर यह कर सकते हो तो मैं बाघ होकर इतना भी नहीं कर सकता ?''

सियार बोला, ''तुम तो ज़रा-से मज़ाक़ के डर से ऐसी शानदार शादी छोड़कर वापस आ गये। अब तुम अपने हाथ-पैर चबाकर खा सकोगे या नहीं, यह मैं कैसे जानूँ ?''

बाघ बोला, ''ले अपनी आँखों से देख कि मैं कर सकता हूँ या नहीं।''

ऐसा कहकर वह अपने हाथ-पैर चबाकर खाने लगा। इस तरह वह बुरी तरह ज़ख़्मी हो गया और दो-तीन दिनों में ही मर गया।

बाघ का रसोइया

एक बाघ की घरवाली मर गयी। मरते-मरते वह कह गयी, ''मेरे दो बच्चे हैं। तुम उनकी देखभाल करना।'' पत्नी के मरने के बाद बाघ बोला, ''मैं कैसे बच्चों को पालूँ और कैसे घर का भी सारा काम करूँ ?'' यह सुनकर दूसरे बाघों ने सलाह दी, ''दूसरी शादी कर लो। सब ठीक हो जायेगा।''

बाघ ने भी सोचा, ''क्यों न दुबारा शादी कर लूँ। लेकिन अब किसी बाघिन से शादी नहीं करूँगा। इन्हें खाना-वाना बनाना नहीं आता। यह सोचकर वह लड़की की तलाश में गाँव में पहुँचा। वहाँ एक गृहस्थ की एक लड़की और एक लड़का था। बाघ उस लड़की को उठा लाया और अपने बच्चों से बोला, ''देखो। यही तुम्हारी माँ है।'' बच्चे बोले, ''इसकी पूँछ नहीं, दाँत नहीं, रोएँ नहीं और धारियाँ भी नहीं है। यह हमारी माँ कैसे हो सकती है ? इसे मार डालो। हम इसे खायेंगे।''

बाघ बोला, ''ख़बरदार। ऐसी बात की तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।'' दोनों बच्चे डरकर चुप हो गये।

लेकिन यह लड़की उन्हें एकदम पसंद नहीं थी। बात-बात पर उसे कहते, ''थोड़े दिनों बाद बड़े होने पर हम ताक़तवर हो जायेंगे। तब मेरी गर्दन तोड़कर तुझे खा लेंगे।''

उस लड़की के दुःख का अंत न था। बाघ जब घर में नहीं होता, तब वह अपने माता-पिता और भाई के लिए फूट-फूटकर रोती। बाघ के आते ही उसके डर से वह चुप हो जाती। इसी तरह उसके दिन कटने लगे।

इधर उस लड़की के माता-पिता रो-रोकर अंधे हो गये। उसका भाई भी कुछ दिनों तक रोता

रहा। फिर अपने माता-पिता से बोला, "केवल घर में बैठे रहने और रोने से क्या फ़ायदा। मैं तो चला बहन को ढूँढ़ने।"

ऐसा कहकर वह घर से निकलकर जंगलों में भटकने लगा। ढूँढ़ते हुए वह उस बाघ के घर पहुँचा और अपनी बहन को देखा। बहन उसको देखते ही रोते हुए बोली, "भैया, तुम यहाँ क्यों आये ? बाघ को पता चला तो तुम्हें खा जायेगा।"

भाई बोला, "खाने दे उसे। अब मैं तुझे साथ लेकर ही जाऊँगा। अभी मुझे कहीं छिपा ले। बाद में देखा जायेगा।"

फिर दोनों ने मिलकर रसोई में एक गड्ढा खोदा। लड़की ने अपने भाई को उसमें बिठाकर सिल से ढक दिया।

बाघ जब घर लौटा तो अपने बच्चों के साथ खाना खाने बैठा। बच्चे अच्छी तरह खाना खा नहीं रहे थे। वे बार-बार कहने लगे—

"बापू, बापू तेरा साला, हम दोनों का मामा।
माँ का सगा भाई सिल के नीचे छुप के बैठा—
चलो हम इसको खा लें ।"

बाघ उस दिन किसी से लड़कर आया था, इसलिए बच्चों की बात सुनकर उसने उन्हें दो तमाचे मारे। वे क्या बोल रहे थे, उस पर ध्यान न दिया, खाना खाकर वह बोला, "आज पीठा बनाकर रखना। शाम को खाऊँगा, देखना अच्छी तरह से बनाना," यह कहकर वह घर से चला गया।

बाघ के जाने पर लड़की ने सिल के नीचे से अपने भाई को निकाला। फिर दोनों ने खाना खाया और चूल्हे पर तेल की कढ़ाई चढ़ायी। फिर बाघ के बच्चों को उसमें डालकर मार डाला और उन्हं चूल्हे पर लटकाकर दोनों भाई-बहन वहाँ से भाग गये। बाघ के बच्चे चूल्हे के ऊपर लटक रहे थे और उनके खून की बूँदें गरम तेल में टपक रही थीं।

शाम को जब बाघ लौटा तो घर में घुसने के पहले ही उसे आवाज़ सुनायी पड़ी... पिट-पिट ... इसे सुनकर वह बोला, "वाह, लगता है पीठा बन रहा है। अगर वह अच्छा बना तो ठीक है वर्ना हम तीनों, बाप और बेटे मिलकर इस लड़की को खा जायेंगे।"

कमरे में घुसते ही उसे पता चल गया कि कैसे पीठे बन रहे थे। वह "हालूम ! हालूम !" गरजता हुआ पूरे घर में लड़की को ढूँढ़ता रहा—लेकिन गृहस्थ की बेटी उसे कहाँ मिलती ? वह तब तक अपने भाई के साथ अपने माता-पिता के पास जा पहुँची। गाँव के सभी लोग दौड़े आये और उनके साथ ख़ुशियाँ मनाने लगे।

बेवकूफ़ जुलाहा और सियार

एक जुलाहा था। बेहद बेवकूफ़। एक दिन वह अनाज काटने के लिए अपना हँसिया लेकर खेत पर गया। लेकिन खेत के बीच में ही सो गया। काफ़ी देर बाद जब उसकी नींद खुली तो उसने अपना हँसिया उठाया। उसने पाया कि हँसिया बहुत गरम हो गया है।

इतनी देर तक धूप में पड़े रहने की वजह से हँसिया गरम हो गया था, लेकिन बेवकूफ़ जुलाहे ने सोच लिया कि हँसिये को बुखार है। वह सिर पटक-पटककर रोने लगा, ''हाय रे ! मेरा हँसिया तो अब मर जायेगा।''

उसके पासवाले खेत में एक किसान काम कर रहा था। जुलाहे को रोते-बिलखते देख उसने पूछा, ''क्या बात है ?''

तब जुलाहे ने जवाब दिया—''मेरे हँसिये को बुखार हो गया है।''

यह बात सुनकर किसान हँसने लगा और बोला—''उसे पानी में डुबोकर रख दो, बुखार उतर जायेगा।''

पानी में डुबाने पर हँसिया फिर से ठण्डा हो गया और जुलाहा भी ख़ुश हो गया।

कुछ दिन के बाद जुलाहे की माँ को बुखार हो गया। सभी ने वैद्य को बुलाकर दिखाना चाहा, लेकिन जुलाहा बोला—''कोई ज़रूरत नहीं। इसकी दवा मुझे मालूम है।''—यह कहकर वह अपनी माँ को तालाब पर ले गया और उसे पानी में डुबो दिया। बेचारी माँ छटपटाती रही। लेकिन जुलाहा कहता रहा, ''शान्त हो जा, माँ। बुखार अभी उतर जायेगा।''

थोड़ी देर में उसका छटपटाना बन्द हो गया और वह बिल्कुल शान्त हो गयी। जुलाहा उसे पानी से उठा लिया, लेकिन वह तब तक मर चुकी थी। यह देखकर जुलाहा अपना सिर पटककर रोने लगा। पूरे तीन दिन वह तालाब के किनारे ही बैठा रहा। न तो घर गया और न ही कुछ खाया-पिया।

जुलाहे की एक सियार से मित्रता थी। जुलाहे को रोते हुए देखकर सियार ने कहा—''मत रो दोस्त ! मैं राजकुमारी से तेरी शादी करा दूँगा।''

यह सुनकर जुलाहा अपने आँसू पोंछकर घर चला गया। उस दिन के बाद वह रोज़ ही सियार से पूछता ''क्यों दोस्त, तुम्हारे वादे का क्या हुआ ?''

सियार जवाब देता—''घबराते क्यों हो ? जब मैंने वादा किया है, तब निभाऊँगा भी। फ़िलहाल तुम एक काम करो—कुछ अच्छे और शानदार कपड़े सिलवा लो।''

पूरे दो महीने तक जुलाहा कपड़ा ही बुनता रहा। उसके बाद सियार ने आकर उससे कहा—''अब तुम ख़ूब सारा साबुन लगाकर अच्छी तरह से नहा लो। मैं चला राजा से उनकी बेटी का हाथ माँगने।''

फिर सियार ने कपड़े पहने। जूते पहने। सिर पर टोपी भी लगा ली, शाल भी ओढ़ लिया।

फिर हाथ में छाता और कान पर कलम लिये राजा के घर चला। उसे देखकर राजा ने समझा कि यह शायद कोई पंडित होगा। उन्होंने सियार से पूछा—"सियार पंडित जी, कहिए कैसे आना हुआ ?"

सियार ने जवाब दिया—"महाराज, मैं आपसे एक बात पूछने आया हूँ। क्या आप हमारे राजा से अपनी बेटी की शादी करेंगे ?"

सियार ने झूठ नहीं कहा था, क्योंकि जुलाहे का नाम 'राजा' ही था, पर महाराज ने समझ लिया कि सियार सचमुच किसी राजा के बारे में ही बात कर रहा है। उन्होंने बैचेनी से पूछा—"तुम्हारा राजा है कैसा ?"

सियार ने जवाब दिया—

"उसका रूप बड़ा ही सुन्दर, चाँदनी खेले घर के अन्दर।
पढ़ने में वह तेज है जैसा, अक्ल में भी है बिलकुल वैसा।
एक ही वार में दस को गिराये, कपड़े दे और सबको खिलाये।"

सियार की ये बातें ग़लत नहीं थी। जुलाहा देखने में वाक़ई सुन्दर था। इसलिए सियार ने कहा, "उसका रूप बड़ा ही सुन्दर।"

गरीब होने के नाते उसके घर की कोई छत नहीं थी, इसलिए कहा गया था, "चाँदनी खेले घर के अन्दर।" पर राजा ने समझ लिया कि शायद वह उन्हीं की तरह किसी आलीशान महल में रहता है। सोने और चाँदी की चमक ने जिसे चाँदनी की तरह चमकीला बना रखा है।

जुलाहा न तो पढ़ा-लिखा था और न तो उसमें ज़रा भी बुद्धि या अक्ल थी। इसलिए सियार ने कहा, "पढ़ायी में वह तेज़ है जैसा, अक्ल में भी है बिल्कुल वैसा"। यानी दोनों ही बिलकुल बराबर है। किन्तु राजा ने समझा कि वह बहुत ही विद्वान और बुद्धिमान है।

"एक ही वार में दस गिराये" भी सच था, क्योंकि जुलाहा किसान भी था और खेती-बाड़ी करता था। "दस गिराये" यानी अनाज के दस पौधे, जो वह अपने हँसिये के एक वार में काट डालता था। पर महाराजा ने समझा कि आदमी बहुत शूरवीर है, तलवार के एक वार से दस आदमियों को मार डालता है।

जुलाहा खेती करता था, कपड़े भी बुनता था। उसका पैदा हुआ चावल लोग ख़रीदकर खाते थे, उसका बुना हुआ कपड़ा भी पहनते थे। इसीलिए सियार ने कहा था—"कपड़े दे और सबको खिलाये।" लेकिन यह बात महाराजा को समझ न आयी। उन्होंने सोच लिया कि वह लोगों को चावल और कपड़े दान में देता होगा।

महाराज ने ख़ुश होकर सियार को एक हज़ार रुपये इनाम में दिये और कहा—"ऐसे आदमी से रिश्ता न करूँ तो और किससे करूँ ? अपने राजा को यहाँ ले आओ, आठ दिन के बाद ही शादी होगी।"

सियार हज़ार रुपये लेकर नाचता हुआ जुलाहे के पास आ गया। आकर उसने देखा कि वह तब तक कपड़े ही बुने जा रहा था। दो महीनों में उसने इतने सारे कपड़े बुन लिये थे कि गाँव के सारे लोग नये कपड़े पहन सकें।

सियार ने गाँव के सभी लोगों को बुलाकर सबको एक नयी धोती और एक हज़ार रुपये में से दो-दो रुपये दे दिये और कहा—"आठ रोज़ के बाद हमारे मित्र के साथ राजकुमारी की शादी है। उसमें आप सब निमंत्रित हैं।" यह सुनकर सभी ख़ुश हुए। बेवकूफ़ होने के बावजूद जुलाहा एक भला आदमी था। इसलिए सभी उसे चाहते थे।

उसके बाद सियार गया दूसरे सियारों के पास और बोला—"भाइयो, मेरे मित्र की शादी है, मैं तुम सबको दावत देता हूँ। शादी में तुम्हें गाना भी पड़ेगा।"

सियारों ने एक साथ जवाब दिया, "हाँ, हाँ, हम ज़रूर आयेंगे और गाना भी गायेंगे।"

फिर सियार मेंढकों के पास गया और बोला—"भाइयो, मेरे मित्र की शादी है, मैं तुम सबको दावत देता हूँ। शादी में तुम्हें गाना भी पड़ेगा।"

मेंढक बोले—"हाँ, हाँ, हम ज़रूर आयेंगे, गाना भी ज़रूर गायेंगे।"

इसके बाद सियार ने गौरैयों और फुलमुनियों के पास जाकर कहा "भाइयो ! मेरे मित्र की शादी है, मैं तुम सबको दावत देता हूँ। शादी में तुम्हें गाना भी पड़ेगा।"

"हाँ, हाँ, हम ज़रूर गायेंगे।" सब चहचहाकर बोल उठे।

फिर सियार चला तीतर, बटेर, कोयल, कबूतर, बगुले और मोर के पास। पनडुब्बी, कठफोड़वे और शकरखोरे के पास भी गया। सभी को अपने दोस्त की शादी में आने की दावत दी और गाना गाने के लिए कहा। बहुत सारी चिड़ियों को भी उसने यही कहा।

सभी को दावत देने में सात दिन लग गए। आठवाँ दिन शादी का था। सियार अपने मित्र के लिए बहुत ही शानदार कपड़े किराये पर ले आया। उन कपड़ों में जुलाहा वाक़ई राजा लग रहा था। जिन-जिनको दावत दी थी, सभी आ गये। सियार सबको अपने साथ लेकर चला राजा के पास।

कुछ देर में सारे लोग पहुँच गये। राजा का महल अब बस एक ही कोस दूर था। सियार ने सबसे कहा—"भाइयो, वह देखो राजमहल की रोशनी। तुम लोग उसी की तरफ़ बहुत धीरे-धीरे आ जाओ। मैं तब तक दौड़ता हुआ राजा जी के पास जाकर उनको ख़बर देता हूँ कि हम आ गये हैं।"

सभी ने जवाब दिया—"ठीक है।"

सियार ने कहा—"अब तुम सब जितनी ज़ोर से हो सके, गाना शुरू करो, मैं भी देखना चाहता हूँ कि किसकी आवाज़ सबसे तेज़ है।"

यह सुनते ही पाँच हज़ार सियारों ने मिलकर चिल्लाना शुरू कर दिया, "हुआ, हुआ, हुआ, हुआ....."

बारह हज़ार मेंढक ज़ोर-ज़ोर से टर्राने लगे।

सात हज़ार गौरैया भी शुरू हो गयीं। उसी के साथ-साथ दो हज़ार कठफोड़वे, चार हज़ार टिटिहरी, तीन हज़ार शुतुर्मुर्ग़, दो हज़ार चिड़ियाँ, कबूतर, चण्डूल, और एक हज़ार तीतर, बटेर, खंजन, मैना, पपीहे और मोर शुरू हो गये।

जितनी भी चिड़ियाँ वहाँ पर मौजूद थीं, सभी ने अपने-अपने गीतों को छेड़ा।

इतने सारे जानवर तथा चिड़ियों का शोर सुनने में कैसा रहा होगा, यह तो सुननेवाले ही समझ पायेंगे। राजमहल के लोग तो दूर से ही डर से काँपने लगे। थोड़ी ही देर में सियार भी वहाँ पहुँच गया। राजा ने हैरान होकर सियार से पूछा—"अरे भई यह आवाज़ कैसी ?"

सियार ने जवाब दिया—"यह आवाज़ हमारी बारात और उनके बाजों की है।"

यह सुनकर राजा बहुत डर गये, इतने सारे लोगों को कहाँ पर बैठायेंगे और क्या खिलायेंगे यह समझ ही न पाये। वह चिन्तित होकर बोले—"अब क्या होगा, पंडित जी ?"

सियार ने जवाब दिया—"घबराने की कोई बात नहीं। मैं अभी जाकर सबको वापस लौटा देता हूँ। सिर्फ़ अपने मित्र को ही आपके पास ले आऊँगा।"

राजा निश्चिन्त हुए और उन्होंने ख़ुश होकर सियार को पाँच हज़ार रुपये दे दिये। सियार ने सबके लिए ढेर सारा मुरमुरा, मीठा चावल और छोटी-छोटी मछलियाँ ख़रीद लीं। फिर उन्हें मैदान के बीच में बिखेरकर कहा—"तुम सब भरपेट भोजन कर लो।" सारे सियार, मेंढक और पंछी ख़ुश होकर खाने लगे।

सियार ने गाँव के सभी लोगों को भरपेट मिठाई खिलाकर उन्हें वापस भेज दिया। उसके बाद वह जुलाहे को राजा के पास ले आया। आते समय उसने जुलाहे से कह दिया—"खबरदार, किसी से बातें मत करना। अगर तुमने मुँह खोला तो यह शादी नहीं होगी।"

राजा के महल में सभी लोग वर देखकर बहुत ख़ुश हुए लेकिन उन्हें इसी बात का अफ़सोस रहा कि इतना सुन्दर दूल्हा बातें क्यों नहीं करता ?

सियार ने कहा—"इनकी माता फ़िलहाल चल बसी हैं, इसी दुःख से ये आजकल बिलकुल ही नहीं बोलते।"

यह सुनकर सभी ने कहा—"बेचारा !"

पर असली बात कुछ और ही थी। सियार को मालूम था कि उसके मित्र की बातों से सभी को मालूम पड़ जायेगा कि वह तो असल में एक जुलाहा है। इसीलिए उसने जुलाहे को मना कर रखा था।

शादी के बाद जुलाहा भोजन करने बैठा। सोने की थाली में चावल और एक सौ सोने की कटोरियों में तरह-तरह की सब्ज़ी, भाजी और मिठाई परोस दी गयी। जुलाहा एक के बाद एक सभी कटोरियाँ हाथ में उठाकर सूँघने लगा पर कोई भी चीज़ उसकी पहचान की न थी। फिर वह सब्जी, भाजी, मिठाई और चटनी सब कुछ एक साथ चावल में मिलाकर खाने लगा। लेकिन पूरा खा नहीं पाया। जो कुछ बचा था, उसे चद्दर में बाँधने लगा, यह देखकर राजमहल के लोग सियार से पूछने

लगे—"कैसा अजीब राजा है तुम्हारा। लगता है कि ऐसा खाना पहले कभी देखा नहीं।"

सियार ने उनको इशारा करते हुए कान में बताया—"हमारे राजा को जो कुछ भी खाना होता है, एक साथ और एक ही बार में खाते हैं। जो कुछ रह जाता है, उसे चद्दर में बाँधकर किसी ग़रीब इंसान को दान में देते हैं। आप लोग किसी ग़रीब आदमी को बुलवाइए। यह कहते हुए सियार ने जुलाहे के कंधे से चद्दर उतारकर उसे एक भिखारी को दे दिया।

सोते समय एक और आफ़त हो गयी। पलंग हाथीदाँत का बना हुआ था, उस पर दूध-सा सफ़ेद बिस्तर। इसके ऊपर से मच्छरदानी लगी हुई। बेचारे जुलाहे ने इससे पहले न तो कभी पलंग देखा था और न ही मच्छरदानी। पहले तो वह नीचे घुस गया पर वहाँ कोई बिस्तर नहीं था, इसलिए निकल आया। फिर वह मच्छरदानी के चारों तरफ़ घूमने लगा। लेकिन उसे कहीं भी दरवाज़ा दिखायी नहीं दिया। फिर उसने मन-ही-मन कहा—"अब समझा। ये कमरे के अन्दर कमरा बना रखा है। और दरवाज़ा बनाये हैं छत पर।" जुलाहा मच्छरदानी की छत पर कूदने लगा लेकिन ऊपर कूदते ही पलंग की छतरी टूट गयी और छतरी के साथ जुलाहा भी ज़मीन पर आ गिरा। उसे बहुत चोट आयी। तब जुलाहा रो-रोकर कहने लगा—

"खेती करता, कपड़े बुनता, वहीं ठीक था दैया
राजकुमारी ब्याह के मेरी कमर टूट गयी भैया।"

यह तो जुलाहे का सौभाग्य था कि उस समय उसकी बातें सुनने के लिए राजकुमारी के अलावा वहाँ और कोई उपस्थित नहीं था। सियार भी कमरे के बाहर बैठा हुआ था। राजकुमारी सारी बात समझ गयी और रोने लगी। उसने सियार को भी बहुत डाँटा। पर राजकुमारी बहुत चालाक थी, इसलिये उन्होंने यह राज़ किसी को भी नहीं बताया। दूसरे दिन राजकुमारी ही के कहने पर सियार ने जाकर राजा जी से कहा—"महाराज, आपके दामाद आपकी बेटी को लेकर विदेश यात्रा पर निकलना चाहते हैं। इसलिए वह आपसे आज्ञा चाहते हैं।"

राजा ने ख़ुश होकर आज्ञा दे दी और साथ में ढेर सारी दौलत और आदमी भी। राजकुमारी जुलाहे को लेकर बहुत दूर चली गयी। वहाँ उसके लिए तरह-तरह के अध्यापक नियुक्त किये। कुछ ही सालों में पढ़-लिखकर जुलाहा समझदार और विद्वान हो गया।

इसके कुछ दिन बाद समाचार मिला कि राजा का देहान्त हो गया है और वे अपने दामाद को ही अपना राज्य सौंप कर गये हैं। जुलाहा सचमुच का राजा बन गया और सभी राजी-ख़ुशी रहने लगे।

बेवकूफ़ मगरमच्छ

मगरमच्छ और सियार दोनों दोस्त मिलकर खेती करने लगे। पहले किसकी खेती करें ? वे आलू की खेती करने लगे। आलू तो मिट्टी के नीचे उगता है और उसका पौधा मिट्टी के ऊपर होता है। पौधे पर तो कुछ नहीं फलता—यह बेवकूफ़ मगरमच्छ नहीं जानता था। उसने सोचा, आलू पौधे पर फलता है।

इसलिए उसने सियार को बेवकूफ़ बनाने के लिए कहा, "पौधे के ऊपर का हिस्सा मेरा और नीचे का हिस्सा तुम्हारा।"



यह सुनकर सियार हँस पड़ा। फिर बोला, "ठीक है, ऐसा ही सही।" फिर पौधों के बड़े हो जाने पर मगरमच्छ उनके ऊपरी हिस्से को काटकर अपने घर ले आया। घर आकर उसने देखा कि उसमें एक भी आलू न था। तब उसने खेत में जाकर देखा कि सियार मिट्टी खोदकर सभी आलू लेकर जा चुका है।

उसने सोचा, इस बार तो मैं बुद्धू बन गया। अच्छा, अगली बार देखूँगा।

अगली बार धान की खेती की गयी। मगरमच्छ ने सोच लिया था कि अब वह बुद्धू नहीं बनेगा। इसलिए उसने पहले से ही सियार से कह दिया, "भई, इस बार मैं ऊपर का हिस्सा नहीं लूँगा। इस बार मुझे नीचे का हिस्सा देना होगा।"

सुनकर सियार हँसकर बोला, "ठीक है, ऐसा ही होगा।"

फिर जब फ़सल पकी तो सियार धान समेत ऊपर का हिस्सा काटकर ले गया। मगरमच्छ तो इस बार बहुत खुश था। उसने सोचा, "मिट्टी खोदकर सारा धान निकाल लूँगा।" लेकिन हाय रे किस्मत ! मिट्टी खोदकर उसने देखा कि वहाँ कुछ भी नहीं था। बचा-खुचा ही उसके हाथ लगा।

अब मगरमच्छ को बहुत गुस्सा आया। वह कहने लगा, "ठहर सियार के बच्चे ! तुझे बताता हूँ। अब मैं तुझे ऊपरी हिस्सा लेने नहीं दूँगा। सारा-का-सारा मैं ही ले लूँगा।"

इस बार हुई गन्ने की खेती।

मगरमच्छ ने तो पहले ही कह दिया था कि वह ऊपरी हिस्सा ही लेगा। इसलिए सियार ने ऊपरी भाग छोड़कर गन्ने तोड़ लिए और अपने घर में बैठकर मज़े से खाने लगा।

मगरमच्छ ख़ुश होकर गन्ने का ऊपरी भाग घर ले आया। इसे खाने बाद उसने पाया कि वह केवल नमकीन था, ज़रा भी मीठा नहीं था। तब उसने अपने आप से कहा, "भइया। अब मैं कभी तुम्हारे साथ खेती नहीं करूँगा। तुम बड़े बेईमान हो।"

सियार पंडित

मगरमच्छ ने देखा कि वह सियार का मुकाबला नहीं कर पा रहा है। उसने फिर सोचा, वह तो पढ़ा-लिखा है। इसीलिए मुझे बेवकूफ बनाता रहता है। मैं मूर्ख हूँ इसलिए उसका मुकाबला नहीं कर सकता। बहुत सोच-समझकर मगरमच्छ ने यह तय किया कि वह अपने सात बच्चों को पढ़ने के लिए सियार के पास भेजेगा। अगले ही दिन वह अपने सात बच्चों को लेकर सियार के घर पहुँचा। सियार अपनी खोह में बैठकर केकड़े खा रहा था। मगरमच्छ ने आवाज़ दी, "सियार पंडित तुम घर पर हो ?"

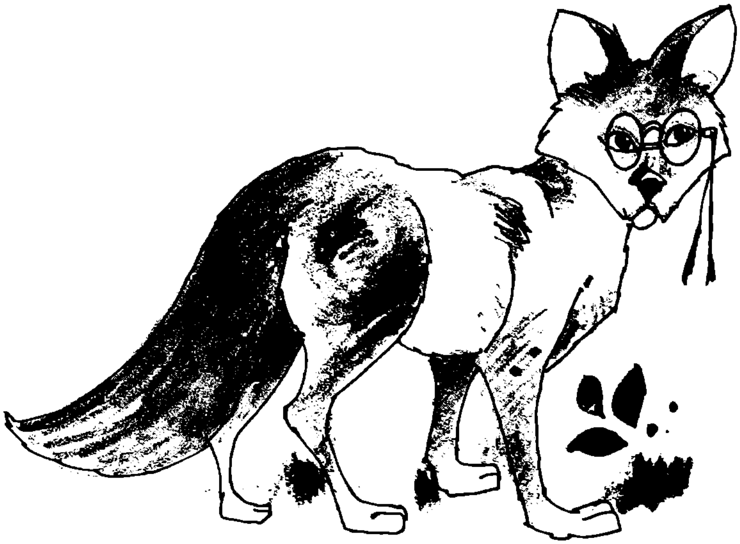
सियार बाहर आकर बोला, "क्यों भाई, क्या काम है ?"

मगरमच्छ बोला, "भाई, मैं अपने सात बेटों को तुम्हारे पास लाया हूँ। ये ठहरे मूर्ख इसीलिए कमाकर खा नहीं पायेंगे। तुम इनको लिखना-पढ़ना सिखा दो।"

सियार बोला, "यह भी कोई बड़ी बात है। मैं सात दिन में सातों को पंडित बना दूँगा।"

यह सुनकर मगरमच्छ बहुत खुश हुआ और अपने सात बच्चों को वहीं छोड़कर चला गया। सियार उनमें से एक को अलग ले जाकर बोला, "पढ़ो तो बेटा—

क ख ग हम सीखें कैसे ?
मगरमच्छ जो खाये ऐसे !"



ऐसा कहकर वह उसकी गर्दन तोड़कर उसे खा गया।

अगले दिन जब मगरमच्छ अपने बच्चों को देखने आया तो सियार उन्हें एक-एक करके खोह से बाहर लाकर दिखाने लगा। छह बच्चों को छह बार दिखाया और छठे को दो बार दिखाया। बुद्धू मगरमच्छ ने सोचा कि उसने सातों को देख लिया। तब वह चला गया और तभी सियार एक दूसरे बच्चे को अलग ले जाकर बोला, "पढ़ो तो बेटा—

क ख ग हम सीखें कैसे
मगरमच्छ जो खाये ऐसे !"

ऐसा कहकर उसने उसकी गर्दन तोड़ी और खा गया।

अगले दिन मगरमच्छ फिर अपने बच्चों को देखने आया। सियार एक-एक करके पाँच बार पाँच बच्चों को बिल के बाहर ले गया और दिखा दिया। उसने पाँचवें को तीन बार दिखाया। मगरमच्छ खुश होकर चला गया।

फिर सियार ने पहले की तरह एक और बच्चा खा लिया। इस तरह वह रोज़ एक बच्चा खाता और मगरमच्छ को बेवकूफ़ बनाता। अंत में जब सिर्फ़ एक ही बच्चा बच गया तब उसने एक ही बच्चे को सात बार दिखाकर मगरमच्छ को बुद्धू बनाया। मगरमच्छ के जाते ही उसने उसे भी खा लिया। अब एक भी नहीं बचा।

सियार की पत्नी बोली, "अब क्या करें ? मगरमच्छ के आने पर किसे दिखायेंगे ? बच्चों को नहीं देखा तो वह हमें ही खा जायेगा।"

सियार बोला, "हम उसे मिलेंगे, तभी तो वह हमें खा सकेगा। नदी के उस पार का जंगल

बहुत बड़ा है। चलो हम लोग वहाँ चले जाते हैं। फिर मगरमच्छ हमें ढूँढ भी नहीं पायेगा।''

ऐसा कहकर सियार अपनी पत्नी को लेकर अपने पुराने बिल को छोड़कर चला गया। थोड़ी देर में ही मगरमच्छ आ गया। उसने पुकारा, ''सियार पंडित, ओ सियार पंडित! लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। उसने बिल के अन्दर और बाहर ढूँढकर देखा कि सियार और उसकी पत्नी दोनों नहीं थे, सिर्फ़ उसके बच्चों की हड्डियाँ थीं। उसे बहुत ग़ुस्सा आया और वह चारों ओर सियार को ढूँढने लगा। ढूँढता हुआ वह नदी के किनारे पहुँचा और उसने देखा कि सियार और उसकी पत्नी तैरकर नदी पार कर रहे थे। 'ठहर बदमाश!' कहकर वह भी नदी में कूद पड़ा। पानी में भला मगरमच्छ से तेज़ कौन तैर सकता है? देखते-ही-देखते उसने सियार के पीछे की टाँग को जबड़े में दबोच लिया।

सियार ने सिर्फ़ अपने आगे के दो पैर किनारे पर रखे थे। उसकी घरवाली पहले ही किनारे पहुँच चुकी थी। मगरमच्छ के काटते ही उसने अपनी पत्नी से पूछा, ''मेरी लाठी को कौन खींच रहा है? शायद लाठी ले ही गया।''

यह सुनकर मगरमच्छ को लगा, ''हाय! मैंने पाँव के बजाए उसकी लाठी पकड़ ली।'' जल्दी से लाठी छोड़कर पाँव पकड़ता हूँ। यह सोचकर जैसे ही उसने सियार का पाँव छोड़ा, वह एक छलाँग लगाकर किनारे पर आ गया और वहाँ से भाग गया। एक बार जंगल में घुस जाने के बाद उसे कौन पकड़ पाता भला?''

इसके बाद मगरमच्छ हमेशा सियार की खोज में लगा रहा लेकिन सियार इतना चतुर था कि वह उसे पकड़ ही न पाता। बहुत सोचकर उसने एक तरकीब लगायी।

मगरमच्छ एक दिन किनारे पर जाकर मुर्दे की तरह लेटा रहा। जब सियार और उसकी पत्नी कछुए की तलाश में वहाँ पहुँचे तो उन्होंने मगरमच्छ की यह हालत देखी। सियार की पत्नी बोली, ''यह तो मर गया है। चलो इसे खाते हैं।''

सियार बोला, ''ठहरो, ज़रा देख तो लूँ।'' ऐसा कहकर वह मगरमच्छ के और पास जाकर कहने लगा, ''यह तो लगता है बहुत ज्यादा मर गया है। इतना ज्यादा मरा हुआ हम नहीं खाते। जो थोड़ा हिलता-डुलता है, हम उसे ही खाते हैं।'' यह सुनकर मगरमच्छ ने सोचा, ''अब तो मुझे थोड़ा हिलना होगा नहीं तो यह मुझे खाने मेरे पास नहीं आयेगा।''

यह सोचकर मगरमच्छ ने अपनी पूँछ हिलानी शुरू की। यह देखकर सियार हँसता हुआ कहने लगा, ''लो देखो, वह अपनी पूँछ हिला रहा है। तुम तो कह रही थीं कि वह मर गया है।''

फिर भला वे कहाँ ठहरते?

मगरमच्छ बोला, ''इस बार तो मुझे ठग लिया उसने। अच्छा अगली बार देख लूँगा।''

सियार एक जगह रोज़ पानी पीने आता था। मगरमच्छ यह देखकर वहाँ जाकर छिप गया। उसने सोचा, जैसे ही सियार पानी पीने आयेगा, उसे मैं दबोच लूँगा।

उस दिन सियार ने वहाँ आकर देखा कि पानी में एक भी मछली नहीं है। पहले तो यहाँ बहुत मछलियाँ थी। सियार ने सोचा, "आज सब मछलियाँ गयी कहाँ ? समझ गया। यहाँ मगरमच्छ आ गया है।" उसने फिर कहा—"यहाँ का पानी तो बहुत साफ़ है। पानी थोड़ा गंदा न हो तो क्या कोई पी सकता है ? चलो घरवाली हम कहीं और चलकर पीते हैं।" यह सुनते ही मगरमच्छ ने वहाँ का पानी गंदा करना शुरू किया। यह देखकर सियार हँसता-हँसता भाग गया।

दूसरे दिन सियार पहुँचा केकड़ा खाने। मगरमच्छ पहले से ही वहाँ आकर बैठा था। सियार को पता चला गया और वह बोला, "यहाँ केकड़े नहीं है, अगर होते तो पानी पर तैरते।" तभी मगरमच्छ ने अपनी पूँछ का कोना पानी के ऊपर उठा दिया। यह देखकर सियार पानी में नहीं उतरा।

इस तरह से बार-बार सियार से ठगे जाने पर मगरमच्छ को बड़ी शर्म आयी। तब वह भला अपना मुँह कैसे दिखाता ? इसलिए वह अपने घर में घुसकर बैठा रहा।

सियार की गवाही

एक सौदागर एक घोड़ा लेकर घूमने निकला। चलते-चलते उसे नींद आने लगी। उसने घोड़े को एक पेड़ से बाँध दिया और उसी पेड़ के नीचे सो गया। तभी एक चोर आया और सौदागर का घोड़ा ले जाने लगा।

सौदागर ने घोड़े की टाप सुनी और बोला, "भाई, तुम मेरा घोड़ा लिए कहाँ जा रहे हो ?"

चोर बेहद गुस्से से बोला, "तुम्हारा घोड़ा कौन-सा है ?"

सुनकर सौदागर हैरान होकर बोला, "यह क्या बात हुई ? तुम मेरा घोड़ा लेकर जा रहे हो और पूछते हो कि यह मेरा घोड़ा कैसे है ?"

शैतान चोर ने मुँह फुलाकर कहा, "ख़बरदार ! मेरे घोड़े को अपना घोड़ा मत कहना।"

सौदागर बोला, "अरे ! मैं अपने घर से यह घोड़ा लेकर आया और तुम कहते हो कि यह तुम्हारा है ?"

चोर बोला, "अरे यह तो मेरे इस पेड़ का बच्चा है। अभी पैदा हुआ है। तुम सोच-समझकर बात करो नहीं तो बहुत मुसीबत में पड़ जाओगे।"

सौदागर ने राजा के पास जाकर शिकायत की—"महाराज ! मैं अपने घोड़े को पेड़ से बाँधकर सो रहा था और यह शैतान उसे ले जाने लगा।"

चोर हाथ जोड़कर बोला, "रहम करें महाराज ! यह घोड़ा इसका है ही नहीं। यह तो मेरे पेड़ का बच्चा है। इसका जन्म होते ही मैं इसे ले जा रहा था और यह शैतान कहने लगा कि यह उसका

घोड़ा है। सब झूठ है।''

तब महाराज बोले, ''यह तो बहुत ग़लत बात है। पेड़ के बच्चा हुआ और तुम कहते हो कि यह तुम्हारा घोड़ा है। लगता है, बहुत दुष्ट हो। भागो यहाँ से।'' ऐसा कहकर उन्होंने घोड़ा चोर को ही दे दिया।

बेचारा सौदागर रोता-बिसूरता घर को चल पड़ा। थोड़ी दूरी पर उसे एक सियार मिला। उसे रोता देख सियार बोला, ''क्यों भाई तुम्हारा मुँह क्यों सूजा है ? क्या बात है ?''

सौदागर बोला, ''अरे, भाई कुछ मत पूछो ! मेरा घोड़ा चोर ले गया। राजा के पास शिकायत करने गया तो चोर ने कहा कि वह तो उसके पेड़ का बच्चा है। महाराज ने यह सुनकर चोर को ही घोड़ा दे दिया।''

यह सुनकर सियार बोला, ''अच्छा, एक काम कर सकते हो ?''

सौदागर ने पूछा, ''क्या काम है ?''

सियार बोला, ''तुम फिर से महाराज के पास जाकर कहो कि महाराज मेरा एक गवाह भी है। अगर आपके महल में कुत्ते न हों तो मैं उस गवाह को ला सकता हूँ।''

सौदागर फिर राजा के पास जाकर बोला, ''महाराज मेरा एक गवाह है, लेकिन आपके महल के कुत्तों के डर से वह आ नहीं रहा है। अगर आप अपने कुत्ते यहाँ से हटा देने की आज्ञा दें तो मैं उसे ले आऊँगा।''

यह सुनकर राजा ने तुरत सभी कुत्तों को हटा देने का आदेश दिया और कहा, ''ठीक है। अब तुम अपने गवाह को लेकर आओ।''

सियार सौदागर से सब बातें सुनने के बाद आँखें बन्द कर घूमता हुआ सभा में आ पहुँचा। वहाँ आते ही वह दीवार से लगकर सोने लगा। राजा ने यह देखकर हँसते हुए कहा—''क्यों सियार पंडित, तुम सो रहे हो ?''

सियार ने आधी आँख खोलकर कहा, ''महाराज, कल सारी रात जागकर मछलियाँ खा रहा था, इसलिए आज बड़ी नींद आ रही है।''

राजा बोला, ''इतनी मछलियाँ मिली कहाँ से ?''

सियार बोला, ''कल नदी में आग लग गयी थी, इसलिए सारी मछलियाँ किनारे पर आ गयी थीं। हम सबने मिलकर सारी रात मछलियाँ खायीं। लेकिन उन्हें हम खत्म कैसे कर सकते थे ?''

यह सुनकर राजा बहुत ज़ोर से हँसा। बहुत मुश्किल से हँसी रोककर बोला, ''ऐसी बात तो सुनी नहीं पहले। भला पानी में भी कभी आग लग सकती है ? ये सब बेकार की बातें हैं।''

तब सियार बोला, ''महाराज, पेड़ का बच्चा भी घोड़ा होता है—ऐसी बात कभी सुनी है आपने ? अगर यह बेतुकी बात नहीं है तो मेरी बात में क्या ग़लती है ?''

सियार की बात सुनकर राजा सोच में पड़ गये। बहुत विचारकर उन्होंने कहा, ''हाँ तुम ठीक

कहते हो। पेड़ का बच्चा घोड़ा कैसे हो सकता है ? वो शैतान ज़रूर चोर रहा होगा।''

हुक्म हुआ, ''जाओ और उस शैतान चोर को बाँधकर ले आओ।''

दस सिपाही जाकर चोर को पकड़ लाये। राजा ने छूटते ही कहा, ''मारो शैतान को पचास जूते।''

सिपाहियों ने तुरंत अपने जूते उतारे और ज़ोर-ज़ोर से चोर की पीठ पर मारने लगे। पच्चीस जूते खाकर चोर चिल्ला उठा, ''हाय ! मैं मरा। मैं अभी घोड़ा लाकर देता हूँ। ऐसा काम फिर कभी नहीं करूँगा।''

लेकिन उसकी बात कौन सुनता ! पचास जूते लगवाने के बाद राजा बोले, ''जल्दी घोड़ा वापस कर नहीं तो और पचास जूते पड़ेंगे।''

चोर दौड़कर गया और उल्टे पाँव घोड़ा ले आया। उसके नाक-कान काटकर, गंजा कर और फिर सिर पर चूना डालकर देश निकाला दे दिया गया। घोड़ा पाकर सौदागर सियार को दुआएँ देने लगा।

शेर खानेवाले सियार के बच्चे

एक था सियार और उसकी घरवाली। उनके तीन बच्चे थे, लेकिन उनके रहने की जगह नहीं थी। उन्होंने सोचा, बच्चों को अब कहाँ रखे ? जगह न मिली तो बारिश में मर जायेंगे। बहुत ढूँढने पर उन्हें एक गुफा मिली। लेकिन गुफा के चारों तरफ़ सिर्फ़ शेर के पैरों के निशान थे। यह देखकर घरवाली बोली, ''अजी, यह तो शेर की गुफा है। इसके अन्दर हम कैसे रहेंगे ?

सियार बोला, ''इतना ढूँढ़ने पर भी हमें कोई ख़ाली गुफा तो मिली नहीं। अब इसी में रहना पड़ेगा।''

घरवाली बोली, ''अगर शेर आ गया तो क्या होगा ?''

सियार बोला, ''तब तुम ज़ोर से बच्चों को चिकोटी काटना, जिससे वे चिल्लायेंगे। मैं पूछूँगा कि रो क्यों रहे हैं ? तब तुम बोलना ये शेर को खाना चाहते हैं।''

यह सुनकर घरवाली बोली, ''समझ गयी। ठीक है।'' ऐसा कहकर वह ख़ुश होकर गुफा में घुस गयी। तबसे वे उसी गुफा में रहने लगे।

इस तरह कई दिन बीत गये। आख़िर उन्होंने एक दिन शेर को आते देखा। तभी घरवाली अपने बच्चों को ज़ोर-ज़ोर से चिकोटी काटने लगी। फिर तो बच्चे इस तरह चिल्लाये कि पूछो मत।

तब सियार ने भारी आवाज़ में पूछा, ''बच्चे क्यों रो रहे हैं ?''

घरवाली भी उतनी ही भारी आवाज़ में बोली, ''ये शेर को खाना चाहते हैं, इसीलिए रो रहे हैं।''

शेर अपनी गुफा की ओर आ रहा था। यह सुनकर वह चौंक पड़ा और वहीं रुक गया।

उसने सोचा, "बाप रे ! मेरी गुफा में न जाने कौन लोग घुसकर बैठे हैं। ज़रूर कोई भयानक राक्षस होगा। तभी उसके बच्चे शेर को खाना चाहते हैं ?"

सियार बोला, "मैं अब शेर कहाँ से लाऊँ ? जितने थे सभी तो इन्हें खिला दिये।"

घरवाली बोली, "यह तो नहीं होगा। जैसे भी हो, एक शेर पकड़कर लाओ। वरना बच्चे रोना बंद नहीं करेंगे।" यह कहकर वह अपने बच्चों को और भी ज़ोर से चिकोटी काटने लगी।

सियार बोला, "ठहरो ... ठहरो ! वो देखो एक शेर चला आ रहा है। मेरा 'झपांग' तो देना अभी उसे 'भतंग' करता हूँ।"

वास्तव में 'झपांग' और 'भतंग' जैसा कुछ नहीं होता। यह सब सियार की चाल थी, लेकिन 'झपांग' और 'भतंग' सुनते ही बाघ के प्राण निकल गये। उसने सोचा, "बाप रे ! अभी भाग लेता हूँ नहीं तो न जाने किससे मुझे क्या कर देगा।" शेर एक पल को नहीं रुका।

सियार ने देखा कि शेर बड़ी-बड़ी छलाँगे लगाकर झाड़ियों के ऊपर से भागा जा रहा था। तब सियार और उसकी घरवाली लम्बी साँस लेकर बोले, "चलो, मुसीबत टली।"

शेर तो कभी इतनी तेज़ी से दौड़ा नहीं होगा।

तभी एक बन्दर ने पेड़ के ऊपर से उसे भागते देखा। आश्चर्यचकित हो सोचने लगा, 'अरे ! शेर इस तरह दौड़ा जा रहा है। यह तो कोई साधारण बात नहीं है। ज़रूर कोई बड़ी बात हुई है।' ऐसा सोचकर उसने शेर को रोककर पूछा, "शेर भाई, क्या बात है ? तुम इस तरह से क्यों भाग रहे हो ?"

शेर हाँफते-हाँफते बोला, "अरे, वैसे ही नहीं भाग रहा। अभी तो वह मुझे खा ही लेता।"

बन्दर बोला, "मुझे तो ऐसे किसी जानवर के बारे में नहीं मालूम जो तुम्हें खा सके। मुझे यक़ीन नहीं आता।"

शेर बोला, "अगर वहाँ होते तो पता चलता। दूर से तो सभी ऐसा ही कहते हैं।"

बन्दर बोला, "मैं अगर वहाँ होता तो आपको समझा देता कि यहाँ कुछ भी नहीं है। आप बेवकूफ़ हैं, इसलिए इतना डर गये।"

यह सुनकर शेर को बहुत गुस्सा आया। उसने कहा, "अच्छा, तो मैं बेवकूफ़ हूँ। तुम क्या अपने आपको बहुत अक्लमंद समझते हो ? चलो मेरे साथ वहाँ।"

"ज़रूर चलूँगा अगर मुझे तुम अपनी पीठ पर ले चलो।" बन्दर बोला।

शेर बोला, "ऐसा ही सही। मेरी पीठ पर चढ़कर ही चलो।"

ऐसा कहकर शेर बन्दर को अपनी पीठ पर बैठाकर फिर गुफा की तरफ़ चल पड़ा।

सियार और उसकी घरवाली तभी बच्चों को चुप करा के बैठे थे कि उन्होंने देखा कि बन्दर को पीठ पर बैठाकर शेर आ रहा था।

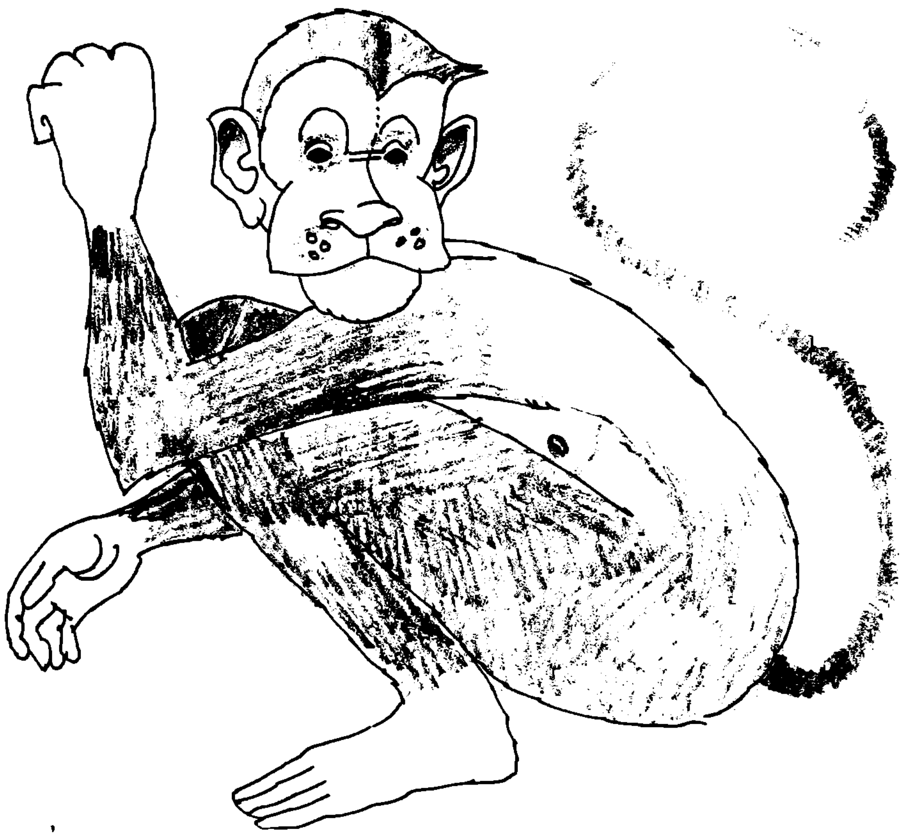
सियार की घरवाली फिर दौड़कर बच्चों को चिकोटी काटने लगी। बच्चे फिर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे।

सियार फिर वैसी ही भारी आवाज़ में बोला, "अरे, अब इतना भी मत चिल्लाओ। बीमार पड़ जाओगे।"

घरवाली बोली, "मैंने कहा न आपसे कि जब तक कोई शेर पकड़ नहीं लाते आप, ये चुप नहीं होंगे।"

सियार बोला, "मैंने तो उनके मामा को भेजा है शेर पकड़ लाने के लिए। अभी वो शेर को ले कर आ ही रहे होंगे। अब तुम चुप हो जाओ।"

फिर थोड़ा रुककर वह बोला, "वो देखो। तुम्हारे बन्दर मामा एक शेर को पकड़ लाये हैं। अब रोना बन्द करो। अब जल्दी से 'झपांग' लाओ, मैं 'भतंग' करता हूँ।"



बन्दर अभी तक बिल्कुल नहीं डरा था। लेकिन 'झपांग' और 'भतंग' की बात सुनकर उससे रहा नहीं गया। उसने एक छलाँग मारी, देखते-ही-देखते एक पेड़ पर न जाने कहाँ ग़ायब हो गया।

और शेर की बात तो पूछो मत! वह वहाँ से जो दौड़ा, दो दिन तक रुका नहीं।

उसके बाद सियार और उसके परिवार को कोई परेशानी नहीं हुई। वे ख़ुशी-ख़ुशी उस गुफ़ा में दिन बिताने लगे।

गन्ने का फल

सियार पंडित को गन्ने बहुत पसंद थे। इसलिए वह रोज़ गन्ने खाने जाता। एक दिन गन्ने के खेत में घुसते ही उसे एक बर्रे का छत्ता दिखाई दिया। बर्रे का छत्ता उसने पहले कभी नहीं देखा था। उसने सोचा, वह गन्ने का फल है।

सियार ठहरा पंडित इसलिए वह गन्ने को कहता 'इक्षु', खेत को कहता 'क्षेत्र' और लाठी को कहता 'दण्ड'।

बर्रे के छत्ते को देखकर वह बोला, "अरे यह इक्षु का कितना सुन्दर फल है। इसका स्वाद न जाने कितना मीठा होगा।" इसके बाद जैसे ही वह बर्रे का छत्ता खाने लगा, सारे बर्रों ने निकलकर उसे खूब मज़ा चखाया।

सियार तो जान बचाकर भागा और बार-बार कहने लगा, "इक्षु के क्षेत्र में अब कभी नहीं जाऊँगा।"

थोड़ी देर बाद बर्रों ने उसका पीछा करना छोड़ दिया। तब उसने सोचा, "क्षेत्र में तो रोज़ ही जाता हूँ, उससे तो कुछ नहीं होता। फल खाने पर ही मुझ पर मुसीबत आ गयी, फिर क्षेत्र में क्यों न जाऊँ भला ? बस फल नहीं खाऊँगा।"

ऐसा सोचकर वह कहने लगा "अगर इक्षु के क्षेत्र में गया तो भी इक्षु का फल नहीं खाऊँगा।" दो दिन तक वह केवल यही कहता रहा।

फिर जब उसका दर्द कुछ कम हुआ तब उसने सोचा, "उस फल में ज़रूर कीड़े थे। उन्होंने ही मुझे काटा होगा। अगर मैं फल को पहले ही हिला लेता तो सारे कीड़े निकल जाते। फिर फल खाने में कोई मुश्किल नहीं होती। ओह ! न जाने वह फल कितना मीठा होगा। फिर भला क्यों न खाऊँ फल ? खाने से पहले कीड़े निकाल दूँगा।"

यह सोचकर वह कहने लगा, "अगर इक्षु का फल खाऊँगा तो पहले दण्ड से उसे हिलाऊँगा।" यही सोचते हुए वह पहुँचा गन्ने के खेत में, और लगा लाठी से बर्रे का छत्ता हिलाने।

फिर वह बचकर कहाँ जाता। बर्रों का झुण्ड आया और उसे काट-काटकर अधमरा कर गया।

तब से सियार ने इक्षु का फल कभी नहीं खाया।

हाथी के अंदर सियार

जो हाथी अपने दूसरे हाथियों से तगड़ा, बड़ा और देखने में सुन्दर था, वह राजा का प्रिय हाथी था। उसी पर सवार होकर महाराज घूमते-फिरते थे। राजा उसे बहुत प्यार करते थे।

एक दिन राजा का वह मुख्य हाथी मर गया। राजा ने बहुत दिनों तक शोक मनाया फिर कहा, "इसको फेंक आओ।"

तब उस हाथी के पाँव में रस्सियाँ बाँधकर पाँच सौ लोग उसे घसीटते हुए मैदान में फेंक आये। उसी मैदान के पास एक सियार रहता था। उसने बहुत दिनों से भरपेट खाना नहीं खाया था।

मैदान में मरा हाथी देखकर वह बहुत ख़ुश हुआ और उसे खाने लगा। उसको इतनी तेज़ भूख लगी थी कि खाते-खाते हाथी के पेट में ही घुस गया, फिर भी उसकी भूख नहीं मिटी।

इस तरह दो दिन निकल गये। तब भी वह हाथी के पेट में घुसकर उसे खाये जा रहा था। तब तक धूप में हाथी का चमड़ा सिकुड़ गया था और उसके पेट का छेद छोटा हो गया था। अब सियार की हुई मुसीबत। बहुत कोशिश करने पर भी वह हाथी के पेट से निकल न सका। अब क्या हो ?

तभी वहाँ से तीन किसान निकले। उन्हें देखकर सियार ने एक तरकीब सोची। उसने हाथी के पेट के अन्दर से उन्हें आवाज़ देकर बुलाया और कहा, "अरे भाइयो ! तुम राजा तक एक ख़बर पहुँचा सकते हो ? अगर मेरे पेट की पचास मटके घी से मालिश की जाये तो फिर से ज़िन्दा हो जाऊँगा।

किसानों ने बड़े हैरान होकर कहा, "सुनो, देखो हाथी क्या कह रहा है। चलो राजा को जाकर यह ख़बर सुनाते हैं।"

वे तुरन्त राजा के पास जाकर बोले, "राजा जी, आपका मरा हुआ हाथी कह रहा है कि अगर उसके पेट पर पचास मटके घी से मालिश की जाये तो वह फिर ज़िन्दा हो जायेगा। जल्दी से घी के पचास मटके भेज दें।"

यह सुनकर राजा की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। वे बोले, "अगर इससे मेरा हाथी ज़िन्दा हो जाए तो घी के पचास मटके भला क्या चीज़ है। मैं घी के हज़ार मटके भी उसके पेट पर मल सकता हूँ।"

तब हज़ार कुली घी के हज़ार मटके लेकर वहाँ पहुँचे। दो हज़ार लोग मिलकर उस घी से हाथी के पेट की मालिश करने लगे। सात दिनों तक वहाँ सिर्फ़ "लाओ घी ! डालो घी !" ही सुनायी पड़ा। सात दिनों बाद सियार ने देखा कि हाथी की चमड़ी काफी नरम हो गई थी। पेट का छेद भी बहुत बड़ा हो गया है। अब वह चाहता तो निकल सकता था। तब उसने सभी को बुलाकर कहा, "भाइयो, अब मैं खड़ा होना चाहता हूँ। आप लोग थोड़ा हट जाइए। कहीं मैं चक्कर खाकर आप पर न गिर पड़ूँ।"

तब वहाँ भगदड़ मच गयी। सारे लोग एक दूसरे को धक्का मारकर कहने लगे, "अरे जल्दी

हट। हाथी अब खड़ा होगा। कहीं हमारे ऊपर गिर गया तो।''

यह सुनकर क्या कोई वहाँ ठहरता ? घी-वी छोड़कर वे सब भागने लगे। एक बार मुड़कर देखा भी नहीं कि हाथी खड़ा हुआ या वैसे ही पड़ा है।

यह देखकर सियार ने सोचा, 'यही वक़्त है। अभी निकलकर भाग जाता हूँ।' वह जल्दी से हाथी के पेट से निकला और सरपट भाग गया।

मजन्ताली सरकार

एक गाँव में दो बिल्ले थे। एक तो रहता था ग्वाले के घर। वह खाता था—दही, दूध, पनीर, मक्खन और मलाई। दूसरा रहता था मछुआरे के घर। वह खाता सिर्फ़ थप्पड़ और लातें। ग्वाले का बिल्ला बहुत मोटा था और वह छाती फुलाकर चलता था। मछुआरे के बिल्ले की देह में सिर्फ़ चमड़ी और कुछ हड्डियाँ ही थीं। वह चलते-चलते हिलता डुलता था। वह सोचता, ''कैसे ग्वाले के बिल्ले की तरह मोटा-ताज़ा बनूँ।''

आख़िर उसने एक दिन ग्वाले के बिल्ले से कहा, ''भाई, आज मेरे घर में तुम्हारी दावत है।''

लेकिन यह सब झूठ था। उसे ख़ुद खाने को नहीं मिलता था, वह भला दावत कैसे देता ? उसने सोचा ग्वाले का बिल्ला जब मेरे घर आयेगा तो मेरी तरह मार खायेगा और मर जायेगा। फिर मैं ग्वाले के घर जाकर आराम से रहूँगा।

जैसा सोचा वैसा ही हुआ। ग्वाले का बिल्ला जैसे ही मछुआरे के घर पहुँचा, मछुआरे बोले, ''वो देखो। ग्वालों का दही-दूध खानेवाला वह चोर बिल्ला आया है। हमारी सारी मछलियाँ हड़प जायेगा। मारो शैतान को।''

यह कहकर उन्होंने उस बिल्ले की ऐसी पिटाई की कि बेचारा मर ही गया। दुबले बिल्ले को तो पता था कि ऐसा ही होगा। वह पहले से ही ग्वाले के घर पहुँच गया। वहाँ खूब खीर और मलाई खाकर वह कुछ ही दिनों में मोटा-ताज़ा हो गया। अब वह दूसरे बिल्लों से बात नहीं करता था। नाम पूछने पर कहता, ''मेरा नाम है मजन्ताली सरकार।''

एक दिन मजन्ताली सरकार काग़ज़-कलम लेकर घूमने निकला। घूमते-घूमते उसने जंगल में जाकर देखा कि बाघ के तीन बच्चे खेल रहे हैं। उसने तीनों को फटकार कर कहा, ''अरे ! जल्दी लगान दो।''

बाघ के बच्चे उसके हाथ में काग़ज़-कलम देखकर, उसकी डाँट सुनकर बहुत डरे। इसलिए वे जल्दी से अपनी माँ के पास जाकर बोले, ''माँ ! जल्दी आओ। देखो कौन आया है और क्या कह रहा है ?''

बाघ की घरवाली उनकी बात सुनकर आयी और बोली, "भइया, तुम कौन हो ? कहाँ से आये हो ? क्या चाहिए ?"

मजन्ताली बोला, "मैं राजा का मुनीम हूँ। मेरा नाम मजन्ताली है। तुम राजा की जिस ज़मीन पर रहते हो, उसका लगान कहाँ है ? लगान भरो।"

घरवाली बोली, "लगान किसे कहते हैं, यह तो मैं नहीं जानती। हम तो सिर्फ़ जंगल में रहते हैं और जो आता है, उसे पकड़कर खा लेते हैं। तुम जरा रुको, बाघ को आने दो।"

तब मजन्ताली एक ऊँचे पेड़ की टहनी पर बैठकर चारों ओर झाँककर देखने लगा। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि बाघ आ रहा था। वह जल्दी से काग़ज़-कलम छोड़कर पेड़ के बिल्कुल ऊपर चढ़ गया।

बाघ के आते ही उसकी घरवाली ने उसे सारी बातें बता दी। बाघ को जो गुस्सा आया कि क्या कहने ! वह गरजता-गुर्राता बोला, "कहाँ है वो बदमाश ! अभी उसकी गर्दन तोड़ता हूँ।"

मजन्ताली पेड़ के ऊपर से बोला, "क्यों बाघ, लगान नहीं देगा ? आजा।" यह सुनते ही बाघ 'हालम' कहकर दो ही छलाँग में उस पेड़ पर जा चढ़ा लेकिन उससे क्या होता ? मजन्ताली को पकड़ सके तब न। वह छोटा-मोटा हल्का-सा जानवर एक बहुत पतली टहनी पर बैठा था। इतना बड़ा भारी बाघ वहाँ कैसे पहुँचता ? न पहुँच पाने पर गुस्सा होकर उसने दोबारा छलाँग लगायी और गिरते समय दो डालों के बीच उसका सिर अटक गया। इससे उसकी गर्दन टूट गयी और उसके प्राण ही निकल गये। यह देखकर मजन्ताली दौड़कर आया और उनकी नाक को तीन-चार बार खरोंचकर उसकी घरवाली को बुलाकर बोला, "यह देख, मैंने क्या किया। मेरे साथ बदतमीजी।"

यह देखकर बाघ की घरवाली की तो जान ही निकल गयी। वह हाथ जोड़कर बोली, "दया कीजिए मजन्ताली महाशय ! हमें जान से मत मारिये। हम आपके नौकर बनकर रहेंगे।"

सुनकर मजन्ताली बोला, "अच्छा, ठीक है। अच्छी तरह से काम करना और मुझे बढ़िया खाने को देना।"

उस दिन से मजन्ताली बाघ के घर में ही रहने लगा। खूब खाता और बाघ के बच्चों की पीठ पर सवारी करता। बेचारे, डर से थरथराते रहते और सोचते कि न जाने मजन्ताली कितना ऊँचा जानवर है।

एक दिन बाघ की पत्नी उससे हाथ जोड़कर बोली, "मजन्ताली महाशय ! इस जंगल में सिर्फ़ छोटे-छोटे जानवर हैं, इससे आपका पेट नहीं भरता। नदी के उस पार बहुत घना जंगल है, जिसमें बहुत बड़े-बड़े जानवर भी रहते हैं। चलिए, वहीं चलते हैं।"

यह सुनकर मजन्ताली बोला, "ठीक है। चलो उस पार ही चलते हैं।" तब बाघ की पत्नी अपने बच्चों को लेकर बड़ी आसानी से उस पार चली गयी। लेकिन मजन्ताली कहाँ था ? बाघ की पत्नी और उसके बच्चों ने बहुत ढूँढ़कर देखा। मजन्ताली सरकार तो, नदी के बीच छटपटा रहे थे।

धारा में बहकर वे न जाने कहाँ निकल आये थे और लहरों की उछाल से मानों उसके प्राण ही निकल गये थे।

मजन्ताली समझ गया कि अगर दो लहरें भी और आयीं तो वह मर जायेगा। तभी बाघ का एक बच्चा उसे किनारे ले आया और उसे बचा लिया, नहीं तो वह मर ही जाता।

लेकिन मजन्ताली सरकार ने उन्हें यह बात बतायी ही नहीं। वह किनारे पहुँचकर बड़े गुस्से से बाघ के बच्चे को थप्पड़ मारने लगा और न जाने कितनी गालियाँ देता रहा। अंत में बोला, "मूर्ख! देख तूने क्या किया? मैं इतना बढ़िया हिसाब लगा रहा था, ख़त्म होने से पहले ही तू मुझे खींच लाया और मेरा सारा हिसाब गड़बड़ हो गया। मैं गिन रहा था कि नदी में कितनी लहरें, कितनी मछलियाँ और कितना पानी है। मूर्ख! तूने बीच में आकर सब गड़बड़ कर दिया। अब अगर मैं राजा के पास जाकर उन्हें हिसाब न दे सका तो बताऊँगा तुझे।"

यह सुनकर बाघ की पत्नी जल्दी से हाथ जोड़कर बोली, "मजन्ताली महाशय! इससे बड़ी भारी ग़लती हो गयी। इस बार माफ़ कर दीजिए। यह तो मूर्ख है, पढ़ना-लिखना नहीं जानता, इसलिए न जाने आपसे क्या सलूक कर बैठा।"

मजन्ताली बोला, "चलो इस बार माफ़ किया। ख़बरदार फिर ऐसा मत करना।" यह कहकर मजन्ताली अपने आप को सुखाने के लिए धूप ढूँढ़ने लगा।

बीहड़ जंगल के अंदर आसानी से धूप पाने के लिए किसी ऊँचे पेड़ की ऊँची टहनी पर चढ़ना पड़ता है। मजन्ताली ने एक पेड़ की ऊँची टहनी पर चढ़कर देखा कि एक बड़ा-सा मरा हुआ भैंसा मैदान के बीच में पड़ा है। तब उसने जल्दी से जाकर उस भैंसे की पीठ पर कुछ खरोंचे मारीं और बाघ की पत्नी से कहा, "जल्दी मैदान में जा मैं एक भैंसा मारकर आया हूँ।"

बाघ की पत्नी और उसके बच्चों ने जाकर देखा कि सचमुच एक बहुत बड़ा भैंसा पड़ा हुआ है। वे चारों मिलकर बड़ी मुश्किल से उसे खींचकर लाये। और सोचने लगे "अरे! मजन्ताली महाशय कितने ताक़तवर है।"

दूसरे दिन वे मजन्ताली से बोले, "मजन्ताली महाशय, इस जंगल में बड़े-बड़े हाथी और गैंडे हैं। चलिये, एक दिन उन्हें मारने चलते हैं।"

यह सुनकर मजन्ताली बोला, "ठीक कहा! अगर हाथी गैंडे नहीं मारूँगा तो मारूँगा क्या? चलो आज ही चलते हैं।" यह कहकर उसी वक़्त सबको लेकर वह हाथी-गैंडे मारने निकल पड़ा। रास्ते में बाघ की घरवाली ने उससे पूछा, "आप 'खाप' में रहेंगे या 'झाप' में?"

'खाप' में रहने का मतलब है शिकार को मारने के लिए चुपचाप छिपकर बैठे रहना और 'झाप' में रहने का मतलब है जंगल जाकर, गुर्राकर, शोर-गुल मचाकर शिकार को भगाकर ले आना।

मजन्ताली ने सोचा, "मेरे शोर मचाने से भला किसे डर लगेगा।" इसलिए वह बोला, "अगर 'झाप' लगाकर जानवर को लाता हूँ तो क्या तुम उसे मार सकोगे। बल्कि ऐसा करो कि तुम लोग

'झाप' में रहो और मैं छिपकर उसका इन्तज़ार करता हूँ।''

बाघ की घरवाली बोली,''सच ! इतने भयानक जानवर भला हम कभी मार सकते हैं। चलो बच्चों हम लोग 'झाप' में जाते हैं।''

ऐसा कहकर वह अपने बच्चों को लेकर जंगल के दूसरे किनारे में जाकर ज़ोर-ज़ोर से गुर्राकर जानवरों को भगाने लगी। जानवरों की आवाज़ सुनकर मजन्ताली एक पेड़ के नीचे बैठा डर से काँपने लगा। थोड़ी देर बाद एक गैंडा उस तरफ़ दौड़ आया। उसे देख मजन्ताली ''बाप रे'' कहकर उसी पेड़ की जड़ों के नीचे जाकर छिप गया। तभी वहाँ से एक हाथी निकला। हाथी का एक पैर उस पेड़ की जड़ों पर पड़ गया। इससे मजन्ताली का पेट फट गया और मानों उसके प्राण निकल ही गये। बहुत देर तक 'झाप' करने के बाद शेरों ने सोचा, ''मजन्ताली महाशय ने न जाने अब तक कितने जानवर मार लिये होंगे। एक बार चलकर देख आते हैं।''

मजन्ताली की हालत देखकर वे बोले, ''हाय, हाय, मजन्ताली महाशय की क्या हालत हो गयी।''

मजन्ताली बोला, ''होना क्या था ? तुमने इतने छोटे-छोटे जानवर भेजे थे कि देखकर हँसते-हँसते मेरा पेट ही फट गया।'' यह कहकर मजन्ताली मर गया।

चींटा, हाथी और ब्राह्मण का नौकर

एक था चींटा और एक थी चींटी।

दोनों में बड़ी दोस्ती थी। एक दिन चींटी बोली, ''देखो चींटे। अगर मैं तुमसे पहले मर जाऊँ तो तुम मुझे गंगाजी में बहा देना। क्यों, बहा दोगे न ?''

चींटा बोला, ''हाँ चींटी। जरूर बहा दूँगा। अगर मैं तुमसे पहले मरा तो तुम मुझे ले जाकर गंगाजी में बहा देना, क्यों बहा दोगी न ?''

चींटी बोली, ''यह भी कोई पूछने की बात है। ज़रूर बहा दूँगी।'' इस तरह दोनों की बात हुई थी। फिर एक दिन चींटी मर गयी। चींटा बहुत रोया और उसने सोचा, 'चींटी को गंगाजी में डाल आना चाहिए।'

ऐसा सोचकर चींटी को अपने कंधे पर उठाकर चला गंगाजी की ओर। वहाँ से गंगाजी बहुत दूर थी, जाने में बहुत समय लगता। चींटा चींटी को कंधे पर उठाये सारा दिन चलता रहा। शाम होने पर उसने देखा कि वह राजा की हस्तिशाला में आ गया है। वहाँ, जहाँ उनके सभी हाथी रहते

थे। चींटा बहुत थक चुका था इसलिए वह चींटी को वहीं रखकर आराम करने लगा। वहाँ एक बहुत बड़ा हाथी बँधा हुआ था। वह राजा का मुख्य हाथी था। हाथी अपनी सूँड हिलाता और ज़ोर-ज़ोर से साँस लेता; कुछ इस तरह कि वह चींटी समेत चींटे को उड़ा ही ले जाता। चींटे ने गुस्से से कहा, "ख़बरदार !" लेकिन हाथी को यह सुनायी नहीं दिया। उसने फिर साँस ली; चींटा और ज़ोर से चिल्लाया, "अरे ख़बरदार इसका अंजाम अच्छा नहीं होगा। शैतान। पाजी कहीं का।"

हाथी ने सोचा, "अरे वाह ! वहाँ से कौन मुझे चीं-चीं करके गाली दे रहा है ? मुझे तो कोई भी दिखायी नहीं दे रहा," ऐसा कहकर उसने अपने पाँव से उस जगह को रगड़ दिया।

चींटे पर तो बड़ी मुसीबत आई। उसने सोचा, "मर गया ! अब तो मेरी चटनी ही बन जायेगी।" लेकिन फिर उसने देखा कि वह पिसा नहीं था। हाथी के पाँव के नीचे एक छोटे-से गड्ढे में घुसकर वह बच गया था। चींटी भी उसके साथ थी।

तब उसकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। उस गड्ढे के अंदर बैठकर वह हाथी के पाँव का मांस खाने लगा। जब तक वह हाथी के सिर तक नहीं पहुँच गया, तब तक वह खाता ही रहा। हाथी इस कारण बहुत बीमार पड़ गया। वह केवल सिर हिलाता-डुलाता, चिल्लाता और पागलों की तरह भागता। सब कहने लगे, "हाय ! हाय ! हाथी को क्या हो गया ?" उनको क्या पता कि हाथी के सिर में चींटा घुसा है। अगर उन्हें मालूम होता तो वे हाथी के पाँव में ढेर सारी चीनी लगा देते। चीनी की ख़ुशबू से चींटा निकल जाता। लेकिन उन्हें यह मालूम नहीं था, इसलिए उन्होंने वैद्य को बुलाया, दवा पिलायी गयी, फिर भी हाथी मर गया। उसी रात राजा ने एक सपना देखा कि उनका हाथी उनसे आकर कह रहा है, "महाराज, मैंने आपकी बहुत सेवा की है। आप मुझे गंगाजी में डाल आइयेगा।"

सबेरे उठते ही राजा ने आदेश दिया कि हाथी को गंगाजी में डाल आओ।"

तीन सौ आदमियों ने हाथी के पैरों में रस्सा बाँधा और उसे खींचकर गंगाजी की ओर चल पड़े। मगर वह बहुत बड़ा हाथी थी, जिसे खींचना बहुत ही कठिन था। वे आदमी उसे खींचते हुए थोड़ी दूर जाते, फिर थककर बैठ जाते ! इतने में वहाँ से एक ब्राह्मण पंडित निकला। उसके साथ एक नौकर था। उन आदमियों को थककर हाँफते देखकर नौकर बोला, "चूहे-जैसा तो हाथी है। इसे खींचने में तीन सौ आदमी हाँफने लगे। मैं तो इसे अकेले ही ले जा सकता हूँ।"

यह सुनते ही वे तीन सौ लोग उछल पड़े। वे बोले, "अरे क्या बात है। हम तीन सौ आदमी जो नहीं कर पा रहे हैं, तू अकेला ही कर लेगा। ठीक है, अब इसका फ़ैसला होने पर ही हम हाथी को खींचेंगे। चल बच्चू, राजा के पास चल, देखते हैं, तू कैसा पहलवान है।"

यह सुनकर ब्राह्मण का नौकर बोला, "ठीक है, चलो। मुझे क्या अपने-जैसा समझ रखा है ?"

तब हाथी को उसी मैदान में छोड़कर वे सब राजा से आकर बोले, "महाराज अब आप ही इसका फ़ैसला करें। हम तीन सौ आदमी तो आपके हाथी को खींचते-खींचते थक गये और यह



कहता है कि वह अकेले ही उस हाथी को खींच सकता है [illegible] हाथी नहीं छुयेंगे।"

यह सुनकर राजा ने ब्राह्मण के नौकर से पूछा, [illegible] अकेले ही खींच सकता है ?"

नौकर बोला, "अगर महाराज का हुक्म हो तो ज़रूर खींच सकता हूँ लेकिन [illegible] मुझे भरपेट खाना खिलाना पड़ेगा।"

राजा ने अपने रसोइये से कहा, "इसे सेर भर चावल, दाल और सब्ज़ी खिलाओ। पहले भरपेट खा ले, फिर हाथी खींचकर ले जायेगा।"

यह सुनकर नौकर हँसा और बोला, "महाराज ! सेर भर चावल तो झाड़ू लगानेवाले ही खाते हैं। इससे भला कभी कोई हाथी खींच सकता है ?"

राजा बोला, "फिर क्या चाहिए तुझे ?"

नौकर बोला, "महाराज। ज़्यादा कुछ नहीं, सिर्फ़ दो मन चावल, दो बकरों का मांस और एक मन दही से काम चल जायेगा।"

राजा बोला, "ठीक है, सब मिलेगा। लेकिन सब कुछ खाना पड़ेगा।"

नौकर बोला, "जी महाराज।" ब्राह्मण के नौकर ने दो मन चावल, दो बकरे और एक मन दही भरपेट खा-पी लिया। फिर लम्बी तानकर सो गया। फिर अपने गमछे से हाथी को लपेटकर एक झोला-सा बनाया। फिर उस झोले को लाठी में लटकाकर लाठी को कंधे पर रखा। फिर चालीस पान मुँह में भरकर वह गाना गाता हुआ गंगा की तरफ़ चल पड़ा। यह देखकर महाराज हैरान रह गये और तीन सौ आदमी भी दंग रह गये। सब दौड़कर घर में बताने गये। तब तक नौकर बहुत दूर निकल चुका था। बाहर बहुत तेज़ धूप थी। थोड़ी और दूर जाकर नौकर बोला, "उफ़, क्या कड़ी धूप है। मेरा तो गला ही सूख गया है। थोड़ा पानी मिलता तो अच्छा होता।"

यह कहकर उसने देखा कि थोड़ी दूर एक तालाब है। उस तालाब के किनारे खड़े पेड़ों की ओट में एक कच्ची झोंपड़ी थी। नौकर ने तालाब के किनारे अपना झोला रखा और झोंपड़ी के अंदर जाकर देखा। वहाँ एक छोटी लड़की बैठी हुई थी। उसने उस लड़की से कहा, "बेटी मुझे बड़ी प्यास लगी है। थोड़ा-सा पानी मिल सकता है ?"

लड़की बोली, "एक बड़े-से मटके में पानी है। अगर आपको ही दे दिया तो मेरे पिता खेत से लौटकर क्या पियेंगे ?"

यह सुनकर नौकर ने गुस्से से कहा, "अच्छा ! तू मुझे थोड़ा-सा पानी भी नहीं देगी। देखता हूँ अब तुम लोग कहाँ से पानी पीते हो।" यह कहकर वह तालाब में उतरा। जल्दी-जल्दी उसका पानी पीने लगा। जब तक उस तालाब में पानी था, तब तक सुड़प-सुड़प की आवाज़ आ रही थी। देखते-देखते उसने पूरे तालाब का पानी पी लिया। पानी पीते-पीते उसका पेट फूलकर ढोल-जैसा हो गया। फिर हाथी की तरह हुआ और अंत में पहाड़ की तरह हो गया। इस तरह तालाब का सारा

पानी पीकर ब्राह्मण के नौकर ने देखा कि पानी उसके पेट में ठहर नहीं रहा था। तब उसने जल्दी-जल्दी एक बरगद का पेड़ निगल लिया। वह पेड़ उसके गले के बीचों-बीच जाकर ढक्कन की तरह अटक गया। फिर पानी निकल नहीं सका। तब ब्राह्मण का नौकर बहुत ख़ुश होकर उस तालाब के किनारे लेटकर आराम करने लगा। बरगद के पेड़ से भी ऊँचा उसका पेट जैसे पहाड़ हो गया। उस लड़की के पिता खेत में काम कर रहे थे। उसने पहाड़ की तरह पेट देखकर सोचा, ''बाप रे, न जाने वह क्या है !''

ऐसा कहकर वह जल्दी-जल्दी घर वापस लौटकर आ गया। घर आते ही उसकी बेटी बोली, ''पिताजी ! देखो, वह कितना शैतान आदमी है। उसने मुझसे पानी माँगा था। घर में सिर्फ़ एक मटका पानी थी। अगर उसे दे देती तो तुम लौटकर क्या पीते ? इसलिए मैंने उसे पानी नहीं दिया। तब वह हमारे तालाब का सारा पानी पी गया।''

''ऐसा !'' कहते हुए दोनों उस नौकर के पास पहुँचे। वहाँ आकर वह नाक-मुँह बनाकर बोली, ''ओह ! कैसी बदबू है। देखो पिता जी ! शायद एक सड़ा हुआ चूहा झोली में बाँधकर लाया है।''

ऐसा कहकर उसने एक हाथ से अपनी नाक पकड़ी और दूसरे की दो उँगलियों से हाथी समेत झोला उठाकर फेंक दिया। वह झोला जाकर गिरा सीधा गंगाजी में और लड़की के पिता ने ब्राह्मण के नौकर के पेट पर मारी एक लात। वह कोई ऐसी-वैसी लात नहीं थी। लात के कारण उसके पेट का सारा पानी बाहर आ गया और लड़की समेत घर-बार, साज-समान सब कुछ उसमें बह गये। बाकी बचे लड़की के पिता और ब्राह्मण का नौकर। अब दोनों एक दूसरे के गले लग गये। इसके बाद उस लड़की का पिता बोला, ''भाई, तुम्हारे-जैसा पहलवान तो कहीं नहीं देखा। तुम इस तालाब का सारा पानी पी गये।

ब्राह्मण बोला, ''भाई, तुम्हारे-जैसा पहलवान भी मैंने नहीं देखा। एक लात मार तुमने मेरा पेट हल्का कर दिया।''

यह बात लेकर दोनों में बहस छिड़ गयी। एक कहता, ''तू बहुत पहलवान है'' तो दूसरा कहता, ''तू पहलवान है।'' अब किस की बात ठीक थी, यह कौन बताता ?

बहुत सोचकर दोनों ने तय किया कि किसी बड़े बाजार में जाकर कुश्ती लड़ते हैं। फिर पता चल जायेगा कि कौन बड़ा पहलवान है।

ऐसा सोचकर दोनों कुश्ती लड़ने बाज़ार चले। तभी रास्ते में एक मछुआरिन उन्हें मिली। वह टोकरी में मछलियाँ लिये बेचने बाजार जा रही थी। उनको देखकर बोली, ''भाई ! आप लोग कहाँ जा रहे हैं ?''

वे बोले, ''कुश्ती लड़ने बाज़ार जा रहे हैं।''

यह सुनकर मछुआरिन बोली, ''बाज़ार तो बहुत दूर है भाई। इतनी मुश्किलें झेलकर तुम्हें भला वहाँ जाने की क्या ज़रूरत है ? मेरी टोकरी के अन्दर आकर तुम दोनों कुश्ती लड़ो। कुश्ती लड़ते समय जिसकी ओर टोकरी झुक जायेगी, मैं समझ लूँगी कि वही हार गया है।

यह सुनकर बोले, "यही ठीक रहेगा। कुश्ती भी कर लेंगे और चलना भी नहीं पड़ेगा।"

ऐसा कहकर वे मछुआरिन की टोकरी में घुसकर कुश्ती लड़ने लगे और मछुआरिन वह टोकरी सिर पर रखकर बाज़ार की तरफ़ चल पड़ी।

तभी एक बात हुई। उस देश में एक दुष्ट चील रहती थी। वह गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा जो देखती, उसे पकड़कर खा लेती थी। सिर्फ़ उस मछुआरिन के सामने उसकी नहीं चलती थी।

चील जब भी मछुआरिन की टोकरी पकड़ने जाती, वह उसे ऐसी डाँट लगाती कि उसे भागने का रास्ता नहीं मिलता। लेकिन इससे चील को और भी ग़ुस्सा आ जाता और वह सोचती, "जैसे भी हो, एक दिन यह टोकरी छीनकर लेनी ही पड़ेगी।"

उस दिन भी वह चील खाने की तलाश में निकली थी। दूर से ही उसके परों की फर-फर आवाज सुनायी दे रही थी।

एक ग्वाला सात सौ भैंसें चराने मैदान में आया था। उसने वह आवाज़ सुनी और बोला, "हे भगवान ! लगता है वही चील आ रही है। अभी मेरी सारी भैंसें खा जायेगी। अब मैं क्या करूँ ?" कुछ सोचकर वह ग्वाला उन सात सौ भैंसों को गोद में बाँधकर घर की ओर भागा।

उसके घरवाले पूछने लगे, "क्या बात है ? तुम इतनी तेज़ी से दौड़ते हुए क्यों आ रहे हो ?" वह बोला, "दौड़ूँगा नहीं। चील जो आ रही है। मेरी भैंसें खा जाती।"

वे बोले, "फिर भैंसों का तुमने किया क्या ?"

वह बोला, "मैं अपने साथ लेकर आया हूँ।"

वे बोले, "कहाँ है तुम्हारी भैंसे ?"

वह बोला, "यह रही।" ऐसा कहकर उसने पोटली खोल दी जिसमें से सात सौ भैंसे निकल आयीं।

यह देखकर घरवाले बहुत ख़ुश हुए और बोले, "अच्छा हुआ तुम अपनी गोद में समेट कर उन्हें ले आये नहीं तो आज वह चील सारी भैंसे खा जाती।"

चील तो निकली थी खाना ढूँढ़ने; उसने मछुआरिन की टोकरी में दो पहलवानों को कुश्ती लड़ते देखा। मछुआरिन का ध्यान सिर्फ़ पहलवानों पर था। चील की बात उसे याद ही नहीं रही। तभी चील की नज़र उस पर गयी और वह उसके सिर से टोकरी छीनकर ले गयी।

उस देश के राजा की बेटी छत पर बैठी थी। उसकी दासी राजकुमारी की कंघी-चोटी कर रही थी। वह आसमान की तरफ़ देख रही थी तभी उसकी आँख में कुछ गिरा।

राजकुमारी ने आँख बन्द करते हुए कहा, "दासी ज़रा देखना मेरी आँख में क्या गिरा है।"

दासी ने राजकुमारी की आँख के अंदर से एक छोटी काली-सी मज़ेदार चीज़ निकली।

राजकुमारी बोली, "वाह ! कितनी सुन्दर चीज़ है। दासी यह क्या है ?"

दासी बता नहीं पायी वह क्या चीज़ है ? महल में कोई भी बता नहीं पाया कि वह क्या है।

राजा आये, मंत्री आये वे भी नहीं बता पाये कि वह क्या है।

तब राजा ने बड़े-बड़े विद्वानों को बुलवा भेजा। उनके पास ऐसे औजार थे, जिससे चींटी भी हाथी जितनी बड़ी दिखायी देती थी। उस औजार से देखकर वे बोले, ''ऐसा लगता है एक टोकरी है, जिसमें कुछ मछलियाँ है और दो आदमी कुश्ती लड़ रहे हैं।''

चींटा और चींटी

एक था चींटा और एक थी चींटी। चींटी बोली, ''चींटा, मैं अपने मायके जाऊँगी। नाव लेकर आओ।''

चींटा एक धान का छिलका बहाकर ले आया। चींटी उसे देखकर बोली, ''कितनी सुन्दर नाव है। आओ चींटे, तुम मुझे मेरे मायके ले चलो।''

चींटा और चींटी धान के छिलके की नाव पर बैठ गये। नाव बहने लगी। थोड़ी दूरी पर वह नाव एक टापू पर जाकर अटक गयी।

''नैया अटकी, ठेलो रानी !
यहीं ख़त्म हुई मेरी कहानी।''





शाम ढलते ही हमारे
घरों के बच्चे कभी-कभी बिना खाये
सो जाना चाहते हैं। तब उनकी माँ, दादी
या फिर नानी उन्हें बड़े प्यार से अच्छी-अच्छी कहानियाँ
सुनाकर जगाये रखती हैं और देखते ही देखते उनकी नींद ग़ायब
हो जाती है। ऐसी रोचक कहानियों को बच्चे बड़े होकर भी
कभी भुला नहीं पाते। उपेन्द्रकिशोर रायचौधुरी
की क़लम से लिखी गयी इस संकलन की
सारी कहानियाँ बाल पाठकों
को बहुत अच्छी लगेंगी।

ISBN 81 - 7201 - 481 - 3
9788172014810

मूल्य : पैंतीस रुपये